इन्द्र धनुष

लेखक
रघुपति सहाय "फ़िराक़"
गोरखपुरी

प्रकाशक
सेन्ट्रल बुक डिपो
इलाहाबाद

प्रकाशक का वक्तव्य

हमें श्री रघुपति सहाय फिराक़ के इस संकलन को हिन्दी में प्रकाशित करते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है। फिराक़ साहब उर्दू जगत में चोटी के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं। अभी इधर हिन्दी के अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अपने अपने आलोचनात्मक लेखों से वह हिन्दी पाठकों में भी परिचित हो चले हैं।

फिराक़ साहब का जन्म सन् १८९६ ईसवीं में गोरखपुर के एक मान्य घराने में हुआ था। उनके पिता एक सुप्रसिद्ध वकील तथा उर्दू के कवि थे। फिराक़ साहब की शिक्षा सेंट ऐन्ड्रूज कॉलेज गोरखपुर तथा प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई। शिक्षा समाप्त करते ही उन्हें डिप्टी कलेक्टरी का पद मिल गया था किन्तु उन्होंने उसका त्याग कर काँग्रेस के तत्कालीन असहयोग आन्दोलन में भाग लिया, जेल गए, अध्यापन किया और काँग्रेस के अन्डर सेक्रेटरी रहे। फिर सन् १९३० में आगरा विश्वविद्यालय से अँग्रेजी में एम० ए० करके वह प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापक हो गए और अब तक हैं।

फिराक़ साहब एक कुशल अध्यापक और आलोचक हैं! 'रूहे कायनात', 'रम्जो कनायात', 'शबनमिस्ताँ', 'अन्दाजे', 'रूप' आदि उनके उर्दू के श्रेष्ठ प्रकाशन हैं। हमें आशा है कि हिन्दी जगत उनके इस संकलन का समुचित आदर करेगा।

ग़ज़ल

रात आधी से ज़्यादा गई थी सारा आलम[1] सोता था।
नाम तेरा ले लेकर कोई दर्द का मारा रोता था॥

कुछ का कुछ कह जाता था मैं फ़ुरक़त[2] की बेताबी[3] में।
सुनने वाले हँस पड़ते थे होश मुझे तब होता था॥

तारे अक्सर डूब चले थे रात के रोने वालों के।
आने लगी थी नींद सी कुछ दुनिया में सवेरा होता था॥

तर्के मोहब्बत[4] करने वालो, कौन ऐसा जग जीत लिया।
इश्क़ के पहले के दिन सोचो कौन बड़ा सुख होता था॥

पिछला पहर था हिज्र[5] की शब थी जागता रब[6] सोता संसार।
*तारों की छाँव में कोई "फ़िराक़" सा जैसे मोती पिरोता था॥

—:०:—

१. संसार। २. वियोग। ३. बेचैनी। ४. प्रेम की अवहेलना
५. वियोग। ६. भगवान।

*रो रोकर आँसू बहाने को मोती पिरोना भी कहते हैं।

ग़ज़ल

चाके[1] दिल चाक जिगर चाक गरेबाँ[2] होना।
वहशियो[3] यह तो नहीं आशिके जानाँ होना॥
खुद को पहचान सकी दुख भरी दुनिया न अभी।
ग़मे इन्साँ को न आया ग़मे इन्साँ होना॥
कितनी वे लाग[4] लगावट निगहे नाज़ की थी।
यों मिली जैसे इसे दर्द न दरमाँ[5] होना॥

—: ० :—

ग़ज़ल

तुझे खबर[6] है कि रात ए निगाहे मस्त[7] हर एक।
खराब हो के भी तेरी तरह खराब[8] न था॥
न जाने क्यों भरी दुनिया में ख़ाक उड़ती है।
यह फ़ैज़े इश्क़ यह दरिया अभी सराब[9] न था॥
"फ़िराक़" याद कर ऐसा भी कोई आलमे इश्क़।
जो एक शब का फ़साना[10] न था जो ख्वाब न था॥

—: ० :—

१. भग्न; टूटा हुआ २. कुरते का गला—अत्यन्त निराशापूर्ण परिस्थिति का द्योतक—मनुष्य ऐसी अवस्था में दाँत चबाता है, उँगलियाँ काटता है, जो कपड़ा पहने रहता है उसका गला फाड़ता है। ३. प्रेम के पागलो। ४. अक्षुण्ण; बिना किसी सम्बन्ध के। ५. दवा। ६. ज्ञात है; मालूम है। ७. उन्मत्त नयन वाले—(प्रेमिका का सम्बोधन) ८. परेशान, उद्विग्न। ९. मृग तृष्णा— १०. कहानी।

ग़ज़ल

दौरे-आगाज़े-जफ़ा दिल[1] का सहारा निकला ।
हौसला कुछ न हमारा न तुम्हारा निकला ॥
*होश जाता है, जिगर जाता है, दिल जाता है ।
परदे ही परदे में क्या तेरा इशारा निकला ॥
रोने वाले हुए चुप हिज्र[2] की दुनिया बदली ।
शमा बे नूर[3] हुई सुबह का तारा निकला ॥
उङ्गलियाँ[4] उट्ठीं "फ़िराक़े" वतन आवारा पर ।
आज जिस सिम्त[5] से वह दर्द का मारा निकला ॥

—: ० :—

ग़ज़ल

दरदे फ़िराक़ वजहे-सुकूँ[6] कब हुआ मगर ।
उम्मीद हो न हो तो रहें बे क़रार[7] क्या ॥

---

१. प्रेम परीक्षा की अवधि का आरंभ ही हृदय को सांत्वना देने के लिये पर्याप्त सा प्रतीत होने लगा ।

*प्रेम की उस अवस्था का वर्णन है जब प्रेमिका का अज्ञात संकेत मनुष्य के जीवन की समस्त चेतना का हरण कर लेता है ।

२. वियोग की दुनिया ३. बे नूर होने का मतलब है कि जीवन का एक प्रकरण समाप्त हुआ और जीवन का दूसरा दृश्य प्रारंभ हुआ । इस भावना को कवि ने "सुबह का तारा निकला" से सम्बोधित किया है । ४. उङ्गलियाँ उठने का मतलब बदनाम होने से है । ५. जिस दिशा से—जिस ओर से । ६. शांति का कारण—वियोग की पीड़ामय वेदनाएँ तो शान्ति-दायक नहीं किन्तु यदि प्रबल आशा का विश्वास वियोगी के साथ न हो तो उसकी विह्वलता आधार विहीन होकर जीवित नहीं रह सकती । ७. विह्वल ।

बुझ बुझ के दाग़-दिल उभर आते हैं हम नवा[1]।
मुझ के दिये-क़फ़स[2] की ख़िज़ाँ[3] क्या बहार क्या ॥
कुछ रंग सा फ़िज़ा[4] से टपकता है ऐ जुनूँ।
चटका हुआ है शीशये-बादे-बहार[5] क्या ?
बैठे बिठाये छेड़ दिया नाज़े यार को।
यह तूने कर दिया दिले ना-करदा-कार[6] क्या ?
सब छोड़ ही चुके थे भरोसा मेरा "फ़िराक़" ॥
लो वह भी कहते हैं कि तेरा एतबार क्या ?
मुँह फेर कर "फ़िराक़" वह कुछ मुस्करा दिये ॥
सुनते अब और हाले दिले बेक़रार क्या ?

—: o —

दूरिये-यार का भी ग़म एसों के मिलने का भी ग़म।
जिन को क़रीब पाके दिल और उदास हो गया ॥

—: o :—

मासूम है मोहब्बत लेकिन उसी के हाथों;
यह भी हुआ कि मैंने तेरा बुरा भी चाहा ॥

—: o :—

१. साथी संगी जो अपने संग क़ैद हो। २. बन्दी गृह; पिंजड़ा। ३. पतझड़ ४. वातावरण—कवि ने यहाँ पर अपनी संवेदना की व्यग्रता का कारण वातावरण बतलाया है। अपनी विह्वलता का अन्वेषण करते करते वह इस निश्कर्ष पर पहुँचा है कि मेरा इस तरह विह्वल होना शायद वातावरण में व्याप्त मादकता के कारण ही है। ५. बहार की शराब का प्याला। ६. असमर्थ—जिस हृदय को कवि इतना असमर्थ समझता था उसी ने उसके जीवन में इतना तूफ़ान उठा दिया है।

ग़ज़ल

तूर[1] था, काबा था दिल था, जलवा ज़ारे यार था।
इश्क़ सब कुछ था मगर फिर आलमे इसरार[2] था॥

अहदे उलफ़त[3] यों न पूरा हो यह है क़िस्मत की बात।
मुझको कब शुबहा था इसमें तुझको बइन्कार था॥

निसबत[4] इन आँखों से भूलूँ याद रक्खूँ जामे-मय।
कब मैं इतना बेखबर कब इस क़दर हुशयार था॥

दिल दुखे रोये हैं शायद इस जगह ऐ दोस्त आज।
खाक का इतना चमक जाना ज़रा दुशवार था॥

ज़र्रा-ज़र्रा आइना था ख़ुद नुमाई[5] का "फ़िराक"।
सर बसर[6] सहराए आलम जलवा ज़ारे यार था॥

—: ० :—

बिछड़ के तुझसे कहीं देखना न पड़ जाये।
विसाल ऐसों का जिनकी जुदाई शाक़[7] नहीं॥

—: ० :—

१. अनन्त ज्योति का द्योतक। २. रहस्य पूर्ण जगत। ३. प्रेम की प्रतिज्ञा। ४. संबंध-नाता। ५. आत्म दर्शन—संसार अव्यक्त के प्रदर्शन करने का माध्यम माना गया है, इसी का स्पष्टीकरण कवि ने किया है। ६. स्पष्ट रूप से।

ग़ज़ल

हिज्रो[1] विसाले यार का परदा उठा दिया ।
ख़ुद बढ़ के इश्क़ ने मुझे मेरा पता दिया ।।
वह सामने है और नज़र से छिपा दिया ।
ऐ इश्क़े बेहिजाब[2] मुझे क्या दिखा दिया ।।
मालूम कुछ मुझी को हैं उनकी रवानियाँ ।
जिन क़तरहाये अश्क[3] को दरिया बना दिया ।।
*जब ख़ून हो चुका दिले हस्तीये-एतबार[4] ।
कुछ दर्द बच रहे जिन्हें इन्साँ बना दिया ।।
थी यूँ तो शामे-हिज्र[5] मगर पिछली रात को ।
वह दर्द उठा "फ़िराक़" कि मैं मुस्करा दिया ।।

—:०:—

तक़दीर से अब नहीं शिकायत ।
ए दोस्त तेरी जफ़ा[6] को देखा ।।
इक जलवए-हक़-नुमा[7] को देखा ।
तुम को देखा; खुदा को देखा ।।

१. प्रिय मिलन के वियोग की वास्तविकता का ज्ञान मुझे हो गया । २. स्पष्ट—बे परदा । ३. आँसू की बूदों ने । ४. जब अस्तित्व के विश्वास का ख़ून हो गया ।

४. हस्ती=अस्तित्व; एतबार=विश्वास *अपनी पीड़ामय सहानुभूति के कारण ही मनुष्य अन्य जीवों से ऊपर उठ गया है—इसी दर्द से मनुष्य मनुष्य कहलाने का अधिकारी हो गया है ।

५. वियोग की संध्या । ६. परीक्षा—जुल्म । ७. कृति में कलाकार के व्यक्तित्व का आभास प्रतिबिम्बित होता है यही कारण है कि स्थूल प्रेमिका द्वारा सूक्ष्म ईश्वर का आभास भी मनुष्य देख लेता है, प्रेयसि को देखना ईश्वर को देखना है ।

ग़ज़ल

बज़्म[1] उलट जायगी साक़ी जो तेरे हाथों में ।
जाम रिन्दों[2] ने छलकते जो कहीं देख लिया ॥
धँस गई गोरे-ग़रीबाँ की ज़मीं, किसने यहाँ ।
आ के किन आँखों से कल सूए ज़र्मी[3] देख लिया ॥

—:०:—

विसाल[4] को भी बना दे जो ऐन दर्द "फ़िराक़" ।
उसी से छूटने का ग़म सहा नहीं जाता ॥

—:०:—

तुम्हें पाकर भी क्यों रहती शिकायत कसमपुर्सी[5] की ।
मेरे तुम हो गये मुझ को भी गर अपना बना लेते ॥

—:०:—

यों तो क्या कहना तेरी बज़्म का जिससे हर एक ।
चार-ओ-नाचार[6] चला बे दिल-ओ-बेज़ार[8] चला ॥

—:०:—

१. सभा । २. पीने वाले—मस्त । ३. ज़मीन की ओर । ४. कहते हैं पीड़ा की चरम सीमा सुख दुख का ज्ञान भुला देती है ठीक वैसे ही सुख की चरम सीमा भी मनुष्य को दुखी बना देती है—प्रेम इन समस्त दुर्बलताओं के परे है, यही कारण है कि बहुधा मनुष्य अपनी दुर्बलता के कारण मिलन के सुख को वियोग की कल्पना से कटु बना लेता है ।

५. सहानुभूति प्रकट करने वालों । ६. शिथिल और दुर्बल । ७. विवश होकर । ८. विरक्त होकर ।

ग़ज़ल

दिल तो फ़सुरदा[१] ही रहा ग़म[२] ने जला दिया तो क्या ।
सोज़े जिगर[३] बढ़ा तो क्या दिल से धुआँ उठा तो क्या ॥

फिर भी रगों में इश्क़ की हुस्न की वह कसक कहाँ ।
हर दिले बेक़रार में दर्द दबा दिया तो क्या ॥

फिर भी तो शबनमी है आँख फिर भी तो होंट खुश्क हैं ।
ज़ख़्मे-जिगर हँसा तो क्या ग़ुन्चए-दिल खिला तो क्या ॥

फिर भी तो बेखुदाने-ग़म[४] राज़े-सुकूँ[५] न पा सके ।
तू ने नज़र की लोरियाँ दे के सुला दिया तो क्या ॥

फिर भी मेरी सदाए-दर्द[६] तेरे लिये सुकूत है ।
हिल गया आस्माँ तो क्या काँप उठी फ़िज़ा तो क्या ॥

कौन सा फ़र्क़ आगया गरदिशे-रोज़गार[७] में ।
अश्क[८] छलक पड़े तो क्या, इश्क़ तड़प उठा तो क्या ॥

*मंज़िले-बेखुदीये-इश्क़ मौत को भी न मिल सकी ।
जायगी इतनी दूर तक उम्र गुरेज़ पा[९] तो क्या ॥

*देखने वाले को तेरे हसरते-दीद रह गई ।
परदा सा उठ गया तो क्या नूर सा होगया तो क्या ॥

१. बुझा हुआ; उमंग विहीन । २. वेदना । ३. जिगर की जलन । ४. पीड़ा में विस्मृत व्यक्ति । ५. शान्ति का रहस्य । ६. पीड़ा के स्वर । ७. समय का फेर । ८. आँसू । ९. तीव्र गति आयु ।

*प्रेम की तनमयता मौत को भी नहीं मिल सकी । *कहते हैं अखन्ड ज्योति को देखकर हज़रत मूसा को तृप्ति नहीं मिल सकी थी और वैसे भी प्रेमी की दर्शन पिपासा कभी शान्त नहीं होती इसलिये देखने वाला एक बार देख कर संतुष्ट हो जाय यह असम्भव है ।

ग़ज़ल

जहाने-गुन्चये-दिल[1] का फ़क़त चटकना था ।
उसी की बूए-परीशाँ[2] वजूदे दुनिया[3] था ॥
यह कह के कल कोई बे अख़्तियार[4] रोता था ।
वह एक निगाह सही क्यों किसी को देखा था ॥
यहीं हुआ कि फ़रेबे[5] उमीद-ओ-यास[6] मिटे ।
वह पागये तेरे हाथों हमें जो पाना था ॥
कुछ ऐसी बात न थी तेरा दूर हो जाना ।
यह और बात कि रह रह कै दर्द उठता था ॥
तुझे हम ऐ दिले-दर्द आशना[7] कहाँ ढूँढें ।
हम अपने होश[8] में कब थे कोई जब उट्ठा था ॥
क़सम है बादाकशो[9] चश्मे मस्ते साक़ी की ।
बताओ हाथ से क्या जामे-मय[10] संभलता था ॥
विसाल[11] उससे मैं चाहूँ कहाँ यह दिल मेरा ।
यह रो रहा हूँ कि क्यों उसको मैं ने देखा था ॥
उमीद यास बनी यास फिर उमीद बनी ।
उस इक नज़र में फ़रेबे गुनाह[12] कितना था ॥
न कोई वादा न कोई यक़ीं न कोई उमीद ।
मगर हमें तो तेरा इन्तज़ार करना था ॥
किसी के सब्र ने बे सब्र कर दिया सबको ।
"फ़िराक़" नज़अ[13] में करवट कोई बदलता था ॥

१. दिल की दुनिया की कली । २. विकल खुशबू । ३. सृष्टि का प्रारंभ । ४. फूट फूट कर । ५. आशा का भ्रम । ६. निराशा । ७. पीड़ा को पहचानने वाला । ८. सुध । ९. शराब पीने वालो । १०. शराब का प्याला । ११. मिलन । १२. निराशा । १३. पाप का आकर्षण अंतिम समय ।

ग़ज़ल

अह्[१] है तेग या तेरी रहमत[२]।
इश्क़, मोहब्बत, उल्फ़त,[३] चाहत ॥
तेरी सूरत, मेरी तबीयत।
यह भ कहानी, यह भी हिकायत[४] ॥
सीधी क़िस्मत, टेढ़ी क़िस्मत।
सब क इलाज है दर्द-मुहब्बत ॥
एक देस के नाम हैं दोनों।
दोज़ख[५] कहिये उसे या जन्नत[६] ॥
आज तुम्हीं दिल को समझाओ।
मेरी तो पड़ती नहीं हिम्मत ॥
क्या कहना तुझको गर मिलती।
तेरी सूरत मेरी तबीयत ॥
जान का देना जान का लेना।
यह भी मुहब्बत, वह भी मुहब्बत ॥
ग़म पर फ़तह तो पाई लेकिन।
पहचानी जाती नहीं सूरत ॥

—: ० :—

हज़ार आँख चुराओ यह कोई तौर[७] नहीं।
तुम्हारे सामने यह मैं हूँ कोई और नहीं ॥

—: ० :—

१. मौत की सी विपत्ति। २. कृपा। ३. स्नेह। ४. कहानी। ५. नरक। ६. स्वर्ग। ७. तरीका।

ग़ज़ल

बता तो क्या निगाहे अव्वलीं[1] के बाद हुआ।
मुझे भी याद है कम कम वह दास्ताने फ़िराक़॥

उमीद बन के न आवे दिलों की दुनिया में।
इसे समझ नहीं सकते यह बदगुमाने[2] फ़िराक़॥

जो एक बर्क़-निगह[3] सामने से कौंद[4] गई।
वही थी रूहे मुहब्बत[5] वही है जाने "फ़िराक़"॥

—:०:—

ग़ज़ल

एक आलम पै बार[6] है हम लोग।
किसके दिल का ग़ुबार[7] हैं हम लोग॥

हम से है गर्म सीनए-हस्ती।
वह भड़कते शरार[8] हैं हम लोग॥

हमने तोड़ी हर एक क़ैदे-हयात[9]।
कितने बे अख़्तियार[10] हैं हम लोग॥

ज़िन्दाबाद, इन्क़लाब ज़िन्दाबाद।
सर-बकफ़[11] सर-निसार[12] हैं हम लोग॥

आसरे दर्दे ज़िन्दगी के "फ़िराक़"।
बेख़ुद ओ बेक़रार हैं हम लोग॥

—:०:—

१. प्रथम दृष्टि। २. बुरी नियत वाले। ३. निगाह की बिजली। ४. नाच गई। ५. प्रेम का प्राण।

६. भार। ७. धूल। ८. चिंगारी। ९. जीवन के बन्धन। १०. विवश। ११. हथेली पर सर लिये हुए। १२. सिर न्यौछावर करने वाले।

ग़ज़ल

क्या कहें आये थे किस उम्मीद से किस दिल से हम ।
एक जनाज़ा[1] बन के उठते हैं तेरी महफ़िल से हम ॥

अपना पैमाने-वफ़ा[2] फिर याद कर ले एक बार ।
आज रोते हैं जुदा ऐ दोस्त तेरे दिल से हम ॥

रुकने वालो सख़्तिये-मंज़िल इसी का नाम है ।
चल नहीं पाते ख़याले-सख़्तिये-मंज़िल से हम ॥

कट गई ऐ बहरे-ग़म[3] मौजों से हँसते खेलते ।
बहते बहते देख आखिर आ लगे साहिल[4] से हम ॥

क्यों झिझक उठते हैं अन्जामे-मुहब्बत[5] से "फ़िराक़" ।
बाख़बर[6] हैं उसके हर आसान हर मुश्किल से हम ॥

—: ० :—

१. जीवित शव—यहाँ आशाओं और निराशाओं की सफलता के प्रतीक से मतलब है । २. साथ देने का वचन । ३. सागर का रूपक देकर शायर ने आपदाओं के सागर को सम्बोधित किया है । ४. किनारा, तट ।

कभी कभी कल्पना की अभिभूति वास्तविकता से अधिक हतोत्साहित करने वाली होती है—कवि ने उसी का वर्णन करते हुये कहा है वास्तविक निराशा वह है जो मंज़िल की कठिनाई की कल्पना मात्र से पथिक के क़दमों में थकावट भर दे और वह रुक जाय ।

५. प्रेम के परिणाम से । ६. परिचित-भिज्ञ ।

ग़ज़ल

तुम हो जहाँ के शायद मैं भी वहीं रहा हूँ।
*कुछ तुम भी भूलते हो कुछ मैं भी भूलता हूँ॥

मिटता भी जा रहा हूँ पूरा भी हो रहा हूँ।
मैं किस की आरज़ू हूँ मैं किसका मुद्दुआ हूँ†॥

सब से बड़ा गुनह है मासूमिये-मोहब्बत[1]।
अब बख़्श या सज़ा दे मुजरिम हूँ बेख़ता हूँ॥

कैफ़े-फ़ना[2] भी मुझ में शाने-बक़ा[3] भी मुझ में।
मैं किसकी इब्तदा[4] हूँ, मैं किसकी इन्तहा[5] हूँ॥

मंजिल की यों तो मुझको कोई ख़बर नहीं है।
दिल में किसी तरफ़ को कुछ सोचता चला हूँ॥

१. प्रेम से अनभिज्ञ रहना सब से बड़ा पाप है २. मृत्यु अधिकारी—जो जानता हो कब मरना चाहिये ३. जीवन की महान चेतनता भी उन में कम नहीं है ४. आदि। ५. अंत।

*अंश और पूर्ण एक ही हैं लेकिन बीच में माया की दुर्बलता दोनों को मिलने से रोके हुये है।

†प्रेम साधना में मिटना पूर्ण में मिलना है और आम चेतनता पूरा होना है इसके मिटने के साथ-साथ पूरा होने का क्रम शाशवत सत्य है—प्रार्थना और प्रार्थय दोनों ही एक समान हैं।

आरज़ू—प्रार्थना; इच्छा।
मुद्दुआ—प्रार्थना।

मैं हूँ भी या नहीं हूँ यह भी खबर नहीं है*।
मैं क्या कहूँ कहाँ हूँ मैं क्या बताऊँ क्या हूँ ॥
हूँ मौजे[1] आबे हैवाँ[2] उठता हूँ खून होकर ।
मैं दर्दे ज़िन्दगी हूँ और दर्दे ला दवा[3] हूँ* ॥

—: ० :—

अजब क्या खोये खोये से जो रहते हैं तेरे आगे ।
हमारे दरमियाँ[4] ऐ दोस्त लाखों ख़ाब हायल[5] हैं ॥
फ़राज़े तूरे-सीना,[6] बुतकदे[7] काबे के दरवाज़े ।
अभी राहे मोहब्बत में दर-ओ-दीवार हायल हैं† ॥

—: ० :—

वो माफ़ इश्क़ से वेलाग होके आँखों से ।
कोई क़सम सी मगर अब भी खाए जाते हैं ॥
उन्हें बहार की आँखों ने भी नहीं देखा ।
जो गुल चमन को मिटा कर खिलाये जाते हैं ॥

—: ० :—

१. लहर २. जीवन की हलचल ३. जिसकी दवा नहीं हो सकती ।

*जीवन का अस्तित्व और मृत्यु का गर्व हूँ। कवि मौत और जीवन-सघंर्ष में पड़कर मृत्यु जीवन की परिभाषा ही भूल जाता है ।

४. बीच में । ५. बाधक । ६. तूर पहाड़ की ऊँचाई ७. मन्दिर ।

†मनुष्य को मनुष्य से प्रेम स्थापित करने में मन्दिर मस्जिद धर्म और परम्पराओं की वैसी ही रूढ़ि है । कल्पना के आधार पर जीवित रहने की चेष्टा यथार्थ वादी संसार वालों के लिये आत्म विस्मृति का परिचायक है । इसी को लक्ष कर के कवि कहता है कि वास्तविकता और हमारे बीच में हमारे कल्पित स्वपनों का बन्धन खड़ा है ।

ग़ज़ल

लाख महरूम[1] से मायूस से बेज़ार[2] से हैं।
लेकिन उम्मीदें भी तेरे किये इन्कार से हैं॥

मुद्दतें क़ैद में गुज़रीं मगर अब तक सय्याद[3]।
हम असीराने क़फ़स[4] ताज़ा गिरफ़्तार से हैं॥

क्या कहें वह तेरे इक़रार[5] कि इक़रार से थे।
क्या करें यह तेरे इन्कार कि इन्कार से हैं॥

कुछ न जीने ही में रक्खा है न मर जाने में।
काम जितने भी मुहब्बत के हैं बेकार से हैं॥

वही हम हैं वही तुम हो वही दिल है लेकिन।
कुछ न कुछ सब के बदलते हुए आसार[6] से हैं॥

जिसको दुखने की तरह आये न दुखना भी "फ़िराक"।
तंग आये हुए हम तो दिले बीमार से हैं॥

—: o :—

तू याद भी कर के मुझे दिल से मेरा न हुआ मेरा न हुआ।
मैं तुझ को भुला कर भी लेकिन तेरा ही रहा तेरा ही रहा॥

—: o :—

१. वंचित। २. विरक्त। ३. बन्दी रखने वाला ४. बन्दी; क़ैदी।
५. वचन। ६. लक्षण।

ग़ज़ल

जो छुप के तारों की आँखों से पाँव धरते हैं।
उन्हीं से सुनते हैं अफ़लाक[1] चाल हारे हैं॥

क़फ़स नसीबों[2] से आँखें चुरा न बादे-सबा।
चमन से दूर हैं जीते तेरे सहारे हैं॥

यह क्या हम अहले ज़मीं की बनायेंगे तक़दीर।
कि खुद नजूमे-फ़लक[3] क़िस्मतों के मारे हैं॥

यही अदायें-हया जान है मुहब्बत की।
जो नीची नज़रों से कहती है हम तुम्हारे हैं॥

"फ़िराक़" उन पै भी क्या क्या गुमाँ गुज़रता है।
मेरी नज़र में जो हूर-ओ-परी से प्यारे हैं॥

—:०:—

यह बे-नियाज़ियाँ[4] हैं थोड़े दिनों से वरना।
माँगा है दुख भी तुझ से चाहा है सुख भी तुझ से॥

—:०:—

ज़माना करवटें लेता है उसके हर इशारे पर।
कि वादे होते रहते हैं बहाने होते रहते हैं॥ √

—: ० :—

१. आकाश, आस्मान २. बन्दी गृह में रहने वालों ३. आस्मान के नक्षत्र। ४ उपेक्षा।

ग़ज़ल

तेरे वहशी[1] भरी दुनिया को वीराना समझते हैं।
मगर एक एक ज़र्रे को भी एक दुनिया समझते हैं॥

न हम ऐसा समझते थे, न हम ऐसा समझते हैं।
मगर क्या जानिये सब लोग तुझ को क्या समझते हैं॥

छुड़ा रक्खा है तुझ से वसवसों[2] ने वसल-ओ-फ़ुरक़त[3] के।
इन्हीं वहमों से अपने आप को तनहा समझते हैं॥

छुपा भी कुछ नहीं रहता नज़र भी कुछ नहीं आता।
इसी को हम तेरा दीदार हो जाना समझते हैं॥

अब इतनी भी नहीं बहकीं मेरी बहकी हुई बातें।
जिन्हें बेवक़्त, बेतुक, बेमहल[4], बेजा समझते हैं॥

किसी का पूछना क्या काम हम को घर बुलाने से।
कोई हम से न पूछे अब हम उसको क्या समझते हैं॥

हमें मायूसिये-फ़ुरक़त में रो लेने दो जी भर के।
नहीं होता है कुछ रोने से हम इतना समझते हैं॥

हमारा हाल सुनने वाले तेरे ज़ब्त के सदक़े।
यह रह-रह के तेरा हम मुस्करा देना समझते हैं॥

"फ़िराक़" [illegible] कोई हर एक से बेगाना रहता है।
[illegible] को लोग दीवाना समझते हैं॥

१. पागल। [illegible] आशङ्काओं। ३. मिलन व वियोग। ४. बेमौक़ा।

ग़ज़ल

बस्तियाँ ढूँढ रही हैं उन्हें वीरानों में।
वहशतें बढ़ गईं हद से तेरे दीवानों में ॥
जिस जगह बैठ गये आग लगा के उट्ठे।
गर्मियाँ हैं कुछ अभी सोख़्ता-सामानों[1] में ॥
अब वह साक़ी की भी आँखें न रहीं रिन्दों से।
अब वह साग़र भी छलकते नहीं मैख़ानों में ॥

—: ० :—

तेरा विसाल बड़ी चीज़ है मगर ऐ दोस्त।
विसाल को मेरी दुनियाए-आरज़ू न बना ॥

—: ० :—

याद आ ही जाती है अक्सर दिले बरबाद की।
यों तो सच है चन्द ज़र्राते परीशाँ कुछ नहीं ॥
जो न हो जाये वो कम है जो भी हो जाये बहुत।
कार ज़ारे इश्क़[2] में दुशवार-ओ-आसाँ कुछ नहीं ॥

—: ० :—

मैं नज़र आता था कब इतना उदास।
आज उन आँखों से मैं झूटा पड़ा ॥

—: ० :—

तुझको पाया भी तुझको खोया भी।
तुझको क्या पाया तुझको क्या खोया ॥

---

१. जले हुए दिलवालों। २. प्रेम संघर्ष।

ग़ज़ल

तुम्हें क्यों कर बतायें ज़िन्दगी को क्या समझते हैं।
समझ लो साँस लेना ख़ुद कुशी[1] करना समझते हैं ॥

बस इतने पर हमें सब लोग दीवाना समझते हैं।
कि इस दुनिया को हम एक दूसरी दुनिया समझते हैं ॥

कहाँ का वस्ल तनहाई ने शायद भेस बदला है।
तेरे दम भर के मिल जाने को हम भी क्या समझते हैं॥

उमीदों में भी उनकी एक शाने बेनयाज़ी[2] है।
हर आसानी का जो दुशवार हो जाना समझते हैं ॥

यही ज़िद है तो ख़ैर आँखें उठाते हैं हम उस जानिब।
मगर ऐ दिल हम इसमें जान का खटका समझते हैं ॥

यह कह कर आबला पा[3] रौंदते जाते हैं काँटों को।
जिसे तलवों में कर ले जज़्ब उसे सहरा समझते हैं ॥

—: o :—

चुप हो गये तेरे रोने वाले।
दुनिया का खयाल आगया है ॥

—: o :—

और है रंगे सुकूत आज दमे अर्ज़े वफ़ा।
कहीं फटकार न दे कुछ भी न कहने वाला ॥

—: o :—

---

१. आत्म हत्या। २. उपेक्षा। ३. छाले पड़े पैर वाले।

ग़ज़ल

कोई उन का मिज़ाज पा न सका।
उन निगाहों का एतबार नहीं॥
तेरे आने की क्या उम्मीद मगर।
कैसे कह दें कि इन्तज़ार नहीं॥
एक भी तो नहीं है मस्त-ओ-ख़राब।
कोई दुनिया में होशियार नहीं॥

—: ० :—

इश्क़ में ख़ुश भी होते है लेकिन।
ऐसा होना भी कुछ ज़रूर[1] नहीं॥

ख़बर अपनी न आज तक आई।
अरे मैं इस क़दर तो दूर नहीं[2]॥

—: ० :—

तुम मुख़ातिब[3] हो सामने भी हो।
तुमको देखूँ कि तुमसे बात करूँ॥

—: ० :—

आज आग़ोश[4] में था और कोई।
हम तुझे देर तक न भूल सके॥

—: ० :

१. आवश्यक। २. आत्मज्ञान ही [illegible]विक ज्ञान है—स्वभावतः मनुष्य इधर-उधर भटकता है, परन्तु [illegible] वह एकाग्र साधना द्वारा आत्म-निरीक्षण करे तो उसे वास्तविक ज्ञान प्राप्त हो जावे। ३. मेरी ओर ध्यान मग्न। ४. गोद में।

ग़ज़ल

तक़दीर सी और तदबीर सी जब तक़दीर नहीं तदबीर नहीं ।
फिर जो भी हो मेरे हिस्से में तक़दीर नहीं तदबीर नहीं ॥

हम देख चुके हम जान चुके हम ऐसों को पहचान चुके ।
सोई भी सही तक़दीर मगर ऐसी सोई तक़दीर नहीं ॥

कम याब[१] सही नायाब[२] सही गुमनाम सही बेनाम सही ।
तासीरे मुहब्बत[३] कुछ भी सही पर क्या वह दो आलमगीर[४] नहीं ॥

क्यों चोट न दिल की उभर आये क्यों ज़िन्दाँ[५] याद न आजाये ।
क्या मौजे हवाये बहारे चमन लहराई हुई ज़ंजीर नहीं ॥

अक्सर रातों को यह कह-कह कर इक दर्द का मारा रोता था ।
सच है कि मुहब्बत से बढ़ कर दुनिया में कोई तक़सीर[६] नहीं ॥

शबनम ने भरीं ठन्डी आहें दिल ख़ून हुआ हर .ग़ुंचे का ।
क्या उठते दर्द के आलम की हर मौजे सबा[७] तस्वीर नहीं ॥

ज़र्राते परीशाँ[८] पर दिल के ऐ महर[९]-ओ-माह[१०] इक आलम है ।
और यों तो चमकने को चमकी किस ज़र्रे की तक़दीर नहीं ॥

उम्मीद पे जीती है दुनिया हम ऐसों का जीता रह जाना ।
ऐ पूछने वाले इसके सिवा कुछ बिगड़ी हुई तक़दीर नहीं ॥

—: ० :—

१. कम मिलने वाला। २. न मिलने वाला। ३. प्रेम का प्रभाव। ४. दोनों लोक में व्याप्त। ५. बन्दी गृह। ६. क़सूर; अपराध। ७. बसंत की हवा। ८. अस्त व्यस्त कण। ९. सूरज। १० चान्द।

ग़ज़ल

होश रहते हुए पैमानये-दिल[१] भर न सकें।
तुझे बे भूले हुए याद तेरी कर न सकें॥
जीने वालो! कोई जीने में है यह भी जीना।
कुछ भी कर धर न सकें मिट न सकें मर न सकें॥

कहने को इश्क़ किया हो भी नहीं पाये ख़राब।
वह गुनह करते ही क्यों हैं कि जिसे कर न सकें॥
हो के मजबूर मुहब्बत से हैं शाकी[२] लेकिन।
इतने आजाद न हो जाएँ कि कुछ कर न सकें॥

जीते मुर्दों से जिया भी नहीं जाता है "फ़िराक़"।
मौत भी इन को अगर आये तो यह मर न सकें॥

—: ० :—

जिस क़ैद से छुटते भी न बने वह क़ैदे-मुहब्बत भी देखी।
जीने की मुसीबत भी देखी मरने की नदामत[३] भी देखी॥
*कुछ खोया हुआ कुछ दुखता हुआ राहत[४] है 'फ़िराक़' न कुलफत[५] है।
जो देखी जाय न आँखों से इस दिल की वह हालत भी देखी॥

—: ० :—

न हो एहसास[६] तो सारा जहाँ है बेहिस-ओ-मुरदा[७]।
गुदाज़े-दिल[८] हो तो दुखती रगें मिलती हैं पत्थर में॥
नशेमन जल रहे हैं हर चमन शोला बदायाँ[९] है
यह किसने बिजलियाँ रख दी थीं हर बर्गे-गुले-तर[१०] में॥

---

१. हृदय-पात्र। २. शिकायत करने वाले। ३. लज्जा। ४. आराम। ५. उलझन। ६. अनुभूति। ७. अनुभूति हीन और निष्प्राण। ८. दिल में दर्द। ९. आग में लिपटा हुआ है। १०. फूल की पंखड़ी में,

*मनुष्य को परिस्थितियाँ सब कुछ सहने पर बाध्य करती हैं।

ग़ज़ल

रंज-ओ-राहत, वसल ओ फ़ुर्क़त होश-ओ-वहशत[1] क्या नहीं।
कौन कहता है कि रहने की जगह दुनिया नहीं॥

दिल भी कहता है ठहरना हिज्र में दुशवार है।
मैं भी कहता हूँ कि यह अन्दाज़े ग़म[2] अच्छा नहीं॥

हम भी देखेंगे कभी नाज़ुक-मिज़ाजी[3] इश्क़ की।
आज जिस से इक ज़रा सा नाज़े-यार उठता नहीं॥

ग़ौर कर इस कैफ़ियत पर कुछ समझ यह सोज़-साज़[4]।
इश्क़ में दिल दर्द हो जाता है दिल दुखता नहीं॥

मैं अदम अन्दर अदम[5] हूँ मैं जहाँ अन्दर जहाँ[6]।
एक ही दुनिया हो मेरी ऐ 'फ़िराक़' ऐसा नहीं॥

—: ० :—

*तेरा आ जाना फ़िक्रे शेर[7] के वक्त।
आज बिगड़ी बनी बनाई बात॥

---

१. पागलपन। २. वेदना की रीति। ३. भावों की कोमलता। ४. जलन, पीड़ा। ५. परलोक के अन्दर परलोक। ६. लोक के अन्दर लोक। ७. शेर कहते वक़्त; कविता की रचना के समय।

* भावनायें अपनी तीव्र तम अवस्था में मनुष्य को स्थिर कर देती हैं। कवि अपनी रचना द्वारा प्रेमिका को पा लेने में विश्वास रखता है किन्तु रचना जब विषय का रूप धर कर छा जाती है तो व्यंजना कमजोर पड़ जाती है। यह व्यंजना की असफलता ही बनी बात को बिगाडना है।

ग़ज़ल

कुछ और अब अपनी ज़िन्दगी है।
यह दोस्ती है यह दुशमनी है॥

ए दोस्त यह कोई ज़िन्दगी है।
जो तुझ से बिछड़ के कट रही है॥

*दरिया भी हूँ मैं सराब[1] भी हूँ।
साक़ी यह मआले-तिशनगी[2] है॥

तेरी जफ़ायें[3] भुला दूँ तेरी वफ़ायें[4] भी।
जो याद आये तो ऐ दोस्त तूही याद आये॥

—: o :—

उदासी में मोहब्बत का फ़साना[5] छेड़ ऐ हम दम[6]।
दुखे जिस दास्ताँ से दिल उसी से जी बहलता है॥

—: o :—

हम अहले-दर्द[7] तूर[8] से आगे निकल गये।
पत्थर हमारी राह में हायल[9] नहीं रहा

—: o :—

* मैं स्वयं प्राप्ति भी हूँ और प्राप्य भी—आत्म-विस्मृति की यह सब से उच्चपराकाष्टा है।

१. मृग तृष्णा। २. तृष्णाका परिणाम। ३. कहानी। ४. साथी। ५. दर्द के मारे। ६. वहप हाड़ जिस पर से ईश्वर ने मूसा को अनंत प्रकाश दिखाया था। ७. बन्धन, रोड़ा। ८. उपेक्षा; अत्याचार। ६. सहानुभूति।

ग़ज़ल

दर्द ही तो है दिल का चोट ही तो है दिल की।
उठ पड़े क़यामत[1] है, बैठ जाय पैकाँ[2] है॥

उसका मुल्तफ़ित[3] होना, उसका मेहबाँ होना।
चाहिये तो मुश्किल है सोचिये तो आसां है॥

क़ैद क्या रिहाई क्या हैं हमीं में सब आलम[4]।
रुक गये तो ज़िन्दा[5] है चल पड़े बयाबाँ[6] है॥

ए "फ़िराक़" उन्हें पाकर हम यह दिल में कहते हैं।
सोचिये तो मुश्किल है देखिये तो आसाँ है॥

—:०:—

शऊरे इश्क़ की तकमील[7] हो चुकी शायद
न भूलता है कोई अब न याद आता है

—:०:—

आज रग-रग में जान दौड़ गई।
मौत ने ज़िन्दगी को छोड़ दिया* ॥

—:०:—

१. प्रलय। २. तीर। ३. सहानभूति प्रकट करना। ४. अवस्थायें; ससांर। ५. बन्दी-गृह। ६. जंगल। ७. प्रेम की अनुभूति को पूर्णता प्राप्त हो चुकी।

* किसी असाधारण स्थिति में मनुष्य की नस-नस में प्राण दौड़ जाते हैं...मरते समय भी नस-नस में एक हलचल सी व्याप्त हो जाती है—शायर ने ज़िन्दगी और मौत का वही सजीव वर्णन किय है।

ग़ज़ल

क्या राह है राहे-मुहब्बत भी साँस आते-आते टूट गई।
क्या बार[1] है बारे-मुहब्बत भी दो गाम[2] में हिम्मत छूट गई॥

तसकीन[3] की बातें करते हो हम जानते हैं जो होना है।
जब उस से बिछड़ कर जीना है तो यारो क़िस्मत फूट गई॥

चाहा था जिसे दुखते दिल से उसकी भी निगाह कभी होगी।
उस शख्स[4] की क़िस्मत क्या कहिये यह आस भी जिसकी टूट गई॥

दुनिया में हैं और बैठे हैं खटराग मुहब्बत का लेके।
क्या अपनी भी मत मारी गई क्या सारी सुध बुध छूट गई॥

है दर्द सा दर्द मुहब्बत का, है चोट सी चोट मुहब्बत की।
आँखें भी न पड़ने पाई थीं और मुँह पे हवाई छूट गई॥

*आगे शायद पड़ता है अदम[5] कुछ ठीक हमें मालूम नहीं।
यह दर्द की हद[6] है "फ़िराक" यहीं से दिल की बस्ती छूट गई॥

—: ० :—

*जब-जब इसे सोचा है दिल थाम लिया मैंने।
इन्सान के हाथों से इन्सान पे जो गुज़री॥

—: ० :—

१. बोझ, भार। २. पग। ३. धीरज। ४. व्यक्ति। ५. मृत्यलोक। ६. सीमा।

* मनुष्य स्वयं अपने जीवन का एक महान अपवाद है। इतिहास के इस सत्य को जब मनुष्य अनुभव करता है तो उसके रोंगटे खड़े हो जाते हैं; वह स्तंम्भित सा रह जाता है।

ग़ज़ल

इश्क़ की दुनिया भी वह दुनिया नहीं।
अब तो तेरा दर्द भी इतना नहीं* ॥

अहले ग़म को तेरा पैमाने-वफ़ा।
याद तो क्या है मगर भूला नहीं ॥

क़ाफ़ले या मिट गये या बढ़ गये।
अब ग़ुबारे-राह[1] भी उठता नहीं ॥

मौत ने भी जानना चाहा मगर†।
ज़िन्दगानी का भरम खुलता नहीं ॥

मानिये तक़दीर[2] तो वह था कि खुद*।
कातिबे तक़दीर[3] भी समझा नहीं ॥

तू ने अपनी भी तो कुछ परवा न की।
लेकिन ऐसा तो कोई करता नहीं ॥

---

*समय एक महान अवधि है जिसमें किसी भी वस्तु की तीव्रता प्राण प्रतिष्ठित होकर अभिन्न बन जाती है। प्रेम भी जीवन में इतना व्याप्त हो चुका है कि प्रेमी को उसकी तीव्रता का अनुभव नहीं होता।

१. पथ की धूल। २. भाग्य का रहस्य। ३. भाग्य का लिखने वाला।

†जीवन के रहस्य को मौत समझ नहीं सकी है जीवन को सहसा समाप्त भले कर दिया है।

*भाग्य के रहस्य को भाग्य विधाता भी समझने में असफल रहा। [वस्तुतः मनुष्य एक ऐसा जीव है। जिसने पुरुषार्थ से अपने भाग्य भी बदल दिये हैं।]

ग़ज़ल

हस्सास[1] किस क़दर है मुहब्बत की ज़िन्दगी।
हम बे ख़बर हैं और उन्हें पाये हुए से हैं॥

अक्सर सुकूते-हिज्र[2] में गर ग़ौर से सुनें।
आती हैं यह सदायें[3] हम आये हुए से हैं॥

बहला रहे हैं इश्क़ के एहसास को "फ़िराक़"।
दिल से किसी की याद भुलाये हुए से हैं॥

—: ० :—

कुछ इन आँखों का मद ले कुछ इन होटों का रस ले।
*इश्क़ के दुख का ज़हर मिला आबे-हयात यही शै है॥

—: ० :—

ख़राब होके उठा हूँ तेरी निगाहों से।
मेरा ख़याल है दुनिया सँवर गई होगी॥

—: ० :—

ऐसे भी हैं जो दौलत ओ सरवत[4] के चटख़ारे[5] ले ले कर।
रखते हैं इन होठों पे दाँत मुँह का मज़ा बदलने को॥

—: ० :—

१. चेतनता (अनुभूतिमय) जब प्राप्य प्राप्ति बन जाता है—ठीक उसी अवस्था का वर्णन कवि ने किया है—किस क़दर का मतलब यहाँ इतना भी नहीं है। २. वियोग की नीरवता में। ३. ध्वनियाँ-आवाज़। ४. वैभव। ५. स्वाद के लिये।

* अमृत की व्यख्या करते हुए कवि कहता है—आँखों की मादकता और अधरों की सरसता और वियोग की कटुता के सम्मिश्रण से ही अमृत का निर्माण हुआ है।

इश्क़ और मौत

(१)

एक पुराने कमरे में—
हल्की-हल्की रोशनी थी।
छिड़ा हुआ था साज़े तरब[1] ॥
तुम बैठे थे जहाँ गोया।
इक तस्वीर हयात[2] की थी ॥
और हयात के आशिक़ की।
मौत एक नग़मा[3] गाती थी ॥

(२)

मुझको ख़बर है तुम उस वक़्त—
क्या सुनते थे ? क्यों मुड़कर।
मेरी तरफ़ हँस कर देखा ॥
इक उड़ते हुए तायर[4] की।
उजले परों की सदायें थीं ॥
तुम इस तरह थे खुश जैसे।
सैर पसन्द [illegible] बच्चा ॥

१. मधु-[illegible] । २. जीवन । ३. [illegible] । ४. पक्षी ।

(३)

मौत ने[1] गाया—"सो जाओ।
अपने जनाज़े पर और फिर ॥
मुँह को उठा लो ऊपर को।"
मुझसे कहा" तुम साथ चलो ॥
और देखो आँसू न बहें ।
इक सच्चे आशिक़ की तरह ॥
रक़्स[2] करो और गाते चलो ॥"

(४)

और बढ़े तुम इशारों पर ।
उन धुंधले परों की सदाओं[3] से ॥
फिर बाद को जब यह मैंने सुना ।
तुम इस दुनिया में नहीं हो अब ॥
मैं रो न सका रोने के बजाय ।
मैं गाता था यों ही जैसे ॥
इक सच्चा आशिक़ गाता है ।

१. अर्थी। २. नृत्य। ३. ध्वनियों।

(५)

आज भी इक कमरे में जहाँ ।
हल्की-हल्की रोशनी है ॥
छिड़ा हुआ है साज़े[1] तरब ।
तुम जब आते हो गोया ॥
मौत की इक तस्वीर की तरह ।
और एक मौत के आशिक़ की ॥
ज़िन्दगी नग़मा[2] गाती थी ॥

—: ० :—

अपने घर का हर एक राजा ।
इश्क़ का घर परदेस है लेकिन ॥

—: ० :—

रूप ऐसा हसीन जैसे गुनाह ।
ख़ल्क़[3] का हासिले सवाब[4] है तू ॥
*जो छलकता भी जाय भरता भी जाय ।
ऐसा पैमानये-शराब है तू ॥

—: ० :—

१. मधुर संगीत । २. गीत । ३. सृष्टि, ४. सबसे बड़ा पुण्य प्रेमी के लिये प्रेमिका का पा लेना है ।

* अपने को पहचानने का प्रयास सृष्टि के प्रारम्भ से ही मनुष्य करता आया है और यही उसके जीवन का अभाव भी रहा है । यह अभाव मनुष्य सृष्टि के प्रारम्भ से नहीं उठा सका है और आज भी उसके प्रयत्न प्रयास मात्र हैं ।

इश्क़ का तराना

जलवए-गुल[1] बुलबुल को बहुत है।
शमा को गिरयए-शाम[2] ॥

बादे-बहारी[3] गुल को बहुत है।
मुझ को तेरा नाम ॥

बिजली चमके काली घटामें।
जाम[4] में आतशे सर्द[5] ॥

चमके राख जोगी की जटा में।
मुझ में तेरा दर्द ॥

बल न छुटे तेरे बालों से।
और नैसे[6] फ़रयाद ॥

पल भर मन[7] न छुटे कालों से।
मुझ से तेरी याद ॥

शाख पै[8] शोलये[9] गुल की लपक हो।
चर्ख[10] पर अन्जुओ[11] वो माह[12] ॥

दुनिया पर सूरज की चमक हो।
मुझ पर तेरी निगाह ॥

—:o:—

१. फूल का दर्शन। . रुदन। ३. वसन्त ऋतु की बहा। ४. प्याला। ५. ठंडी हवा। ६. बाँसुरी। ७. नाग मरिम। ८. डाली। ९. फूल की लपट। १०. आकाश। ११. तारा। १२. चाँद।

ग़ज़ल

पूछ न जीने वालों का हाल ।
एक जान लाखों जंजाल ॥

देखियो इस बाज़ी का मआल[१] ।
हुस्न की शह[२] है, इश्क़ की चाल ॥

गिरती दुनिया ले जो संभाल ।
है कोई माई का लाल ॥

आज तो उसने पूछा हाल ।
अह -ग़म के बड़े एक़बाल[3] ॥

कौन है अस्ल और कौन मिसाल[४] ।
हुस्न और इश्क़ में फ़र्क़ मुहाल[५] ॥

बातों-बातों में पूछ ले हाल ।
आज दिलों का चोर निकाल ॥

इश्क़ को अब पाना है मुहाल ।
हम भी तुझ से चल गये चाल ॥

क्या है जवाब और क्या था सवाल ।
उसी हाल है फिर बैताल ॥

---

१. परिणाम । २. शतरज के खेल में बादशाह को मारने की चाल के पहले कहा जाता है शह; किश्त ३. ऊँचे भाग्य । ४. प्रतिरूप । ५. कठिन ।

मुल्के बक़ा[६] का छोड़ खयाल ।
मौत के घर में डेरे डाल ॥

बातिल-ओ-हक़[७] का जवाब मुहाल ।
तेरी मिसाल न मेरी मिसाल ॥

कल क इश्क़ थ क़हूते-रजाल[८] ।
आज पड़ा है हुस्न का काल ॥

हुस्न पै इश्क़ का जादू डाल ।
काफ़िर को साँचे में ढाल ॥

चका चौन्ध का पूछ न हाल ।
कौन्द रही है बर्क़े-जमाल[९] ॥

मद भरी आँखें अल्हड़ चाल ।
ओ मतवाले होश संभाल ॥

पूछ न उसके हुस्न का हाल ।
दिल का शकेब[१०] और जी का बवाल ॥

दूर की कौड़ी लाई वह आँख ।
नीयत पाना उसकी मुहाल ॥

इश्क़ में ग़ाफ़िल आँख तो खोल ।
इक सपना है हिज्र-ओ-विसाल[११] ॥

दिल को आँखों-आँखों में तोल ।
इश्क़को बातों बातों में टाल ॥

६. अमरत्व । ७. (आंतरिक) मिथ्या और सत्य; सत्य असत्य । ८. महा काल । ९. सौंदर्य बिजली । १०. आराम; ठहराव । ११. विरह–मिलन ।

दिल की धड़कन दे न सुनाई ।
इतना कान में तेल न डाल ॥

मौत भी निकली है मुँह फेरे ।
इश्क़ है आज बहुत बेहाल ॥

हुस्न के रुख़ पर बढ़ने वाले ।
मात न दे तुझको यह चाल ॥

जो भी लगे हों इश्क़ के भाव ।
दाम के दाम बिका यह माल ॥

तीन क़दम में तीनों लोक ।
इश्क़ कीनाप का पूछ न हाल ॥

कोहे-तूर[12] था इक ठोकर का ।
इश्क की ऊबड़ ग्वाबड़ चाल ॥

अहले हवस[13] को मोल न ले ।
गिराँ[14] पड़ेगा कच्चा माल ॥

लोहा लोहा से कटता है ।
इश्क़ को आ ही गया जलाल[15] ॥

हम भी तो अपने न रहे ।
किसे परखते आपत काल ॥

घोड़े बेच के सोये हैं ।
पसमाँदों[16] का पूछ न हाल ॥

---

१२. वह पहाड़ जहाँ हजरत मूसा ने दैवी ज्योति के दर्शन किये थे । १३. वासनाप्रिय । १४. महंगा । १५. क्रोध । १६. हताश व्यक्तियों को ।

इश्क़ से हुस्न वफ़ा क्या करता।
पहले चुम्मा काटा गाल॥

इक दुनिया में सन्नाटा है।
अब ग़ुस्से पर पानी न डाल॥

जिसकी लाठी उसकी भैंस।
यह दुनिया है उसकी मिसाल॥

ठहरे ठहरे आँसू देख।
गिरते गिरते खुद को संभाल॥

छोड़ मुहब्बत का ग्वटराग।
उसका पाना अम्रे-मोहाल॥

अपनी बलन्दी पस्ती देख।
क्या आकाश और क्या पाताल॥

घर घर मे अंधेर मचा दे।
दुनिया भर में हल चल डाल॥

माले-मुफ़्त दिले-बेरहम।
अहले-हकूमत[17] का है ये हाल॥

एक[18] बगूला न.ख्ले-इश्क़[19]।
इस बिरवा[20] के पात न डाल॥

जिन्से-हुस्न[21] का मोल न पूछ।
बाज़ारों में है हड़ताल॥

१७. शासनारूढ़। १८. बवन्डर—झंझावात। १९. प्रेम का वृक्ष। २०. पौदा २१. रूप का माल।

क़ज़ का खाना यों है जैसे ।
तापे कोई जला केपुआल ॥

बुझे दिलों में जोशे-मोहब्बत- ।
जैसे बासी कढ़ी में उबाल ॥

जागता रब सोना संसार ।
किस लिये बजते है घड़ियाल ॥

मज़हब वाले दौलत वाले ।
दोनों बड़े गुरू घण्टाल ॥

—:o:—

हुस्न इक ख्वाबे नाज़[४] है जिसके ।
चौंक पड़ने को इश्क़ कहते हैं ॥

—:o:—

*जो उठ न सके सुबहे अज़ल[२] अपने सहारे ।
यह इश्क़ वही दर्द उठाने के लिये है ॥

—:o:—

*यौंही सी उसकी मुझे गर खबर हुई तो हुई ।
कि देर-देर तक अब मैं उदास रहता हूँ ॥

—:o:—

१. नज़ाकत का स्वप्न है। अचानक सिहरन प्रेम का मुख्य लक्षण है। २. सृष्टि के प्रथम दिन।

* स्मृति ही चिन्ता बन जाती है—प्रेमिका की स्मृति मात्र चिंतित बना देती है ।

आज दुनिया पै रात भारी है

इन्क़लाबे[१] जहाँ की बारी है।
आस्मानों पै ख़ौफ़[२] तारी है ॥

आप से डर रही है यह दुनिया।
यह भी किन आफ़तों की मारी है ॥

यह जनाज़ा है अहदे माज़ी[३] का।
वह नये दौर की सवारी है ॥

नींद आती नहीं सितारों को।
आज दुनिया पै रात भारी है ॥

गरदिशें बन्द हैं ज़माने की।
बेक़रारी[४] सी बेक़रारी है ॥

यों ही मजरूह[५] था यह नज़्मे-जहाँ[६]।
पर लगा अब की ज़ख़्मकारी है ॥

सब को करना है इन्क़लाब इक रोज़।
आज हम कल तुम्हारी बारी है ॥

---

१. परिवर्तन । २. आतंक । ३ अतीत, प्राचीन, ४ विह्वलता।
५. घायल । ६. संसार का विधान ।

हस्तिये-नीस्ती-नुमा[1] की क़सम ।
ज़िन्दगी ज़िन्दगी से आरी[2] है ॥

डर रहे हैं शिकस्ते-दुनिया से ।
लड़ने वालों की वज़अदारी[3] है ॥

साम्राज अब है अपनी परछाईं ।
अब वजूद[4] इसका एतबारी है ॥

अपनी मजबूरियों का है जिन्हें इल्म ।
हर अमल उनका अख़्तियारी है ॥

सुल्ह को हार बैठे जीत के जंग ।
वाह क्या मुद्दआ बरारी[5] है ॥

शोख़ कितनी है मौत की यह सदा ।
ज़िन्दगी आज किस को प्यारी है ॥

"बात पर वाँ ज़बान कटती है" ।
फिर भी अपना फ़साना जारी है ॥

हम से लड़ती हैं मौत की आँखें ।
अपनी एसों ही से तो यारी है ॥

---

१. वह अस्तित्व जो नास्ति की तरह प्रतीत हो । २. तंग आई हुई । ३. शीलता ४. अस्तित्व ५. उद्दश्य प्राप्ति ।

कामरानी[1] भी निकली नाकामी[2] ।
ज़िन्दगी क़िस्मतों की मारी है ॥

अब यह दुनिया है अहले-दुनिया की ।
न हमारी न वह तुम्हारी है ॥

जिस को सरमाया दारी[3] कहते हैं ।
बाज़ियाँ जीत कर वह हारी है ॥

मौत से खेलते हैं हम उश्शाक़[4] ।
ज़िन्दगी है तो बस हमारी है ॥

चमने - दौलत - ओ - हकूमत की ।
ख़ूने-मुफ़लिसइ[5] से आबयारी है[6] ॥

ज़िन्दगी पा रही है यह दुनिया ।
हम फ़क़ीरों का फ़ैज़[7] जारी है ॥

याद रख शोरिशे ज़माना[8] पर ।
इश्क़ की एक बात भारी है ॥

दौरे-इस्लाह[9] ख़त्म अब तो "फ़िराक़"।
इन्क़लाबे जहाँ की बारी है ॥

—: ० :—

---

१. इच्छाओं का पूरा होना । २. निराशा । ३. पूजीवाद । ४. प्रेमी । ५. । गरीबों के ख़ून । ६. सिंचाई । ७. दान, कृपा । ८. समय की हलचल । ६. सुधार वाद का समय ।

"तारीख़ अपने आप को दुहरा रही है आज"

दुनिया को इन्क़लाब की याद आ रही है आज।
तारीख़ अपने आप को दुहरा रही है आज॥

वह सर उठाये मौजे-फ़ना[१] आ रही है आज।
मौजे-हयात[२] मौत से टकरा रही है आज॥

कानों में ज़लज़लों[३] की धमक आ रही है आज।
हर चीज़ कायनात[४] की थर्रा रही है आज॥

झपका रही है देर से आँखें हवाये दह्र[५]।
कौन-ओ-मकाँ को नींद सी कुछ आ रही है आज॥

हर लफ़्ज़ के मआनी-ओ-मतलब[६] बदल चले।
हर बात और बात हुई जा रही है आज॥

नकसर[७] जहाने-हुस्ने भी बदला हुआ सा है।
दुनियाए-इश्क़ और नज़र आ रही है आज॥

१, नाश की लहर। २. जीवन की लहर। ३. भूकम्प। ४. सृष्टि। ५. दुनिया की हवा। ६. अर्थ, माने। ७. एक दम; अकस्मात।

या ज़िन्दगीये-दह्र थी सौगन्द मौत की।
या मौत ज़िन्दगी की क़सम खा रही है आज॥

यह दामने[1] अजल-है कि तहरीके-ग़ैब[2] है।
क्या शै[3] हवाये दह्र[4] को सनका रही है आज॥

इबना-ये दह्र लेते हैं यों साँस गर्म-ओ-तेज़।
जीने में जैसे देर हुई जा रही है आज॥

अफ़लाक[5] की जबीं[6] भी शिकन[7] दर शिकन सी है।
त्योरी ज़मीन की भी चढ़ी जा रही है आज॥

फिर छेड़ती है मौत हयाते फ़सुरदा[8] को।
फिर आतशे-खमोश[9] को उक्सा रही है आज॥

बरहम[10] सा कुछ मिजाजे-अनासिर[11] है इन दिनों।
और कुछ तबीयत अपनी भी घबरा रही है आज॥

इक मौजे-दूद[12] सीने में लरज़ाँ है इस तरह।
नागिन सी जैसे शीशे में लहरा रही है आज॥

बीते युगों की छाँव है इमरोज़[13] पर "फ़िराक़"।
हर चीज़ इक फ़साना हुई जा रही है आज॥

१. मृत्युका आँचल। २. दैवी प्रेरणा। ३. वस्तु। ४. दुनिया की हवा। ५. आकाश। ६. माथा—भाग्य। ७. बल' सिलवट। ८. निष्प्राण जीवन। ९. शाँत अग्नि १०. बिगड़ा हुआ ११. तत्वों की प्रकृति। १२. धुएँ की लहर। १३. वर्तमान।

"मुबारक इन्क़लाब आवाज़ तो कानों में आई है"

गुलामी को कलेजे से लगाकर क्यों न रखें हम।
यह है मीरास[१] अपनी, बाप-दादों की कमाई है॥

यही थोड़े में है तारीख तहज़ीबो-मतद्दन[२] की।
महाजन राज है और रुपया है आना पाई है॥

मशक्कत-पेशा वाले[३] जाग आँखें खोल दुनिया देख।
यह राजा की न बाबू की तेरी सारी ख़ुदाई है॥

यह जीती जागती दुनिया यह बेसिस[४] हुक्मराँ लानत।
यह मुरदों की सभा ज़िन्दों के होते क्यों सजाई है॥

इसे मर मर के पाला था कभी हम ख़ानाजादों[५] ने।
मिटाता है हमें नज़मे-कुहन[६] की मौत आई है॥

अभी सरमायादारी ने जलाल[७] उसका नहीं देखा।
अभी मज़दूर दुनिया ने ज़रा त्योरी चढ़ाई है॥

बहुत बढ़ बढ़ के दावे जब किये अहले-हुकूमत ने।
सुना है मौत को अँगड़ाई पर अँगड़ाई आई है॥

---

१. बपौती। २. सभ्यता, संस्कृति। ३. मज़दूर; श्रम जीवी। ४. अनुभूति हीन। ५. गुलामी की प्रथा थी तो खरीदे हुए गुलाम अपने मालिक के घर रहते थे वहाँ उन्हें जो संतान पैदा होती थी वह खानाज़ाद कहलाती थी। खानाज़ाद बहुत वफ़ादार होते थे और मालिक पर जान देते थे। शैर का अर्थ यह है कि पूँजीवादी प्रथा के घर में हमगुलाम पैदा हुए थे हमने जान दे देकर इस प्रथा को पाला। यह प्रथा हमें मिटा रही है तो समझ लो इस प्रथा की मौत आई है। ६. प्राचीन विधान। ७. गुस्सा, क्रोध।

नई लौ से फ़लक[१] पर अब सितारे थरथराते हैं।
नई रातें, नई महफ़िल, नई आतश नवाई[२] है॥

पसीने मौत के आने लगे अहले हकूमत को।
प्रजा हठ, राजा हठ में बेधड़क ज़ोर आज़माई[३] है॥

नये इन्सान में वह सोज़-ओ-साज़े-ज़िन्दगी देखा।
ख़ुदा का ज़िक्र क्या आँख अहमन[४] की भी भर आई है॥

कहीं मज़दूर दुनिया की सलामी जैसे दगती हो।
मुबारक इन्क़लाब आवाज़ तो कानों में आई है॥

— ॰ —

१. आकाश। २. आग भड़काने वाली बातें। ३. शक्ति परीक्षा। ४. शैतान—पारसियों के धर्म में शैतान को अहमन कहते हैं। यह शब्द असुर से मिलता जुलता है।

युग परिवर्तन

पड़ने लगती हैं जबीने[1] वक़्त पर जब सिलवटें[2] ।
रात दिन चक्कर में पड़ जाते हैं अब क्योंकर कटें ॥

यह भयानक आँधियाँ यह बहर-ओ-बर[3] के ज़लज़ले ।
यह जम्हाई आस्मानों की ज़मीं की करवटें ॥

यह अँधेरा घुप कि सूरज, चाँद, तारे लापता ।
यह धुआँ घुटता हुआ काली की बल खाई लटें ॥

मौत के घोड़ों के नथुनों से यह शोलों की लपक ।
सहमी दुनिया में यह उनकी बेतहाशा सरपटें ॥

डाइनों के मुँह से यह खट्टी डकारों का धुआँ ।
जैसे दोज़ख़[4] के गढ़े औलादे-आदम[5] से पटें ॥

जहर से बढ़कर तो क़ातिल जाम-इशरत[6] थे "फ़िराक़" ।
इन पियालों की न चक्खीं अहले-ग़म ने तलछटें ॥

—: ० :—

---

१. समय के ललाट । २. रेखायें, बल । ३. सागर और पृथ्वी । ४. नरक । ५. मनुष्य । ६. प्रेम (की मदिरा) के प्याले ।

ज़माने की चुनौती

हुस्ने-माज़ी[१] से जो लिपटा है वह सौदाई है।
कि बदल जाने की दुनिया ने क़सम खाई है॥

दास्ताँ अपनी ही तारीख़ ने दुहराई है।
हो खबर तुझको तो होती भी यही आई है॥

राजा हट से जो प्रजा हठ कभी टकराई है।
वक़्त के दिल धड़कने की सदा[२] आई है॥

इस तमुद्दन[३] ने खिलाये हैं गुलिस्ताँ[४] क्या क्या।
खूने-मुफ़लिस[५] से यह सारी चमन आराई है॥

देख बिफरी[६] हुई दुनिया को दबाने की न सोच।
बाज़ आयेगी बग़ावत से न बाज़ आई है॥

इन्क़लाब और किसे कहते हैं यह रंग तो देख।
ज़िन्दगी मौत को भी साथ लगा लाई है॥

नहीं खैर अब तेरी ए नज्मे-कुहन[६] मेरी भी।
कुछ न कुछ रंगे-ज़माना[७] में शनासाई[८] है॥

१. प्राचीनता की सुन्दरता। २. ध्वनि। ३. संस्कृति। ४. उपवन। ५. ग़रीब के खून से यह सारा चमन सजाया गया है। ६. प्राचीन व्यवस्था। ७. समय की गति। ८. पहचान, परिचय।

देखना यह है बरसती है कि बरसाती है आज।
दामने-बर्क़[1] को लहरा के घटा छाई है॥

रुपया राज करे आदमी बन जायगुलाम।
ऐसी तहज़ीब तो तहज़ीब[2] की रुसवाई[3] है॥

आज ख़मियाज़ा[4] से सदियों के फ़िज़ा है लरज़ाँ[5]।
नई दुनिया की यह आई हुई अँगड़ाई है॥

कैसी परछाइयाँ दुनिया पे पड़ी हैं जिस वक़्त।
मौत की ज़ुल्फ़े-सियह ज़ीस्त[6] पे लहराई है॥

दौलत-ओ-इल्मकी साज़िश[7] है जो इन्सों के ख़िलाफ़।
वक़्त की रूह ख़बर उसकी उड़ा लाई है॥

अश्के ख़ूनीं से है मज़दूर के रंगीन फ़िज़ा;
यह गुलाबी भी इन्हीं आँखों ने छलकाई है॥

क्यों न हो मीनये-मुफ़लिस[8] से चुराया है लहू।
सेठ जी ख़ुश भी हैं रंगत भी निखर आई है॥

अभी मिट्टी में मिला आये हैं नाज़ीयत[9] को।
साम्राजों की भी सुनते हैं ख़बर आई है॥

---

१. बिजली के अंचल। २. सभ्यता। ३. बदनामी। ४. परिणाम, फल, उबाल। ५. कम्पित। ६. जीवन। ७. षडयन्त्र। ८. ग़रीब। ९. नाज़ीवाद।

सदा बहार है तू प्रेम का सोहाग है तू

भड़कते शोलों से ठन्डक जो दे वह आग है तू।
सदा बहार है तू प्रेम का सोहाग है तू॥

खबर दिलों को नहीं जलते हैं कि बुझते हैं।
अरे न आग न पानी है जो वह लाग है तू॥

सकूत[1] का भी तो कानों में गूँज पाया।
जो एक कर दे सुना अनसुना वह राग है तू॥

झलक रही है जबीं कायनात[2] की तुझसे।
इक अम्रे-ग़ैब[3] से खुल जाय जो वह भाग है तू॥

—:०:—

१. मौन। २. सृष्टि का माथा। ३. दैव

इश्क़ को भी ख़ुशी न थी हुस्न भी शादमाँ न था

*कुछ भी अयां[1] निहाँ[2] न था कोई ज़मां मकाँ न था।
देर थी इक निगाह की फिर यह जहाँ जहाँ न था॥

†साज़[3] वह क़तरे क़तरे में, सोज़[4] वह ज़र्रे ज़र्रे में।
चाह तेरी किसे न थी दर्द तेरा कहाँ न था॥

×सब्र-ओ-सुकूँ, के राज़ कुछ बातों में खुल गये मगर।
इश्क़ को भी ख़ुशी न थी हुस्न भी शादमाँ[5] न था॥

‡एक को एक की ख़बर मंज़िले-इश्क़ में न थी।
कोई भी अहले-कारवाँ[6] शामिले-कारवाँ न था॥

१. स्पष्ट । २ निहित । ३. श्रृङ्गार । ४. चमक, जलन । ५. प्रसन्न; ६. कारवाँ के साथ चलने वाला ।

*प्रेम की उस अवस्था का वर्णन है जब मनुष्य आत्म विभोर हो उठता है—उसे अपनी सुध बुध भी नहीं रह जाती। समय, काल और परिस्थिति का भी ज्ञान जाता रहता है।

†ईश्वर की व्यापकता का वर्णन करते हुए कवि कहता है—प्रत्येक बून्द में तेरे रूप की झलक का आभास होता है और प्रत्येक कण में तेरे रूप का प्रकाश जलता दिखाई पड़ता है।

×प्रेम का वास्तविक सुख उसकी मर्यादा की रक्षा करना है यदि यह मर्यादा भंग हो गई तो शान्ति भी जाती रहती है।

‡प्रेम के पथिक अपने ही में डूबे रहते हैं, वे दुनिया में रहते हुए नहीं के बराबर हैं।

ग़ज़ल

उदास पा के मुहब्बत को मुस्कराये जा।
अब आगया है तो इक आग सी लगाये जा॥

जहाँ को देगी मुहब्बत की तेग़[1] आबे-हयात[2]॥
अभी कुछ और इसे ज़हर में बुझाये जा॥

*मिटा मिटा के मुहब्बत सँवार देती है।
बिगड़ बिगड़ के यों ही ज़िन्दगी बनाये जा॥

फिर अपना काम भी कर लेगी एक दिन वह निगाह।
अभी तो इश्क़ की गौं पर इसे लगाये जा॥

मआमला भी यही है कि खुल के दिल की तरफ़।
ज़रूर देख, नज़र भी मगर चुराये जा॥

†शबाब पर है ज़माना तेरे सितम के निसार[3]।
उभर रहा हूँ कई रंग से मिटाये जा॥

"फ़िराक़" छेड़ दिया तूने क्या तरानये-दर्द[4]।
समझ में कुछ नहीं आता मगर सुनाये जा॥

—: ० :—

१. तलवार। २. अमृत। ३. न्योछावर। ४. करुण [गान।

*प्रेम में शारीरिक ह्रास तो होता है किन्तु आत्मिक विकास होता है। कवि ने उसी का वर्णन किया है कि प्रेम में मनुष्य मिट मिट के बनता जाता है।

†प्रेमी कई प्रकार से प्रेमिका के विभिन्न रूपों का वर्णन करता है। उसकी प्रशंसा भी करता जाता है। उसकी कई रूप में प्रशंसा करना उभरना है और वियोग का अनेकों रूप से प्रेयसि का मिटाना है।

ग़ज़ल

"फ़िराक़" था कोई वह तेरी अन्जुमन[1] में कौन था।
वह दर्द कुछ उठा उठा वह रंग कुछ उड़ा उड़ा ॥

*वह सोज़-ओ-दर्द मिट गये वह ज़िन्दगी बदल गई।
सवाले इश्क़ है अभी यह क्या किया ? यह क्या हुआ ?

मैं पूछता तो हूँ मगर, जवाब के लिये नहीं।
यह क्यों तेरी नज़र फिरी यह क्यों बदल गई हवा ?

ख़बर न जिन की तूने ली वह लोग अब फ़साना[2] हैं।
पता न जिस का था तुझे वह ग़म दिलों को खा गया ॥

"फ़िराक़" और भी तो अहले दर्द हैं जहान में।
यह बेक़रारियाँ[3] दुरुस्त, यह उदासियाँ बजा[4] ॥

१. दरबार, महफ़िल । २. कहानी । ३. विह्वलता । ४. उचित ।
*प्रेम की पहली मंज़िल में ही अनुभूति और जीवन दोनों ही समाप्त होगये इस के आगे चल कर क्या होगा इसका अनुभव करना सरल नहीं ।

ग़ज़ल

यह इज़तराब[१] क्या है, हाल क्या है, मुद्दआ[२] है क्या।
वह देखते तो जानता वह पूछते तो सोचता ॥

बस एक रहरवाने-राहे-इश्क़[३] का पयाम है।
न होश ही से मोड़ मुँह न ग़फ़लतों से बाज़ आ ॥

मुझे भी याद हैं वह शामे-हिज्र[४] की हिकायतें[५]।
वह दर्द सा रुका रुका वह अश्क सा थमा थमा ॥

*सदाये-बाज़गश्त[६] भी दयारे-इशक़[७] में नहीं।
जवाब का तो ख़ैर ज़िक्र क्या मगर पुकारे जा ॥

कहाँ निगाहे-नाज़[८] और कहाँ ये नक़्शे-आरज़ू[९]।
बढ़ा दिया, घटा दिया, बना दिया, मिटा दिया ॥

बस एक इश्क़ के ख़राब होने ही की देर थी।
शबाब था सँवर गया, ज़माना था गुज़र गया ॥

फ़िज़ाये-कायनात[१०] आँख खोलती चली "फ़िराक़"।
†यह नग़महाये-ज़िन्दगी[११] सुनाये जा सुनाये जा ॥

—:०:—

१. विह्वलता। २. इच्छा। ३. प्रेम पथ के पथिक। ४. विरह संध्या। ५. कहानियाँ। ६. प्रतिध्वनि। ७. प्रेम के कूचे। ८. प्रेम भरी दृष्टि। ९. इच्छाओं के अंकित चिन्ह। १०. सृष्टिका वातावरण। ११. जीवन संगीत।

*प्रेम में मनुष्य को अपने नाम पुकारने के उत्तर की भी आशा नहीं करनी चाहिये किन्तु नाम की रट भी नहीं छोड़ना चाहिये।

†प्रेम से ही जीवन प्रज्वलित हो उठता है, उस संगीत से घबराना नहीं चाहिये, सुनते ही रहना चाहिये।

ग़ज़ल

आज भी इश्क़ लुटाता दिलोजाँ है कि जो था।
आज भी हुस्न वही जिनसे-गिराँ[1] है कि जो था॥

*मंज़िलें[2] गर्द की मानिन्द[3] उड़ी जाती हैं।
वही अन्दाज़े-जहाने-गुज़राँ[4] है कि जो था॥

जो भी कर जौर-ओ-सितम जो भी कर एहसान-ओ-करम।
तुझ पे ऐ दोस्त वही वहम-ओ-गुमाँ है कि जो था॥

तीरा-बख़्ती[5] नहीं जाती दिले-सोज़ाँ[6] की "फ़िराक़"।
शमा के सर पे वही आज धुआँ है कि जो था॥

आज भी आग दबी है दिले इन्साँ में "फ़िराक़"।
आज भी सीनों से उठता वह धुआँ है कि जो था॥

१. क़ीमती चीज़। २. धूल। ३. तरह, समान। ४ विश्व पथ।
५. आस्था और श्रद्धा। ६. दुर्भाग्य।

*जीवन की समस्त आशायें संसार धूल में मिला देता है। संसार के इस कटु व्यवहार में कभी परिवर्तन आया ही नहीं।

*प्रेमिका से उपेक्षित होकर प्रेमी कहता है कि तेरा व्यवहार चाहे जैसा हो किन्तु मेरी आस्था और श्रद्धा में कण मात्र भी परिवर्तन नहीं आवेगा।

ग़ज़ल

यह कह के डाली बिनाये-दिल[1]
दस्ते-ग़ैब[2] ने गुलशने-जहाँ में ।
चमन के हर ख़ार-ओ-ख़स[3] के नीचे
दबा हुआ इक शरार[4] होगा* ॥
लगावटें भी लिये हुए है ।
तेरा यह बे-लाग मुस्कराना ॥
कभी यही इक शरारे-रक़्साँ[5]
रगों में चढ़ता बुख़ार होगा ॥
ख़याल को बे असर न समझो
अमल की चिंगारियाँ हैं इस में ।
कि आज ज़ुलमत सराये[6] दिल में
†जो नूर[7] है कल वह नार[8] होगा ॥

१. हृध्य की नीव । २. अदृश्य शक्ति ने, विधाता ने । ३. घास-फूस । ४. चिंगारी । ५. नृत्य करती हुई चिंगारी, अस्थिर प्रेमाग्नि । ६. अधँकार का केन्द्र । ७. ज्योति । ८. अग्नि ।

*सृष्टि के हर सृजन में संहरात्मक प्रवृत्तियाँ भी व्याप्त रहती है, कवि ने उसी का वर्णन करते हुए कहा है कि अदृश्य शक्ति हमेशा चमन के तिनकों में स्वयं अग्नि प्रज्वलित होने की सुविधायें भी रख छोड़ती है ।

†लोग भक्ति को ज्ञान से बड़ा मानते हैं—कवि कहता है कि ज्ञान को मामूली चीज़ समझना ग़लती है क्योंकि ज्योति ही फिर जलन बन कर ज्ञान से भक्ति में बदल सकती है ।

ग़ज़ल

दौरे-फ़लक़ कुछ रुका-रुका सा ।
क़ाफ़िला कुछ ठहरा ठहरा सा ॥

एक दिल और उदास-उदास ।
एक चिराग़ और बुझा-बुझा सा ॥

इश्क़ हो अमृत या हो हलाहल ।
एक जहाँ है प्यासा-प्यासा ॥

दिल उमड़ा सा आँखें भरी सी ।
आज तो हुस्न भी है अपना सा ॥

बे लंगर है प्रेम की कशती ।
रूप भी है चढ़ता दरिया सा ॥

आज न जाने क्यों होता है ।
दिल में दर्द हलका-हलका सा ॥

ग़म में तेरे जीने वालों को ।
देती है ख़ुद मौत दिलासा ॥

आज यह कौन है मेरे आगे ।
कुछ देखा कुछ अन देखा सा ॥

दिल का नगर बहुत रोज़ों से ।
लुटा-लुटा सूना-सूना सा ॥

कोई उसको जान सका है ।
देखने में भोला भाला सा ॥

बू भी कुछ उड़ती-उड़ती सी ।
रंग भी कुछ निखरा निखरा सा ॥

आह वह आलमे-हुस्न, वह जब हो ।
नींद से कुछ जागा जागा सा ॥

सब कुछ जीत के सब कुछ हारे ।
प्रेम का ऐसा पलटा पाँसा ॥

देख "फ़िराक़" ख़ुशी फिर अपनी ।
इस में मिला ले ग़म थोड़ा सा ॥

ग़ज़ल

न पूछ तेरी मुहब्बत में हाथ क्या आया।
न चाहिये मुझे अब कुछ भी और भर पाया॥

थे तुझ से या थे ज़माने से बेख़बर ऐ दोस्त।
यह जान बूझ के धोका दिलों ने क्यों खाया॥

ख़याले-गेसुऐ-जानाँ[1] की वसअतें[2] मत पूछ।
कि जैसे फैलता जाता हो शाम का साया॥

*फ़रेबे-हिज्र[3] वही है वही फ़रेबे-विसाल[4]।
अभी कहाँ तुझे खोया अभी कहाँ पाया॥

†तेरी निगाह हुई जब तो ज़िन्दगी पाई।
कि आज तक तो मुझे मौत ने भी तरसाया॥

निगाहे शौक़ ने कुछ, अन्जुमन[5] ने कुछ समझा
कोई न देख सका इस तरह वह शरमाया॥

---

१. प्रेयसि के घने केश। २. विस्तार। ३. वियोग का आकर्षण ४. मिलन का आकर्षण। ५. मतलब समाज से है।

*आत्म विस्मृति की दशा में मनुष्य को खोने अथवा पाने का ज्ञान नहीं रह जाता। कवि ने उसी का वर्णन करते हुए कहा है—अभी मैं प्रेम की उस पराकाष्ठा पर नहीं पहुँचा हूँ जहाँ पाने और खोने का भी ज्ञान नहीं रहता।

†प्रेम के वियोग में जीवन भारी हो जाता है और ऐसा लगता है जैसे मौत तरसा रही हो।

मुनासिबत[1] भी है कुछ ग़म से मुझको और ऐ दोस्त ।
बहुत दिनों से तुझे मेह्रबाँ नहीं पाया ॥

यह जिन्दगी के कड़े कोस, याद आता है ।
तेरी निगाहे-करम का घना घना साया ॥

*"फ़िराक़" एक हुए जाते हैं ज़मान-ओ-मकाँ[2] ।
तलाशे दोस्त में मैं भी कहाँ निकल आया ॥

—: ० :—

१. सम्बन्ध । २. समय और अवकाश ।

*समय और स्थान का भी भाव हृदय में नहीं है । उसकी खोज में मनुष्य इतना अचेतन हो जाता है ।

ग़ज़ल

मुहब्बत तो करती है दुनिया ज़माना ।
मुहब्बत को तूने न जाना न जाना ॥

बदलता है जिस तरह पहलू ज़माना ।
योंही भूल जाना यों ही याद आना ॥

हर एक का सहारा हर एक का ठिकना ।
तेरा आस्ताना[1] तेरा आस्ताना ॥

कई बिजलियाँ बे गिरे गिर पड़ी हैं ।
उन आँखों को अब आ गया मुस्कराना ॥

जवानी की रातें मुहब्बत की बातें ।
कहानी कहानी फ़साना[2] फ़साना ॥

वही तुम, वही हम, वही दर्द लेकिन ।
मुहब्बत मुहब्बत ज़माना ज़माना ॥

तेरे गुम शुदों[3] को वह मंज़िल मिली है ।
न चलना, न फिरना न आना न जाना ॥

यह है मौत ऐ दोस्त या ज़िन्दगी है ।
तेरा याद आना तेरा याद आना ॥

जो तारे-नज़र[4] थर थराये थे तेरे ।
वही था वही तेरे ग़म का तराना ॥

बना जा रहा है हुआ जा रहा है ।
ख़ुशी का ज़माना भी ग़म का ज़माना ॥

१. तेरे मन्दिर की चौखट । २. कहानी । ३. तेरी खोज में भूले हुओं । ४. पलकें ।

हक़ीक़त भी तुझ पर कभी खुल रहेगी ।
तुझे ख़ैर आजाय धोका ही खाना ॥

*चले जा रहे हैं चले जाने वाले ।
न कोई सहारा न कोई ठिकाना ॥

ग़नीमत है ऐ अहले-दिल कोई दिन का ।
यह हंसना हंसाना यह रोना रुलाना ॥

†बदलने का तेरे पता दे रहा है ।
तुझे आज पाकर तेरी याद आना ॥

ग़मे-हिज्र [५] सहता हूँ और सोचता हूँ ।
मुहब्बत है शायद तुझे भूल जाना ॥

उसी दिल की क़िस्मत में तनहाइयाँ [६] थीं ।
कभी जिस ने अपना पराया न जाना ॥

"फ़िराक़" उन निगाहों को रुसवा [७] करेगा ।
यह अंगड़ाई पर आज अंगड़ाई आना ॥

—: ० :—

५. दुख भरी वियोग की कहानी । ६. अकेलापन ७. बदनाम ।

*जीवन यों ही संसार में बीता जा रहा है । बहुधा इस प्रश्न का उत्तर मिलना कठिन हो जाता है कि कोई किसके लिये और क्यों जी रहा है ।

†तुझे अपने समीप पा कर तेरा याद आना तेरे प्रेम के नये आवरण का द्योतक है

ग़ज़ल

राज़ को राज़ ही रक्खा होता।
क्या कहना गर ऐसा होता॥

कटते कटते कटतीं रातें।
होते होते सबेरा होता॥

रात की रात कभी मेरा घर।
तेरा रैन बसेरा होता॥

*इश्क़ ने मुझ से कमी की वरना।
मुझ पर तेरा धोका होता॥

दुनिया दुनिया आलम[1] आलम।
होता इश्क़ और तनहा[2] होता॥

दरिया दरिया, सहरा सहरा।
रोता ख़ाक उड़ाता होता॥

आज तो दर्दे-हिज्र भी कम है।
आज तो कोई आया होता॥

आज तो साज़े-ख़मोश[3] है आलम।
आज तो उसको पुकारा होता॥

यह निरजन बन यह सन्नाटा।
कोई पत्ता खड़का होता॥

---

*प्रेम की पराकाष्ठा प्रेमिका और प्रेमी का शारीरिक आत्मिक ऐक्य हो जाना है। कवि कहता है मेरे प्रेम में यही कमी रह गई है नहीं तो मुझे देख कर लोग तुम्हारा भ्रम कर बैठते।

१. संसार भर में। २. अकेला। ३. मौन साज़, वादन।

मैं हूँ दिल है, तनहाई है।
तुम भी जो होते अच्छा होता ॥

मेरी रगे-जाँ[४] दुख जाती जो!
बाल भी तेरा बीका[५] होता ॥

तू अगर अपने हाथ से देता।
पैमाना पैमाना होता ॥

हम जो तुझे कुछ भूल भी जाते।
दर्दे-मुहब्बत दूना होता ॥

कुछ तो मुहब्बत कर के दिखाती।
कुछ तो ज़माना बदला होता ॥

इस से तो ऐ जागने वालो।
सोया होता खोया होता ॥

कोई कभी कुछ दिल ही दिल में।
शरमाया पछताया होता ॥

मंज़िल मंज़िल दिल भटकेगा।
आज तुम्हीं ने रोका होता ॥

हम भी "फ़िराक़" इन्सान थे आख़िर।
तर्के-मुहब्बत[६] से क्या होता ॥

—: ० :—

---

४. मानव शरीर की वह मुख्य नस जिस का प्राण से गहरा सम्बन्ध होता है। ५. बाँका। ६. प्रेम को त्यागने से।

ग़ज़ल

कुछ अपना आशना[1] क्यों ए दिले-नादाँ[2] नहीं होता।
कि आये दिन यह रंगे गरदिशे-दौराँ[3] नहीं होता॥

*कभी पाबिन्दियों[4] से छुट के भी दम घुटने लगता है।
दर-ओ-दीवार हों जिस में वही ज़िन्दां नहीं होता॥

†उमड़ आये जो आँसू इन्क़लाब उसको नहीं कहते।
कि नादाँ हर तमव्वुज बह्र[5] का तूफ़ाँ नहीं होता॥

यक़ीं लायें तो क्या लायें जो शक लायें तो क्या लायें।
कि बातों में तेरी सच झूट का इमकाँ नहीं होता॥

हमारा तजरबा यह है कि ख़ुश होना मुहब्बत में।
कभी मुशकिल नहीं होता कभी आसाँ नहीं होता॥

‡बजा है ज़ब्त भी लेकिन मुहब्बत में कभी रोले।
दबाने के लिये हर दर्द ओ नादाँ नहीं होता॥

"फ़िराक़" इक-इक से बढ़कर चारा साज़े-दर्द[6] हैं लेकिन।
यह दुनिया है यहाँ हर दर्द का दरमाँ नहीं होता॥

—:०:—

१. परिचित। २. मूर्ख मन। ३. समय का फेर। ४. प्रतिबंधों। ५. सागर की लहर। ६. दवा करने वाले।

*जीवन का बन्धन केवल स्थूल ही नहीं होता कभी-कभी आत्मिक बन्धन उससे भी बढ़ कर हो जाता है।

†हृदय परिवर्तन केवल आँसू निकल आने से नहीं आँका जाता जैसे केवल एक लहर की विह्वलता तूफ़ान नहीं कहा जा सकता—

‡समस्त पीड़ाओं को दबा लेना अच्छा है परन्तु प्रत्येक वेदना को दबा कर रखना ठीक नहीं है इसलिये कभी रोकर मन की भड़ास निकाल लेना चाहिये।

ग़ज़ल

राज़े-मरगे-नागहानी[1] फिर सुना ।
वहपया में ज़िन्दगानी[2] फिर सुना ॥

फिर बहुत बे-कैफ़[3] हैं मौत-ओ-हयात[4] ।
हाँ उन आँखों की कहानी फिर सुना ॥

जो नहीं भूली न जिस की याद है ।
ज़िन्दगी की वह कहानी फिर सुना ॥

इन निगाहों से थी जिन की इबतदा ।
फिर सुना हाँ वह कहानी फिर सुना ॥

आप बीती थी कि जग बीती "फ़िराक़" ।
जिस को यों तेरी ज़बानी फिर सुना ॥

---

१. आकस्मिक मृत्यु का रहस्य । २. जीवन सन्देश । ३. नीरस ४. जीवन ।

ग़ज़ल

यह नकहतों[1] की नर्म रवी[2] यह हवा यह रात।
याद आ रहे हैं इश्क़ के टूटे तअल्लुक़ात[3] ॥

मायूसियों[4] की गोद में दम तोड़ता है इश्क़।
अब भी कोई बना ले तो बिगड़ी नहीं है बात ॥

कुछ और भी तो हो इन इशारात[5] के सिवा।
यह सब तो ऐ निगाहे-करम[6] बात बात बात ॥

इक उम्र कट गई है तेरे इन्तज़ार में।
ऐसे भी हैं कि कट न सकी जिन से एक रात ॥

हम अहले-इन्तज़ार के आहट पे कान थे।
ठन्डी हवा थी, ग़म था तेरा, ढल चली थी रात ॥

क्या नींद आये उसको जिसे जागना न आय।
जो दिन को दिन करे वह करे रात को भी रात।

हम अहले-ग़म ने रंगे ज़माना बदल दिया।
कोशिश तो की सभी ने मगर बन पड़े की बात ॥

मुझको तो ग़मने फ़ुरसते-ग़म भी न दी "फ़िराक़"।
दे फ़ुरसते-हयात न जैसे ग़मे-हयात ॥

---

१. सुगन्धों। २. मन्द गति। ३. सम्बन्ध। ४. निराशाओं ५. संकेत। ६. कृपा-दृष्टि।

ग़ज़ल

छिड़ गई उन आँखों की बात।
दुनिया में अब दिन है कि रात॥

तू और ठहरे रात की रात।
सच है बन आये की बात॥

बाज़िये-इश्क़[१] की पूछ न बात।
जीत की जीत है मात की मात॥

सुख ही सुख हो जहाँ दिन रात।
उस जन्नत से ढूँढ निजात॥

कटते कटते कटती है।
घटती बढ़ती वियोग की रात॥

प्रेम की दुनिया क्या दुनिया है।
इस नगरी में दिन है न रात॥

रख रखाव उस आँख का देख।
चुप की चुप और बात की बात॥

अपना देश भी अब है विदेश।
अपनी खबर भी दूर की बात॥

---

१. प्रेम का खेल।

खड़ी दोपहर गोरा रूप।
काले बाल भरी बरसात ॥

ऐ दिल दर्द से यों न तड़प।
कुछ तो सँभल ऐ मर्द की ज़ात ॥

कोमल रूप नूर[1] में डूबा।
जोबन पर है चान्दनी रात ॥

हिज्र में पहली निगाह का ज़िक्र।
कब याद आई कब कब की बात ॥

क़ातिल उसको कौन कहे।
हँसमुख आँखें कोमल गात ॥

पोंछ ये जलते जलते आँसू।
देख यह भीगी भीगी रात ॥

मान न मान तेरा मेहमान।
सुन ऐ इश्क़ हुस्न की बात ॥

दुनिया दुनिया इश्क़ की दुनिया।
क़ाफ़िला है या शिव की बरात ॥

उड़ी नींद से पूछ "फ़िराक़"।
आई होगी कितनी रात ॥

१. ज्योति, प्रकाश।

ग़ज़ल

यह नर्म नर्म हवा झिलमिला रहे हैं चिराग़।
तेरे ख़याल की ख़ुशबू से बस रहे हैं दिमाग़॥

दिलों को तेरे तबस्सुम की याद यूँ आई।
कि जगमगा उठें जिस तरह मन्दिरों में चिराग़॥

जो तोहमतें[1] न उठीं इक जहाँ से उनके समेत।
गुनाहगारे मोहब्बत निकल गये बे दाग़॥

[2]जो छिप के तारों की आँखों से पाँव धरता है।
उसी के नक़शे-कफ़े-पा[3] से जल उठे हैं चिराग़॥

ज़माना कूद पड़ा आग में यही कह के।
कि ख़ून चाट के हो जायगी यह आग भी बाग़॥

दिलों में दाग़े-मोहब्बत का अब यह आलम है।
कि जैसे नींद में डूबे हो पिछली रात चिराग़॥

"फ़िराक़" बज़्मे-चिराग़ाँ[4] है महिफ़िले-रिन्दाँ[5]।
सजे हैं पिघली हुई आग से छलकते अयाग़[6]॥

१. आरोप। २. प्रेम के अपराधी। ३. पद-चिन्ह। ४. प्रज्वलित। ५. पीने वालों की बैठक। ६. शराब के प्याले।

ग़ज़ल

छिछले आँसू छिछली लाग।
कच्चा पानी कच्ची आग॥

आग भभूका गोरा मुखड़ा।
ज़ुल्फ़ें काले काले नाग॥

हुस्न है दरिया इश्क़ है शोला[1]।
पानी मे लग जाय न आग॥

खोल ऐ दुनिया आँखें खोल।
जाग ओ नीन्द की माती जाग॥

रूप पे यों लहलोट है दुनिया।
जैसे गत पर नाचे नाग॥

जादू जादू रंगीं नाच।
शोला शोला मद भरे राग॥

दरिया दरिया इश्क़ का रोना।
सहरा[2] सहरा इश्क़ की आग॥

वह आकाश की देवी उतरी।
चन्द्र किरण पर गाती राग॥

तान तान पर पौ फटती है।
लौ देता है प्रेम का राग॥

सोने को तो उम्र पड़ी है।
इक दुनिया में आज है जाग॥

१. लपट। २. जङ्गल-जङ्गल।

अँगड़ाई ली नशे में उसने।
या छलक उट्ठी पिघली आग॥

आते ही जल उठे चिराग़।
रूप है तेरा दीपक राग॥

यों लहराती हैं वह ज़ुल्फ़ें।
गत चलता हो जैसे नाग॥

हुस्न शबनमी पैराहन[1] में।
जैसे दबी दबी सी आग॥

चंचल चंचल जोबन जैसे।
अध खिली कलियाँ अध सुने राग॥

डस न ले तुझे यह कहीं "फ़िराक़"।
भाग बलाये इश्क़ से भाग॥

—: ० :—

१. महीन वस्त्र में।

ग़ज़ल

दुनिया से रख सच्ची लाग।
झूटा त्याग और वैराग॥

रूखे सूखे हुस्न से भाग।
उन फूलों में रस न पराग॥

डस लेगा यह काला नाग।
"भाग बलाये इश्क़ से भाग"॥

लँगे क़दम सूरज और चाँद।
रूप ने साधा है बैराग॥

हुस्न ही हुस्न भरी दुनिया है।
इश्क़ भरी दुनिया का सुहाग॥

प्रेम और रूप की लीला है।
कैसा लगाव कहाँ की लाग॥

इश्क़ का सहल नहीं है मिटाना।
मौत के मुँह पर आ गया झाग॥

सोज़े-इश्क़[1] से बच नादान।
आग है, आग है, आग है, आग॥

करके दिखा कुछ, ले के न बैठ।
ख़ुशी और ग़म का खटराग॥

१. प्रेम की जलन

और ही धुन है इश्क़ को आज।
कैसा रंग कहाँ का राग॥

छलके इधर सभा में प्याले।
उड़ी उधर बोतल की काग॥

बोलता साज़[1] है रूप किसी का।
छिड़ा हुआ है प्रेम विहाग॥

दुनिया के आसेब[2] को आज।
साज़े जनूँ देता है राग॥

कोमल पाँव पड़ा है लेकिन।
जैसे धरती जाये जाग॥

अबलक़े[3] दह्न[4] के असवारों के।
हाथ से छूट गई है बाग॥

पड़ती है नज़्मे कुहन[5] में दराड़।
खुलते है दुनिया के भाग॥

फूलें फलें संसार में आशिक़।
बना रहे दुनिया का सुहाग॥

इश्क़ हसीनों में बैठा है।
जैसे कोई पुराना धाग॥

१. बाजा। २. भूत प्रेत—जिस पर प्रेतात्मा आई हो उसे राग दिया जाय तो वह नाचने लगता है। ३. घोड़ा। ४. समय, यहाँ कवि का मतलब समय पर राज करने वालों से है। ५. प्राचीन व्यवस्था।

हुस्न ने जब जब हंस कर छेड़ा।
लाया इश्क़ हज़ारों राग ॥

लहराये आकाश में तारे।
जैसे रात पड़ी हो जाग ॥

आँख के अंधे गाँठ के पूरे।
क्या कहना ऐसों के भाग ॥

प्रेम कामिनी रस की पुतली।
भीतर ठण्डक बाहर आग ॥

खुला निगाह से दिल का हाल।
ताँत बजाते बूझा राग ॥

दिल को देख ले, दिल में नहा ले।
प्रेम बाटिका, प्रेम तड़ाग ॥

कोमल मृदुल गात यों जैसे।
सहज स्वभाव प्रेम बे लाग ॥

झिलमिल झिलमिल तेरा रूप।
जगमग-जगमग तेरा सुहाग ॥

हुस्न की सेना इश्क़ अकेला।
फट न पड़े यह लशकर, भाग ॥

अग्नि कुण्ड है सीना "फ़िराक़"।
दहक - दहक जलती है आग ॥

ग़ज़ल

नर्म फ़िज़ा[1] की करवटें दिल को दुखा के रह गईं ।
ठन्डी हवायें भी तेरी याद दिला के रह गईं ॥

शाम भी थी धुआँ धुआँ, हुस्न भी था उदास उदास ।
दिल को कई कहानियाँ याद सी आके रह गईं ॥

मुझको खराब कर गईं नीम निगाहियाँ[2] तेरी ।
मुझ से हयात-ओ-मौत[3] भी आँखें चुरा के रह गईं ॥

तारों की आँख भर गई मेरी सदाये-दर्द[4] पर ।
उनकी निगाहें भी तेरा नाम बता के रह गईं ॥

याद कुछ आईं इस तरह भूली हुई कहानियाँ ।
खोये हुए दिलों में आज दर्द उठा के रह गईं ॥

तुम नहीं आये और रात रह गई राह देखती ।
तारों की महफ़िलें भी आज आँखें बिछा के रह गईं ॥

कौन सकूँ[5] न दे सकीं ग़म ज़दगाने[6] इश्क़ को ।
भीगती रातें भी "फ़िराक़" आग लगाके रह गईं ॥

—: ० :—

१. मधुर वायुमण्डल । २. अधखुले नयन । ३. जीवन
४. दर्द की पुकार । ५. शांति । ६. प्रेम के पीड़ितों ।

ग़ज़ल

*जिन्हें अज़ल[1] से न रास आये आस्मान-ओ-ज़मीं ।
बहुत है ऐसों को फ़िरदौसे-वादा[2] की तस्कीं[3] ॥
†हर इन्क़लाब के बाद आदमी समझता है ।
कि इस के बाद न फिर लेगी करवटें ये ज़मीं ॥
‡इन्हीं फ़िज़ाओं में तो इन्क़लाब पलता है ।
ज़मीं भी बिफरी हुई आस्माँ भी चीं बजवीं[4] ॥
नया ज़माना नई ज़िन्दगी नई दुनिया ।
नये सिरे से बने हुस्न-ओ-इश्क़ के आईं[5] ॥
अगर तलाश करें क्या नहीं है दुनिया में ।
जुज़[6] एक ज़िन्दगी की तरह ज़िन्दगी नहीं ॥
हुए वह जलवा नुमा[7] भी तो क्या से क्या होकर ।
पड़ी निगाहे परीशाँ भी तो कहीं की कहीं ॥
"फ़िराक़" इश्क़ ही ऐसे में आड़े आये तो आय ।
हयात[8] नेज़ा[9] संभाले हुए अजल[10] ब कमीं[11] ॥

---

*जीवन को यथार्थ मान कर उसे भोगना चाहिये । जो उसको मिथ्या मानते हैं उनके लिये स्वर्ग की कल्पना संतोष के लिये काफ़ी है ।

१. सृष्टि के प्रारंभ से । २. स्वर्ग का वादा, स्वर्ग मिलने का वचन । ३. संतोष । ४. माथे पर बल डाले । ५. विधान, आदर्श । ६. केवल ७. दृष्टि गोचर । ८. जीवन । ९. बरछा । १०. मौत । ११. रकाब में पैर डाले त्यार ।

†परिवर्तन चिरस्थायी रहने वाली चीज़ है लेकिन आदमी प्रत्येक क्रांति के बाद समझता है अब कोई परिवर्तन न आयेगा । वस्तुतः क्रांति ही जीवन है ।

‡क्रान्ति ऐसे ही वातावरण में पलती है, धरती भी क्रोध में बिफरी हुई है और आकाश के माथे पर भी बल है ।

अमल तो वह जो क़ज़ा[1] ओ क़दर[2] को बस में करे।
*दुआ तो वह कि मुक़द्दर[3] भी कह उठे "आमीं"[4] ॥

जो भूलती भी नहीं याद भी नहीं आतीं।
तेरी निगाह ने क्यों वह कहानियाँ न कहीं ॥

तू शाद[5] खोके उसे और उसको पाके ग़मी[6]।
"फ़िराक़" तेरी मोहब्बत का कोई ठीक नहीं ॥

जो कामयाब[7] हैं दुनिया में उन को क्या कहिये।
†है इस से बढ़ के भले आदमी की क्या तौहीं[8] ॥

हज़ार शुक्र कि मायूस[9] कर दिया तूने।
यह और बात कि तुझ से भी कुछ उमीदें थीं ॥

अलग नहीं मेरी दुनिया खबर है जो मुझ को।
ज़माना और भले आदमी का साथ नहीं‡ ॥

ख़ुदा के सामने मेरे कुसूरवार हैं जो।
उन्हीं से आँखे बराबर मेरी नहीं होतीं ॥

*मनुष्य कर्म-प्रधान व्यक्ति है और उसे अपने कर्मों में इतनी शक्ति का आभास मिलना चाहिये कि जिस से भाग्य भी उसके सामने सर झुका दे।

१. मौत। २. अस्तित्व। ३. भाग्य। ४. ऐसा ही हो। ५. ख़ुश, प्रसन्न। ६. शोकातुर, दुखी। ७. सफल। ८. अपमान। ९. निराश।

†बहुधा सांसारिक रूप से वही सफल होता है जो कुछ हद तक कमीना हो। धोखा-धड़ीकर सके। इसलिये भले आदमी के लिये सफल कहना उसका अपमान है।

‡जीवन में सदैव भले और सच्चे आदमी ही ठोकर खाते हैं, चोट खाते हैं, समय कभी भी उनका साथ नहीं देता।

मुझे यह फ़िक्र कि जो बात हो मुदल्लल[1] हो।
*वहाँ यह हाल कि बस हाँ तो हाँ, नहीं तो नहीं ॥

तुझे बताये अगर कोई आँख वाला हो।
कि यह ज़मीं भी चमकता सितारा है कि नहीं ॥

यों ही सा था कोई जिस ने मुझे मिटा डाला।
न कोई नूर का पुतला[2] न कोई ज़ुहरा जबीं[3] ॥

‡थी शहर शहर ज़माने में जिनकी रुसवाई[4]।
"फ़िराक़" थे वही नामूसे[5] ज़िन्दगी के अमीं[6] ॥

—: ० :—

अब कहाँ इश्क़ जा के जान बचाय।
मौत के मुँह में भी पनाह नहीं ॥

*लोग सदैव बाहर की चीज़ों पर अधिक ध्यान देते हैं, अपने को देखने का साहस कम करते हैं। कवि उसी को लक्ष्य कर के कहता है कि आस्मान के तारे देखने में बड़े अच्छे लगते हैं किन्तु हम यह भूल जाते हैं कि हमारी पृथ्वी भी एक तारा है।

१. तर्कपूर्ण। २. साकार ज्योति। ३. ऊंचे माथे वाली सुन्दरी। ४. बदनामी ५. इज़्ज़त, सम्मान ६. रखवाले।

‡संसार में जो उपेक्षित थे, बदनाम थे, वास्तव में जीवन के वास्तविक रूप को वही जानते भी हैं।

ग़ज़ल

जौलां गहे[1] हयात कहीं ख़त्म ही नहीं।
*मंज़िल न कर हदूद[2] से दुनिया बनी नहीं॥

माना कि तेरे लुत्फ़-ओ-करम[3] में कमी नहीं।
आसान इस क़दर तो तेरी दोस्ती नहीं॥

जिस पैकरे[4]-निशात की रग रग दुखी नहीं।
उसकी ख़ुशी को ग़ौर से देखो ख़ुशी नहीं॥

‡कुछ ठोकरें तो खा, चमक उट्ठेंगी मंज़िलें।
पाये-तलब[5] को फ़िक्रे[6]-सलामत-रवी नहीं॥

बेख़ुद[7] से थे तो वक़्त का यह भी फ़रेब था।
हम और तुझ को दिल से भुला दें कभी नहीं॥

ऐ दोस्त यों तो हम तेरी हसरत[8] को जो कहें।
लेकिन यह ज़िन्दगी तो कोई ज़िन्दगी नहीं॥

शामें किसी को मांगती हैं आज भी "फ़िराक़"।
गो ज़िन्दगी में यूँ मुझे कोई कमी नहीं॥

—:०:—

१. कर्म-भूमि। २. सीमा। ३. कृपा। ४. सुख की प्रतिमा। ५. याचना का पथिक। ६. सुरक्षित जीवन की चिन्ता। ७. बेहोश, आत्म-विस्मृत। ८. इच्छा।

*जीवन को सीमाबद्ध करना पाप है क्योंकि संसार का विस्तृत रूप असीम है—उसे कोई सीमाबद्ध नहीं कर सका है।

‡जीवन का सुधरना बिना ठोकर खाये असम्भव है। प्राप्ति के लिये विपदों का झेलना आवश्यक है।

ग़ज़ल

फ़िज़ाओं[1] की वह महवियत,[2] ज़माँ-मकाँ[3] की हैरतें[4] ।
मुझे भी याद हैं तेरी निगाह की हिकायतें[5] ॥

बयाने-शौक़[6] को सकूने-दिल[7] से हैं शिकायतें ।
*सुलझ सुलझ के और भी उलझ गईं इबारतें[8] ॥

कहाँ तक उसको देखिये कहाँ तक उसको चाहिये ।
कि मर चुकीं यह नीयतें[9] निकल चुकीं यह हसरतें[10] ॥

निगाहे-आशना[11] उठी करम[12] सितम[13] लिये हुए ।
बची बची लगावटें, मिली मिली सी वहशतें[14] ॥

अब इस क़दर ख़राब कर न ज़िन्दगीये-इश्क़[15] को ।
घटी हुई मुहब्बतें बढ़ी हुई मुरव्वतें[16] ॥

रहे तलब की उफ़ वह दिल फ़रेबियाँ वह सख़्तियाँ ।
बढ़े बढ़े से हौसिले, छुटी छुटी सी हिम्मतें ॥

१. वातावरण । २. संलग्नता, तल्लीनता । ३. समय, परिस्थिति, काल, । ४. विस्मय । ५. कहानियाँ । ६. कह डालने की इच्छा । ७. हृदय की गम्भीरता, सहनशीलता, हृदय को शांति । ८. मन्तव्य बातें । ९. भाग्य । १०. इच्छायें । ११. परिचित दृष्टि । १२. कृपा । १३. ज़ुल्म, अत्याचार । १४. पागलपन । १५. प्रेम का जीवन । १६. कृपा, सहानुभूति ।

*व्यक्त करने की तीव्र भावना को हृदय की गम्भीरता पर क्रोध आ जाता है । जीवन और संघर्षमय हो जाता है क्योंकि मनुष्य भूल जाता है कि क्या करे, क्या न करे ।

†करम सितम का ज़िक्र क्या कि इन्तहा[1] तो हो गई।
न ज़िन्दगी में यह तड़प न मौत में यह राहतें ॥

*उन्हीं से क़िस्मतें ज़मीं की जाग उठी हैं "फ़िराक़"।
वह पाय नाज़[2] जिनसे आँखें मलतीं हैं क़यामतें[3] ॥

—: ० :—

१. अंत। २. कोमल चरण। ३. प्रलय।

†प्रेम और वियोग में इतनी पीड़ा और व्यथा का अनुभव हो गया कि शायद न तो इतनी विह्वलता स्वयं जीवन में है और न इतनी शिथिलता मौत में।

*पृथ्वी के भाग्य उन्हीं लोगों से जाग उठे हैं जो अपने रूप में अज्ञात का सौन्दर्य लिये हैं। जिनके सामने प्रलय भी आँखें मिलाते डर जाता है।

ग़ज़ल

सितारों से उलझता जा रहा हूँ।
शबे-फ़ुरक़त[1] बहुत घबरा रहा हूँ॥

तेरे ग़म को भी कुछ बहला रहा हूँ।
जहाँ को भी समझता जा रहा हूँ॥

यक़ीं[2] यह है हक़ीक़त[3] खुल रही है।
गुमाँ[4] यह है कि धोके खा रहा हूँ॥

ख़बर है तुझको ऐ ज़ब्ते[5] मुहब्बत।
तेरे हाथों मैं लुटता जा रहा हूँ॥

जो उलझी थी कभी आदम के हाथों।
*वह गुत्थी आज तक सुलझा रहा हूँ॥

मुहब्बत अब मुहब्बत हो चली है।
तुझे कुछ भूलता सा जा रहा हूँ॥

यह सन्नाटा है मेरे पाँव की चाप[6]।
"फ़िराक़" अपनी कुछ आहट पा रहा हूँ॥

—: ० :—

१. वियोग की रात में। २. विश्वास। ३. सत्य, यथार्थ। ४. धोका, चिन्ता। ५. प्रेम को सहन शक्ति। ६. आवाज़।

*मनुष्य के जीवन का संघर्ष उसके बुद्धि और विश्वास (wisdom and faith) के बीच का है। आदम से लेकर आज तक के मानव जीवन के संघर्ष का इतिहास इतना ही है।

ग़ज़ल

जलवये[1] लैला हो ऐ दिल या जुनूने[2] क़ैस हो।
हुस्न[3] भी परछाइयाँ है इश्क[4] भी परछाइयाँ॥

सांस को ताज़ा[5] दिल-ओ-जाँ को मोअत्तर[6] कर गईं।
इस नज़र की ठन्डी और महकी हुई परछाइयाँ॥

चुपके चुपके उठ रहा है मद भरे सीनों में दर्द।
धीमे धीमे चल रही हैं इश्क़ की पुरवाइयाँ॥

—: ० :—

१. रूप-सौन्दर्य। २. पागलपन। ३. सौन्दर्य। ४. प्रेम। ५. सजीव।
६. सुगन्धित।

ग़ज़ल

वह तवानाइये[1] मिज़ाज नहीं।
छोड़ दे मुझको लेकिन आज नहीं॥

सरे "महमूद"[2] और पाए "अयाज़[3]"।
आशक़ी कुछ किसी का राज नहीं॥

*मौत का भी इलाज हो शायद।
ज़िन्दगी का कोई इलाज नहीं॥

‡तुझ से छुट कर बड़ी फ़रागत[4] है।
अब मुझे कोई काम काज नहीं॥

अब उन आँखों की और दुनिया है।
अब मुरौवत[5] का वाँ रिवाज[6] नहीं॥

इस तरह जिसमे नाज़नीं को न देख।
अपनी आँखों का तुझको लाज नहीं॥

कर न अर्ज़े[7] वफ़ा "फ़िराक़" कि अब।
उन निगाहों का वह मिज़ाज नहीं॥

१. शक्ति बल, ज़ोर। २. महमूद ग़ज़नवी अपने गुलाम अयाज़ पर आशिक़ था। ३. महमूद का सर और अयाज़ के चरण। ४. अवकाश—५. शील-संकोच। ६. रीति। ७. अपनी भक्ति भावना का प्रदर्शन।

*सिवा इसके कि जीवन को जीकर बिताया जाय और कोई दूसरा चारा नहीं है कवि ने इसी भाव को उतप्रेक्षा के रूप में स्पष्ट किया है।

‡प्रेयसि के वियोग में सिवा उनकी स्मृति में डूबे रहने के और किसी कार्य में जी ही नहीं लगता—इसी भाव को कवि ने प्रदर्शित किया है।

ग़ज़ल

जिनकी सदाये-दर्द[१] से नीन्दें हराम थीं।
नाले[२] अब उनके बन्द हैं तूने सुना नहीं॥

उस रह गुज़ार[३] पर है रवाँ कारवाने इश्क़।
कोसों जहाँ किसी को खुद अपना पता नहीं॥

मैं कामयाबे-दीद[४] भी नाकामे-दीद[५] भी।
होता है जब वह सामने कुछ सूझता नहीं॥

हर[६] जुम्बिशे-निगाह में दौरे हयात-नौ[७]।
दुनिया को जो बदल न दे वह मैकदा नहीं[८]॥

इक बात कहते कहते कभी रुक गया था हुस्न[९]।
वह माजरा[१०] "फ़िराक़" मुझे भूलता नहीं॥

यह हो न हो "फ़िराक़" की हैं कैफ़ बारयाँ[११]।
ऐसा ग़ज़ल सरा[१२] कोई अब दूसरा नहीं॥

—:o:—

१. दर्द भरी वाणी। २. आह-वेदना। ३. पथ, मार्ग। ४. दर्शन करने में सफल। ५. असफल। ६. संकेत। ७. नवजीवन का संचार। ८. मधुशाला। ९. सुन्दरता। १०. घटना। ११. मस्ती की वर्षा। १२. गजल कहने वाला।

ग़ज़ल

छलक के कम न हो ऐसी कोई शराब नहीं।
निगाहे-नरगिसे-राना[1] तेरा जवाब नहीं॥

ज़मीन जाग रही है कि इन्क़लाब है कल।
वह रात है कोई ज़र्रा भी महवे-ख़ाब[2] नहीं॥

हयात दर्द हुई जा रही है क्या होगा।
अब उस नज़र की दुआयें भी मुस्तजाब[3] नहीं॥

*रुका है क़ाफ़लये-ग़म[4] कब एक मंज़िल पर।
कब इन्क़लाब ज़माने का हम-रिकाब[5] नहीं॥

†अभी कुछ और हो इन्सान का लोहू पानी।
अभी हयात के चेहरे पर आब-ओ-ताब नहीं॥

*दिखा तो देती है बेहतर हयात के सपने।
ख़राब हो के भी यह ज़िन्दगी ख़राब नहीं॥

---

१. नरगिस के फूल की तरह आँख—नरगिस चम्पा को कहते हैं। २. स्वप्न में डूबा हुआ। ३. स्वीकृत होने वाली। ४. दुःख का क़ाफ़ला। ५. साथ देने वाला।

*पीड़ितों की टोली कभी भी समय से पीछे नहीं रुकी है—क्रांति और परिवर्तन ने सदैव समय का साथ दिया है।

†मनुष्य का रक्त अभी पूर्ण रूप से बलि भूमि पर नहीं चढ़ सका है। जीवन अभी उचित बलिदान अपने जीवित रहने के लिये नहीं दे पाया है।

*जीवन की निराश घड़ियाँ सार्थक हैं यदि वे एक भी स्वप्न की झलक जीवन में संचारित करने में सफल हुई हैं।

ग़ज़ल

शबनमी होठों पर कुहर[1] का समाँ[2] ।
दीदनी[3] है भीगी मसों का धुआँ ॥

उड़ गईं आज उससे भी चिंगारियाँ ।
मुद्दतों जिस दिल में घुटता था धुआँ ॥

*इसको भी इक दिल का भरम जानिये ।
हुस्न कहाँ इश्क़ कहाँ हम कहाँ ॥

कुछ नहीं कहतीं वह निगाहें मगर ।
बात पहुँचती है कहाँ से कहाँ ॥

अपनी जगह इश्क़ उजड़ता रहा ।
अपनी जगह बस्ती रहीं बस्तियाँ ॥

कह गईं क्या क्या दिले पुर शौक़[4] से ।
शर्म में डूबी हुई अँगड़ाइयाँ ॥

चल गई क्या जानिये कैसी हवा ।
आज बुझे दिल से भी उठा धुआँ ॥

आज कुछ आहट सी दिल को मिल गई ।
मुद्दतों वीरान थीं यह बस्तियाँ ॥

नर्म कसक मद भरे सीनों में है ।
चलने लगीं इश्क़ की पुरवाइयाँ ॥

१. मौत । २. समय, वातावरण । ३. देखने योग्य है । ४. शौक भरे, इच्छा पूर्ण ।

*जिस प्रेम को हृदय में सुलगाये हुए था आज सहसा उसमें प्रतिरोध की चिंगारियाँ उठ गईं ।

ग़ज़ल

कमी न की तेरे वहशी[1] ने खाक उड़ाने में।
जुनूँ[2] का नाम उछलता रहा ज़माने में॥

"फ़िराक़" दौड़ गई रूह[3] सी ज़माने में।
कहाँ का दर्द भरा था मेरे फ़साने में॥

जुनूँ से भूल हुई दिल पे चोट खाने में।
"फ़िराक़" देर अभी थी बाहर आने में॥

*वह आस्तीं है कोई जो लहू न दे निकले।
वह कोई हुस्न है झिझके जो रंग लाने में॥

किसी की हालते दिल सुनके उठ गईं आँखें।
कि जान पड़गई हसरत भरे फ़साने में॥

†हमीं हैं गुल हमीं बुलबुल हमीं हवाए-चमन।
"फ़िराक़" ख़ाब यह देखा है क़ैदख़ाने में॥

—:०:—

१. तेरे प्रेम के पागल ने। २. पागलपन ३. प्राण।

* जीवन का अभाव कभी-कभी प्रतिक्रिया रूप में जीवन के हर अंग में भाव के रूप में प्रदर्शित हो जाता है—कवि ने उसी का उल्लेख किया है।

ग़ज़ल

सर में सौदा[१] भी नहीं दिल में तमन्ना[२] भी नहीं
लेकिन इस तर्के-मुहब्बत[३] का भरोसा भी नहीं ॥

यह भी सच है कि मुहब्बत पे नहीं मैं मजबूर।
यह भी सच है कि तेरा हाल कुछ ऐसा भी नहीं ॥

बदगुमाँ[४] होके मिल ऐ दोस्त जो मिलना है तुझे।
बे झिझकते हुए मिलना कोई मिलना भी नहीं ॥

यों तो हंगामे[५] उठाते नहीं दीवानए-इश्क़[६]।
मगर ऐ दोस्त कुछ ऐसों का ठिकाना भी नहीं ॥

फ़ितरते[७] हुस्न तो मालूम है तुझको हर-दम।
चारा ही क्या है बजुज़[८] सब्र सो होता भी नहीं ॥

जाने दे हम भी कुछ इतने तो नहीं नावाकिफ़[९]।
जौर-ओ-जा नहीं सितम तेरे तो बेजा भी नहीं ॥

मेहरबानी को मुहब्बत नहीं कहते ऐ दोस्त।
आह अब मुझसे तेरी रंजिशे[१०] बेजा भी नहीं ॥

मुद्दतें गुज़रीं तेरी याद भी आई न हमें।
और हम भूल गए हों तुझे ऐसा भी नहीं ॥

मुँह से हम अपने बुरा तो नहीं कहते कि "फ़िराक़"
है तेरा दोस्त मगर आदमी अच्छा भी नहीं ॥

---

१. पागलपन। २. आकांक्षा। ३. प्रेम से उदासीन होने का भरोसा नहीं। ४. बिना किसी छलकपट के। ५. उथल-पुथल। ६. प्रेम का बावला। ७. सौन्दर्य की प्रकृति। ८. संतोष के अतिरिक्त। ९. अपरिचित। १०. अभाव।

ग़ज़ल

तुमने पूछा भी नहीं हमने बताया भी नहीं।
कौन सा राज़[1] वह ऐसा था कि जाना भी नहीं॥

भूल जाते हैं किसी को मगर ऐसा भी नहीं।
याद करते हैं किसी को मगर इतना भी नहीं॥

हाय वह राज़े-मुहब्बत जो छिपाए न बने।
हाय वह दाग़े मुहब्बत[2] जो उभरता भी नहीं॥

"अरे सैयाद हमीं गुल हैं हमीं बुलबुल हैं"।
तूने कुछ आह सुना भी नहीं देखा भी नहीं॥

—:०:—

१. रहस्य। २. प्रेम चिन्ह।

ग़ज़ल

थरथरी सी है आस्मानों में।
ज़ोर[१] कुछ तो है नातवानों[२] में॥

*इन्हीं तिनकों में देख ऐ बुलबुल।
बिजलियाँ भी हैं अशियानों[३] में॥

कितना खामोश है जहाँ[४] लेकिन।
इक सदा[५] आरही है कानों में॥

मंज़िलें दूर से चमकती थीं।
खो गईं आके कारवानों में॥

†एक चरका[६] सा वक़्त का खाकर।
बाँकपन आगया जवानों में॥

आगया इश्क़े-बदगुमाँ[७] आखिर।
हुस्न के बे किये बहानों में॥

१. शक्ति। २.दुर्बलों में। ३. नीड़। ४. संसार; सृष्टि। ५. शब्द आवाज़। ६. चक्कर, उलट फेर। ७. कुटिल।

*सृष्टि में सृजन और संहार दोनों का क्रम साथ-साथ चलता है। नीड़ के निर्माण के साथ-साथ बिजलियों का अपवाद शाशवत सत्य है।

†जीवन का आकार संघर्षों में निखरता है। समय का चक्कर नवजवानों को और अधिक गुणवान बना देता है।

* तन रही हैं भौएँ ज़माने की।
थर थरी सी है कुछ कमानों[1] में ॥

मौत के भी उड़े हैं अक्सर हाश।
ज़िन्दगी के शराब ख़ानों में ॥

लोग क्या-क्या न हार बैठे हैं।
† ज़िन्दगी के क़मार-ख़ानों[2] में ॥

कम नहीं बारे-ग़म से बारे-निशात[3]।
दर्द है हुस्न के भी शानों[4] में ॥

जिन की तामीर[5] इश्क़ करता है।
कौन रहता है उन मकानों में ॥

‡ काम ले ख़ूने-आरज़ू से "फ़िराक़"।
रंग भर ग़म की दास्तानों में ॥

—:०:—

---

* समय वर्तमान के अपवादो के विरुद्ध काफ़ी उत्तेजित हो चुका है। परिस्थितियाँ अब टूटने को ही व्याकुल हो रही हैं।

१. समय का धनुष। २. जुए के अड्डों। ३. सुख का भार। ४. कंधों में। ५. रचना।

† जीवन के खेल में मनुष्य सब कुछ हार जाता है।

‡ इच्छाओं के खून से दर्द भरी कहानी का रंग भरता है—निराशा की पराकाष्ठा का द्योतक है।

ग़ज़ल

कम अभी गर्चे रस्म-ओ-राह नहीं।
अब वह पहिली तेरी निगाह नहीं॥
तुझ पै इलज़ाम[1] कुछ नहीं लेकिन।
अब मेरा और तेरा निबाह नहीं॥
दिल कि इक क़तरा ख़ूँ नहीं है बेश[2]।
कोई डूबे अगर तो थाह नहीं॥
*रूहे[3]आदम गवाह है कि बशर[4]।
अभी शाइस्तए-गुनाह[5] नहीं॥
†मौत भी जिन्दगी में डूब गई।
यह वह दरिया है जिसकी थाह नहीं॥
तू न बदला न मैं मगर ए दोस्त।
आज वह दिल नहीं वह चाह नहीं॥
‡क्यों तेरा ग़म बदलता जाता है।
यह तो ग़म है तेरी निगाह नहीं॥

१. अभियोग। २. अधिक। ३. मानवता का प्राण। ४. मानव ५. गुनाह करने में अभ्यस्त नहीं हो सका है।

* हज़रते आदम पाप करने करने में असफल रहे और तब से लेकर आज तक मनुष्य को पाप करना नहीं आ सका।

† मौत जीवन में ही आकर मिल जाती है। मनुष्य मर कर भी जी जाता है। जीवन की परिभाषा इतनी विस्तृत है—जीवन एक अथाह नदी है, मौत इस में डूब सकती है, इसका सर्वनाश नहीं कर सकती।

‡ प्रेयसि की निगाह बदला करती है फिर ग़म का बदलना अस्वाभाविक समझ कर कवि आश्चर्य करता है।

ग़ज़ल

न पूछ है मेरी मजबूरियों में क्या कस बल।
मशीयतों[1] की कलाई मरोड़ सकता हूँ॥

उबल पड़ें अभी आबे- हयात[2] के चश्मे।
शरार-ओ-संग[3] को ऐसा निचोड़ सकता हूँ॥

बहार जल के खिज़ाँ हो[4] खिज़ाँ लहक के बहार।
चमन में ऐसे शिगूफ़े[5] भी छोड़ सकता हूँ॥

मेरे ही सीने में लहरा रही है बर्के-सहर[6]।
शबे सियाह की ज़ंजीर तोड़ सकता हूँ॥

"फ़िराक" देख बदलती है मंज़िले आफ़ाक[7]।
*कि मेह्र-ओ-माह[8] की मैं बाग[9] मोड़ सकता हूँ॥

—: o :—

जो तेरे गेसुये-पुरख़म[10] से खेल भी न सके।
उन उँगलियों से सितारों को छेड़ सकता हूँ॥

—: o :—

१. विधाता, प्रकृति। २. सुधा। ३. चिनगारी पत्थर। ४. पतझड़। ५. तरकीब कर सकता हूँ। ६. प्रातःकाल का धुंधला प्रकाश। ७. क्षितिज। ८. सूरज, चाँद। ९, लगाम। १०. घुँघराले केश।

*मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति से क्या नहीं कर सकता।

ग़ज़ल

देख तो इब्तदा[1] नहीं सोच तो इन्तिह[2] नहीं।
दर्दे हयात अल-अमाँ[3] उठ के जो उठ चुका नहीं॥

कर गई काम वह नज़र[4], गो उसे आज देख कर।
दर्द भी उठ सका नहीं रंग भी उड़ सका नहीं॥

*इससे तो कुफ्र[5] ही भला जो है इसी जहान का।
ऐसे ख़ुदा से क्या जिसे फ़ुरसते मासिवा[6] नहीं॥

†वह कोई वारदात[7] है जिसको कहें कि हो गई।
दर्द उसी का नाम है जो शबे-ग़म उठा नहीं॥

याद तो आए जा कि फिर होश उड़ाए जा कि फिर।
छाने की यह घटा नहीं चलने की यह हवा नहीं॥

साफ़ जबीने-नाज़[8] पर खुल गये राज़े-बन्दगी[9]।
यों तो तेरे भी सामने सर यह कभी झुका नहीं॥

—: ० :—

१. आदि। २. अंत। ३. त्राहि त्राहि। ४. दृश्य। ५. नास्तिकता। ६. अधिक अवकाश। ७. घटना। ८. कोमल भाल। ९. आस्था का रहस्य।

*इस संसार में नास्तिक होकर रहना अच्छा है न कि मनुष्य ऐसे ईश्वर की प्रार्थना करे जिसे अपने कामों से अवकाश ही नहीं मिलता।

†दर्द कोई घटना मात्र नहीं है वह तो हर वियोग की रात में पीडित करने वाली चीज़ है।

ग़ज़ल

माज़ी[1]-ओ-हाल[2] के रमूज़[3] तुझ पर अभी अयाँ[4] नहीं।
यह तेरी उम्रे रायगाँ[5] इतनी तो रायगाँ नहीं॥

आह वह मंजिले-मुराद[6] दूर भी है क़रीब भी।
देर हुई कि क़ाफ़ले उसकी तरफ़ रवाँ[7] नहीं॥

किसने सदाय-दर्द दी किसकी निगाह उठ गई।
अब वह अदम[8] अदम नहीं अब यह जहाँ, जहाँ नहीं॥

इश्क़ न मिट सका तो फिर किस लिये ख़ूने[9] आरज़ू।
अब कोई और दर्द दे यह कोई इम्तहाँ नहीं॥

वक़्ते[10] बयाने-ग़म-कुछ आज खो से गये हैं हम "फ़िराक़"।
कौन सुने कि ख़ुद हमीं मायले-दास्ताँ[11] नहीं॥

—: ० :—

तू जितनी देर ठहरता है मेरे पास ए दोस्त।
वह कम नहीं जो उचटता हुआ क़याम[12] न हो॥

—: ० :—

अजब क्या कुछ दिनों के बाद यह दुनिया भी दुनिया हो।
यह क्या कम है मुहब्बत को मुहब्बत कर दिया मैंने॥

—: ० :—

१. अतीत। २. वर्त्तमान। ३. रहस्य। ४. व्यक्त। ५. विफल जीवन। ६. मंज़िल जहाँ पहुँचने की आकांक्षा थी। ७. चलता जारहा; गतिशील। ८. परलोक। ९. आकांक्षाओं की हत्या। १०. कहते समय। ११. अपनी कहानी कहने के प्रति आकर्षित नहीं हुए। १२. ठहराव।

ग़ज़ल

हरी भरी भी हो सकी दिलों की सरज़मीं कहीं ।
पड़ी तेरी निगाह भी कभी-कभी कहीं-कहीं ॥

बस इब्तदा[1] ही इब्तदा है जिन्दगीये इश्क[2] में
कि भूल भी सकी तेरी निगाहे अव्वली[3] कहीं ॥

कहाँ यह दौरे-आसमाँ[4] कहाँ यह नामे-ज़िन्दगी।
हज़ारों ऐसी महफ़िलें वह आँखें ले उड़ीं कहीं ॥

उसे गुज़रते[5] देख कर झपक के आँख रह गई।
शरारे उड़ गये थे कुछ अभी-अभी यहीं कहीं ॥

"फ़िराक़" ज़ेरे आस्माँ[6] चमक भी है धुआँ भी है।
कि जैसे उठ रही हो वह निगाहे सुर्मगीं[7] कहीं ॥

—: ० :—

अभी बहुत ठोकरें हैं खाना अभी बहुत चाल चूकना है।
अभी बहुत गुल हैं खिलने वाले अभी बहुत ख़ून थूकना है ॥

—: ० :—

१. आदि । २. प्रेम के जीवन । ३. प्रथम अवलोकन । ४. आकाश की गति; समय का उलट फेर । ५. सामने से जाते । ६. आकाश के नीचे । ७. सुर्मा लगी आँखें—सुर्मा और धुआँ की समता विचारणीय है ।

ग़ज़ल

मौजे सबा[१] की पूछ न सफ़्फ़ाक दस्तियाँ[२] ।
डूबी हुई हैं खून में फूलों की बस्तियाँ ॥

ऐ दोस्त कुछ तो सोच कि दुनिया बदल गई ।
अब इस क़दर न होश न इस दरजा मस्तियाँ ॥

शायद मेरे सिवा कोई इसको समझ सके ।
किस तरह इक नज़र से बदलती हैं हस्तियाँ[३] ॥

खोई हुई सी इश्क़ की हस्ती क़बूल कर ।
पल्ले न होश है न गिरह में हैं मस्तियाँ ॥

अब यादे-रफ़्तगाँ[४] की भी हिम्मत नहीं रही ।
यारों ने कितनी दूर बसाई हैं बस्तियाँ ॥

उसकी निगाहे-नाज़ की क्या बात है "फ़िराक़" ।
दामन में होश है तो गरेबाँ[५] में मस्तियाँ ॥

—: ० :—

मैं पाके भी तुझे कुछ मुँतज़िर[६] सा हूँ तेरा
यह दिल का क़ौल[७] है तू आप अपनी आहट है

—: ० :—

१. प्रातः समीर का झोंका। २. क़त्ल करने वाले हाथ। ३. जीवन। ४. अतीत की स्मृतियाँ। ५. कुरते का गला, पागलपन या घबराहट में बहुधा लोग कुरते का गला फाड़ते हैं। ६. प्रतीक्षा में डूबा सा। ७. कथन।

ग़ज़ल

यह डर रहा हूँ कि ऐसे में वह न याद आ जायँ।
यह काली काली घटायें यह ऊदी ऊदी हवायँ॥

कहाँ तक आह तलाशे-अजल[1] में जान खपायँ।
"फ़िराक़" आओ इसी ज़िन्दगी को मौत बनायँ॥

अरे यह आँखों ही आँखों में जाने क्या कह जायँ।
निगाहे शौक़ है बेबाक[2] इसको मुँह न लगायँ॥

यह बोझ ले के अगर गिर पड़ें तो बेड़ा पार।
उठे न बारे मुहब्बत[3] तो खेप ही हो जायँ॥

ग़रज़ कि होश में आना पड़ा मुहब्बत को।
हमीं को देख लें दीवाने तेरे दूर न जायँ॥

मआमला तो सुलझता नज़र नहीं आता।
बनायें इश्क़ से बातें कि हुस्न को समझायँ॥

ज़माना बदला है एक आध करवटों से कहीं।
*अभी अनासिरे-आलम[4] कुछ और पलटे खायँ॥

न पूछ इश्क़ के दुख सुख को पी गये किस तरह।
कोई उतार ले उनको तो चीथड़े उड़ जायँ॥

---

१. मृत्यु की खोज में। २. प्रेम का भार। ३. निर्भीक। ४. पँचभूत।

*एक या दो हलचल से क्रांति नहीं हो सकती, उसके लिये संसार के समस्त तत्वों को आन्दोलित होना पड़ेगा।

समय का फेर कहें या समय की बलिहारी ।
निगाहें अपनी जगह हों और इस तरह फिर जायँ ॥

दिलों में ठान चुके हैं हम अहले-गम[1] क्या क्या ।
वह टोक दे तो ये मंसूबे सब धरे रह जायँ ॥

*कुछ आदमी को हैं मजबूरियाँ भी दुनिया में ।
अरे वह दर्द मुहब्बत सही तो क्या मर जायँ ?

"फ़िराक़" बाद को मुमकिन है यह भी हो न सके ।
अभी तो रो भी लें कुछ हँस भी ले वह आयँ न आयँ ॥

—:o:—

१. पीड़ित, दुखी ।

*वियोग की पीड़ा में मर जाना मनुष्य के वश के बाहर है ।

ग़ज़ल

झलाझल सिजल रूप का रसमसाना।
तहे-शबनमिस्ताँ[१] चिराग़ाँ[२] चिराग़ाँ॥

है सीना कि संगीत पिछले पहर का।
वह चेहरा कि ऊषा पशेमाँ[३] पशेमाँ॥

कहां उठ रही है कहां पड़ रही है।
निगाहे-मुहब्बत परीशाँ परीशाँ॥

—: ० :—

१. ओस कण से परिपूर्ण। २. प्रदीप्त। ३. लज्जित।

ग़ज़ल

कोई रगे दिले अफ़सुरदा[1] आज फिर उकसाओ।
फिर आज ग़म के शबिस्ताँ[2] में इक चिराग़ जलाओ ॥

अरे ख़ुद अपना फ़रेबे निगाह[3] क्या कम है।
यह क्या ज़रूर कि उसकी नज़र के धोके खाओ ॥

हयात[4]-ओ-मर्ग[5] का अब इमतियाज़[6] उठता है।
बला से कुछ हो मुहब्बत का नाम तो न धराओ ॥

फ़लक[7] पे गोश-बर-आवाज़[8] हैं सितारे भी।
है रात कितनी सुहानी कोई फ़साना सुनाओ ॥

मिलेगी जिन्से-गिराँ[9] हुस्न की न दौलत से।
जो मोल ले तो हो मालूम आटे दाल का भाव* ॥

जो देखना हो ख़रामे-सकूँ-नुमा[10] उसका।
तो देख ले मेरे लय की रवानी और ठहराव ॥

लहू की बूँद है दिल शाने मद्द-ओ-जज़्र[11] तो देख।
किसी नदी का हो जैसे उतार और चढ़ाव ॥

१. निर्जीव हृदय की नसों को। २. रात्रि में। ३. दृष्टि-भ्रम। ४. जीवन। ५. मृत्यु। ६. अंतर। ७. आकाश। ८. प्रस्फुटित। ९. महँगी वस्तु। १०. शांतिदायक पद-चाप। ११. ज्वार-भाटा।

*इस ग़ज़ल में कुछ पंक्तियों के अन्तिम शब्द आओ, जैसे हैं और कुछ के भाव, लगाव जैसे, पढ़ने में ओ, पर ज़ोर न देकर 'व' ही पढ़ना चाहिये। अर्थ का अनर्थ न समझा जाय इस कारण दो प्रकार से शब्द लिखे गये हैं। उच्चारण एक ही सा होगा, भाव, चढ़ाव की तरह।

निहाँ थी नज़्मे-जहाँ[1] में यह जंगे-आलमगीर[2] ।
किसे पड़ी है करे ऐसे में जो बीच बिचाव ॥

बजा[3] है ऐसी ही नाज़ुक घड़ी में उठना था ।
जो बेक़रार[4] हूँ इतना, संभल भी जाऊँगा, जाओ ॥

तड़प को हमने बनाया सकूने-बे-पायाँ[5] ।
हमारी दुख भरी लय में है किस क़दर ठहराव ॥

"फ़िराक" उसकी मुहब्बत से बाज़[6] क्यों आयें ।
अब उसमें एक जहाँ से बिगाड़ हो कि बनाव ॥

—: ० :—

१. विश्व-व्यवस्था । २. विश्व व्यापक युद्ध । ३. उचित । ४. व्याकुल । ५. असीम शांति । ६. छोड़ दें, त्याग दें ।

ग़ज़ल

रस्म[1]-ओ-राहे-दह्र[2] क्या जोशे मुहब्बत भी तो हो।
टूट जाती है हर इक ज़ंजीर वहशत[3] भी तो हो ॥

ज़िन्दगी क्या, मौत क्या, दो करवटें हैं इश्क़ की।
सोने वाले चौंक उट्ठेंगे क़ियामत[4] भी तो हो ॥

हर दिले-अफ़सुरदा[5] से चिंगारियाँ उड़ जायेंगी।
कुछ तेरी मासूम[6] आँखों में शरारत भी तो हो ॥

—: ० :—

१. प्रथा। २. संसार का। ३. पागलपन ४. प्रलय ५. उदास। ६. भोली।

ग़ज़ल

कब ऐसी वहशतें[१] थीं रहती दुनिया के मकीनों[२] को।
अरे क्या हो गया है आस्मानों को ज़मीनों को?

छलक जाती है पिघली आग अन्धेरी रात में साक़ी।
वह लौ देना भी आता है दिलों के आबगीनों[३] को॥

बज़ाहिर[४] जिन में अफ़सुरदा[५] चिराग़ों की उदासी है।
वह सोज़े[६] बे असर भी जगमगा देते हैं सीनों को॥

*पहुँचता है बुतों[७] का सिलसिला तो दूर तक वायज़[८]।
कहाँ तक झाड़ती जायगी दुनिया आस्तीनों[९] को॥

†कभी खुददारिये-इन्साँ[१०] वह दुनिया भी बना लेगी।
जहाँ सिजदों[११] से शरमिन्दा नहीं करते जबीनों[१२] को॥

१. बर्बरता। २. निवासियों। ३. छालों ४. स्पष्ट रूप से—देखने में। ५. बुझे हुए। ६. जलन, वेदना। ७. मूर्तियाँ। ८. उपदेशक। ९. आंचल १०. आत्माभिमान। ११. सर झुकाकर किसी की महानता स्वीकार करना। १२. माथा।

*मनुष्य की आत्म-चेतना ऐसा संसार बसा लेगी जिसमें कोई भी एक दूसरे का दास न हो।

†निराकार के उपासकों को चुनौती देकर साकार की महानता बताता हुआ कवि कहता है—साकारमय सृष्टि का अंत नहीं है। निराकार के पुजारी! साकार की पूजा को छोड़ कर कुछ भी और करने में तू असमर्थ है।

नई दुनिया में कुछ अहदे-कुहन[1] के भी निशाँ होंगे।
अजायब खानों[2] में रक्खेंगे ईमानों[3] को दीनों[4] को* ॥

बग़ल का बोझ हो कर रह गये हैं एक मुद्दत से।
जो चंचल हाथ रख देते थे मल दल कर हसीनों को ॥

"फ़िराक़े" ख़ुशनवा[5] ने आज इस धुन में ग़ज़ल छेड़ी।
कोई आवाज़ जैसे चीरती जाती हो सीनों को ॥

—: o :—

१. प्रचीन समय। २. अजायबघर। ३. धर्म। ४. सम्प्रदाय। ५. मधुर संगीतज्ञ।

*व्यंगात्मक ढंग से कवि कहता है—आने वाली दुनिया मानवता-प्रधान दुनिया होगी और आज का धर्म ईमान अजायबघर में रहेगा, हमारे जीवन में नहीं। सारांश यह कि नई दुनिया में धार्मिक रूढ़ियाँ और भेद नहीं रहेंगे।

ग़ज़ल

तक़दीर मंज़िलों की जगाते चले चलो।
ऐ रहरवाने-राहे-मुहब्बत बढ़े चलो॥

जाती है हो के ज़ेरे-फ़लक[१] राहे-इश्क़ भी।
जो बार[२] हो उठाओ, पड़े जो सहे चलो॥

जब चल पड़े "फ़िराक़" तो मंज़िल की फ़िक्र क्या।
जो कुछ दिखाये दौरे-फ़लक[३] देखते चलो॥

—: ० :—

फिर भी तो हुस्न-हुस्न है फिर भी तो इश्क़-इश्क़ है।
अपनी इनायतों[४] को सोच मेरी शिकायतें न देख॥

—: ० :—

१. आकाश के नीचे से। २. भार। ३. आकाश की क्रमिक गति ४. कृपा।

ग़ज़ल

यह मोड़ वह है कि परछाइयाँ भी देंगी न साथ।
मुसाफ़िरों से कहाँ उसकी रहगुज़र[1] आई॥

फ़िज़ा[2] को जैसे कोई राग चीरता जाये।
तेरी निगाह दिलों में यों ही उतर आई॥

*अजब नहीं कि चमन दर चमन बने हर फूल।
कली-कली की सबा[3] जाके गोद भर आई॥

—:०:—

१. गली, राह। २. वायुमंडल। ३. बसंत-ऋतु की वायु।

*असीम और अनन्त का अनुभव सीमाबद्ध मनुष्य ही करता है। केवल भावना की मात्रा और तीव्रता का अंतर रहता है। वैसे ही यह विस्मय की बात नहीं कि प्रत्येक फूल उपवन की छाया बन कर रहे यानी उपवन की विशालता अपने में निहित कर ले।

ग़ज़ल

फिर शोरे इन्क़लाब उठा चार[१] सिम्त से।
अच्छा, उसी निगाह का क़िस्सा है आज भी ?

*कहने का कुछ किसी से ज़माना नहीं मगर।
इक हर्फ़[२] सा ज़बान तक आता है आज भी॥

ऐ चारागर[३] समझ न सका मैं तेरा सवाल।
ज़ख्मे-कुहन[४] वही न, जो दुखता है आज भी ?

सच झूट की खबर तो किसे लेकिन ऐ "फ़िराक़"।
कोई बयाने-दर्द सुनाता है आज भी॥

—: ० :—

†संवारता हूँ इसे आंसुओं के मोती से।
इन्हीं से शाहिदे-हस्ती की माँग भरती है॥

—: ० :—

१. चारों ओर। २. (शब्द बनकर) अक्षर बनकर। ३. चिकित्सक। ४. पुराने ज़ख्म।

*यों तो समय इतना खराब आ गया है कि किसी से भी किसी चीज़ की याचना करना जान-बूझकर अपमान मोल लेना है किन्तु न जाने क्यों इच्छायें मचल कर ज़बान तक आ ही जाती हैं।

†प्रेयसि की स्मृति को आँसुओं के मोती से सजा रहा हूँ क्योंकि इन्हीं की कृपा से भावनाओं के तीव्रतम संसार का सुहाग जीवित है।

ग़ज़ल

तारे भी हैं बेदार[1] ज़मीं जाग रही है।
पिछले को भी वह आँख कहीं जाग रही है॥

*इक़रार की ठंडक में है इन्कार की गरमी।
साये में तेरी "हाँ" के "नहीं" जाग रही है॥

यह निखरी हुई रात "फ़िराक़" आँख तो खोलो।
सोता हुआ संसार ज़मीं जाग रही है॥

—: ० :—

१. जाग्रत।

*प्रेयसि के नहीं में ही हां का भाव प्रदर्शित होता है। कवि ने उसी का वर्णन किया है।

ग़ज़ल

चन्द्र किरन अलसाई हुई सी।
जैसे तुझे नींद आई हुई सी॥

उफ़ वह रसीली नज़र की लगावट।
जैसे कोई याद आई हुई सी॥

भारी भारी तारों की पलकें।
नींद तुझे भी आई हुई सी॥

तुझ से मिल के क्यों है दिल पर।
एक उदासी छाई हुई सी॥

दुनिया में आगे बढ़ने में।
जन्नत भी ठुकराई हुई सी॥

आह वह बातें आह वह सूरत।
भूली हुई याद आई हुई सी॥

*गुंबदे[१] मीना थर्राया सा।
और ज़मीं चकराई हुई सी॥

एक निगाह क़सम खाने को।
और वह भी घबराई हुई सी॥

दिल तो "फ़िराक़" सखी है तेरा।
आँख मगर ललचाई हुई सी॥

१. मधुकलश।

*परिवर्तन के समय सुख-दुख का ज्ञान नहीं रहता केवल परिस्थितियों से प्रभावित होकर मनुष्य आगे बढ़ता है। इसी भाव गुंबदे मीना और थर्राया हुआ आस्मान कहकर कवि ने व्यक्त किया है।

ग़ज़ल

*किसी का यों तो हुआ कौन उम्र भर फिर भी।
यह हुस्न-ओ-इश्क़ तो धोका है सब, मगर फिर भी॥

†हज़ार बार ज़माना इधर से गुज़रा है।
नई नई सी है कुछ तेरी रहगुज़र फिर भी॥

कहूँ यह कैसे इधर देख या न देख इधर।
कि दर्द दर्द है फिर भी नज़र नज़र फिर भी॥

‡लिपट गया तेरा दीवाना गरचे मंज़िल से।
उड़ी उड़ी सी है यह ख़ाके-रहगुज़र फिर भी॥

हो बेनियाज़े असर-भी कभी तेरी मिट्टी।
वह कीमिया ही सही, रह गई कसर फिर भी॥

—:०:—

*जानकर अनजान बनने की स्वाभाविक प्रवृत्ति। प्रेम में यह जानते हुए कि प्रेम का सारा वातावरण ढोंग है फिर भी मनुष्य उससे मुक्त नहीं है।

†इतनी पुरानी दुनिया होते हुए भी चिर नवीन ही सी बनी है।

‡प्रेम का पथ इतना कठिन और बीहड़ है कि मंज़िल से मिल जाने पर भी पथ की धूल अभी शान्त नहीं हो सकी है।

ग़ज़ल

जब से तुम परदेस सिधारे।
आँसू हैं आँखों के तारे॥

मौत, ज़िन्दगी दोनों धोके।
जी भी मर भी अपने सहारे॥

चीरते फाड़ते तूफ़ानों को।
आ ही लगे पैराक[1] किनारे॥

दुनिया में इस ढब से रहिये।
दुनिया के, दुनिया से न्यारे॥

प्रेम का पांसा ऐसा पलटा।
सब कुछ जीत के सब कुछ हारे॥

चौंक पड़े जो सन्नाटे में।
ऐसे दिल को कौन पुकारे॥

-:o:-

१. तैरने वाला

ग़ज़ल

*दुविधा पैदा करदे दिलों में ईमानों को दे टकराने।
बात वह कह ऐ इश्क़ कि सुनकर सब क़ायल हों कोई न माने॥

काँटा काँटे से निकलेगा ऐसे में फूल का काम नहीं।
चुभने वाली बात तो कहिये चाहे कोई बुरा ही माने॥

ऊपर से खुश होले नादाँ काम-ओ-दहन[1] की है खैर-इसी में।
प्रेम के सुख लोहे के चने हैं मौत हो गर पड़ जायँ चबाने॥

दुनिया से क्या पूछ रहा है सौ अनजान न एक सुजान।
दुनिया को पूछ उसकी नज़र से दुनिया को दुनिया क्या जाने॥

उसकी नज़र पर हैराँ[2] हैराँ मजबूरी भी आज़ादी भी।
वही कहे जो सब के दिल में सबकी सुने और अपनी माने॥

दुनिया अपने रंगमहल में ख्वाब खुशी के देख रही थी।
जिसमें खुशी ने आँखें खोलीं थे वह मुहब्बत के ग़मख़ाने[3]॥

*सामने की चीज़ें भी "फ़िराक़" इन्साँ को चौंका देती हैं।
बज़्म[4] में जगता ख्वाब यह देखा हमीं चिराग़ हमीं परवाने॥

*अपने प्रेम की उपासना-शक्ति में वह तीव्रता पैदा कर दे कि जिससे ईमान भी डाँवाडोल हो जाय—प्रेम के समर्थक तो सब हो जायँ किन्तु इतने स्तब्ध रहें कि विश्वास न पड़े।

१. तालू और मुँह। २. विस्मय। ३. दुख का घर। ४. महफ़िल।

ग़ज़ल

अम्नो अमाँ[1] की दुनिया में भी ऐसों को कब मिलते हैं ठिकाने ।
कई बार तो इश्क़ गया है मौत के मुँह में जान बचाने ॥

ज़र्रा ज़र्रा घुल जाएगा इस दुनिया का वक़्त की रव[2] में ।
तूने सुना है ? लोन की पुतली चली थी सिन्धु की थाह लगाने ॥

तर्के-मुहब्बत[3] भी करता जा दर्दे-मुहब्बत भी सहता जा ।
एक ही मत रखते हैं नादाँ दुनिया भर के चतुर सयाने ॥

याद किसी की करता भी जा दिल से किसी को भुलाता भी जा ।
पीता भी जा भरता भी जा होश और ग़फ़लत के पैमाने ॥

भूले भटकों में क्यों अक्सर मंज़िल से आती हैं सदायें ।
गड़ जाये पाताल में लेकिन गली गली की खाक न छाने ॥

सोती दुनिया जाग उठी है ज़र्रा ज़र्रा काँप उठा है ।
बैठे बिठाये क्या सूझी जो इश्क़ लगा है क़ियामत ढाने ॥

मजबूरी आज़ादी निकली रंज परस्ती शादी[4] निकली ।
दुनिया की तक़दीरें पलटीं, इश्क़ की मेहनत लगी ठिकाने ॥

पिये बग़ैर यह जोश है साक़ी पीने का कब होश है साक़ी ।
दौरे-शराब कहाँ कि अभी तो टूटते जाते हैं पैमाने ॥

१. शान्ति । २. समय की गति में । ३. प्रेम का त्याग ।
४. ख़ुशी; प्रसन्नता ।

*मिट मिट कर यह उभरना गोया तेरे बाँयें हाथ का खेल।
तेरी बड़ी बात ऐ दुनिया तेरी महिमा कौन बखाने॥

पर सिखवन के नर बहुतेरे लेकिन बात के आ जाने पर।
†ज़िद तो वही है जिसको ज़माना सौ समझाये एक न माने॥

हुस्न भी था अपनी परछाईं शामे-ग़रीबाँ देख "फ़िराक़"।
इश्क़ वही है अब भी लेकिन छूट गए अपने बेगाने॥

—:०:—

*संसार में मिट मिट के उभरने की क्षमता को लक्ष करके कवि ने संसार की शक्ति का वर्णन किया है।

†दूसरों को शिक्षा देने की प्रवृत्ति मनुष्य मात्र में रहती है परन्तु वास्तविक मनुष्य तो वही है जो समय से होड़ ले और अपनी टेक पर अड़ा रहे।

ग़ज़ल

यह सुहानी उदास तनहाई ।
लेती है पिछली रात अंगड़ाई ॥

खुद तेरा दर्द जैसे चौंक उठे ।
आज किस वक़्त तेरी याद आई ॥

अरे इससे तो मौत ही आजाय ।
ज़िन्दगी ज़िन्दगी से बाज़ आई ॥

*ली है जब जब ज़माने ने करवट ।
ज़िन्दगी ज़िन्दगी से घबराई ॥

हमने देखा है उनको, मौत ने भी ।
जिन निगाहों से ज़िन्दगी पाई ॥

थाह देती नहीं पताल को भी ।
इश्क़ की ज़िन्दगी की गहराई ॥

-:o:-

*जब जब समय में उथल-पुथल हुआ है और नया युग आया है प्राचीनता और नावीनता की संधि को देख कर जीवन ऊब सा गया है ।

ग़ज़ल

क्यों इन्तिहाये-होश[1] को कहते हैं बेख़ुदी।
ख़ुरशेद ही की आख़िरी मंज़िल तो रात है॥

हस्ती को जिसने ज़लज़ला-सामाँ[2] बना दिया।
*वह दिल क़रार पाये, मुक़द्दर की बात है॥

हस्ती[3] को तेरे दर्द ने कुछ और कर दिया।
यह फ़र्क़े-मर्ग[4]-ओ-ज़ीस्त[5] तो कहने की बात है॥

हस्ती बजुज़ फ़नाये-मुमलसल[6] के कुछ नहीं।
†फिर किस लिये यह फ़िक्रे-क़रारो[7]-सबात[8] है॥

यों तो हज़ार दर्द से रोते हैं बदनसीब।
तुम दिल दुखाओ वक़्ते मुसीबत तो बात है॥

—:०:—

कौन यह ले रहा है अंगड़ाई।
आसमानों को नींद आती है॥

—:०:—

१. ज्ञान की अन्तिम सीमा। २. भूकम्प। ३. जीवन। ४. मौत ५. ज़िन्दगी। ६. क्रमशः। ७. स्थायित्व। ८. स्थिरता।

*जिस हृदय की अनुभूनि की तीव्रता ने एक उथल पुथल मचा दिया उस हृदय को विराम और शान्ति मिलना असम्भव है।

†जीवन अनन्त क्षय के सिवा कुछ नहीं है। प्रत्येक क्षण यह नाश की ओर बढ़ रहा है फिर स्थिरता और स्थायत्वि की बात करना मूर्खता है।

ग़ज़ल

जहाँ भी जुस्तजुये-दोस्त[1] में ठहर जाते ।
यक़ीन जान कि मंज़िल क़रीब ही होती ॥

कुछ इन्तज़ार का उनवान[2] तो बदल जाता ।
जो ग़म की शाम हुई थी तो सुबह भी होती ॥

यह सोचता हुआ दुनिया से उठ गया कोई ।
तेरी निगाह भी होती तो क्या अभी होती ॥

हज़ार ग़म हों नहीं चाहता कोई दिल से ।
कि इसके बदले कोई और ज़िन्दगी होती ॥

*"फ़िराक़" ज़िन्दगिये-ग़म के राज़ क्या कहिये ।
अगर यह मौत न होती तो ज़िन्दगी होती ॥

—: o :—

"फ़िराक" तू ही मुसाफ़िर है तू ही मंज़िल है ।
किधर चला है मुहब्बत की चोट खाये हुए ॥

—: o :—

१ .मित्र की खोज । २. शीर्षक ।

*मृत्यु से ही जीवन का परिचय मिलता है बिना मृत्यु के जीवन नहीं के बराबर होता है ।

ग़ज़ल

मेरे इसरारे-मुहब्बत[१] को मगर[२] आँख नहीं।
तेरे इन्कार से पैदा तेरा इक़रार सही॥

इश्क़े-मजबूर अब इस दर्जा तो मजबूर नहीं।
कामरानी[३] भी तेरे इश्क़ में बेकार सही॥

रश्के-फ़िरदोस[४] बनालेगा जहन्नुम को भी इश्क़।
तेरे फ़िरदौस में हर काफ़िर-ओ-दीन्दार सही॥

बेख़बर इश्क़ में जीने के लिये जल्दी कर।
जान देने के लिये फ़ुरसते-बिसियार[५] सही॥

फिर भी है क़ाबिले ताज़ीर[६] कि मुजरिम है "फ़िराक़"।
हम ने माना कि मुहब्बत का गुनहगार सही॥

—: ० :—

*मज़हब की हकूमत थी, दौलत की हकूमत है।
अब देख हकूमत कब होती है मुहब्बत की॥

—: ० :—

१. प्रेम की धुन। २. शायद। ३. सफलता। ४. स्वर्ग को भी ललचाने वाला। ५. पर्याप्त अवकाश। ६. सज़ा के क़ाबिल।

* ऐतिहासिक विकास से पता चलता है कि धर्म राज्य और फिर सामन्त वादी राज्य यही दोनों अभी तक प्रधान रहे हैं— प्रेम का राज्य कब स्थापित हो सकेगा पता नहीं।

ग़ज़ल

मिट गये तेरे इन्तज़ार में हम।
ज़िन्दगी क्या हुई ख़ुदा जाने॥

*आज तो कुफ़्रे-इश्क़ चौंक उठा।
आज तो बोल उठे हैं बुतख़ाने॥

†तू ख़ुदा से न कर सका इन्कार।
तू भला दर्दे-इश्क़ क्या जाने॥

‡दिल से सीखा उभरने का अन्दाज़।
ख़ाके-सहरा[1] ने मौजे-दरिया[2] ने॥

हासिले-हुस्न-ओ-इश्क़ बस है यही।
आदमी आदमी को पहिचाने॥

बाद मुद्दत के तेरे हिज्र में फिर।
आज बैठा हूँ दिल को समझाने॥

—: ० :—

तुम को मैं जानता हूँ आह क्या हो उमीदे-ज़िन्दगी।
हो तुम्हीं ज़िन्दगी भी और तुम नहीं एतबार के॥

—: ० :—

---

१. जंगल की धूल। २. नदी की लहर।

* प्रेम में इतनी शक्ति है कि पाषाण भी प्राण प्रतिष्ठित हो जाते हैं "बोल उठे हैं बुत ख़ाने" से कवि का यही आशय है।

† प्रेम का समर्थक ईश्वर को नहीं मानता और जो ईश्वर को मानता है वह सच्चा प्रेमी नहीं हो सकता।

‡ प्रेम का रस यही है कि मनुष्य की महिमा जाने।

ग़ज़ल

पया पै[1] बिजलियाँ टूटीं दिले उश्शाक़[2] पर लेकिन।
हज़ारों में करोड़ों में निगाहें शर्मगीं निकलीं॥

बयाने काबा-ओ-जन्नत से वायज़ जी उचटता है।
जो दिल खींचे वह मुल्के इश्क़ ही की सरज़मीं[3] निकली॥

*अरे ओ जलने वाले, जलने वाले यों नहीं जलते।
अभी शोलों की रग-रग से कसक सी इक नहीं निकली॥

तुम अपने घर के थे तुम से कोई परदा न था लेकिन।
जो दिल की बात थी कमबख़्त वह मुँह से नहीं निकली॥

ज़रा मुश्किल से मिलती है निशानी ज़ख़्मे-पिनहाँ[4] की।
तुम्हीं कह दो जिगर में दिल में सीने में कहीं निकली॥

†वह हम थे जिसने बारे-इश्क़[5] उठाया वक़्त आने पर।
फ़रिश्ते तेरे निकले, आस्माँ निकला, ज़मीं निकली॥

---

१. लगातार। २. प्रेमियों। ३. पृथ्वी। ४. गुप्त। ५. प्रेम का भार।

*वियोग की अग्नि में वही जलता है जो स्वयं उफ़ न करे वरन् परिस्थितियाँ और वातावरण उसकी साधना को देख कर उफ़ कर दें, स्वयं विरहाग्नि उफ़ कह दे।

† कहते हैं प्रेम के भार को उठाना सरल नहीं है—देवता भी नहीं उठा सकते, यह मनुष्य ही है जो उठा सकता है।

ग़ज़ल

जो भूल कर भी इधर से कभी गुज़रता है।
मैं सोचता हूँ कि वह कल को आज करता है॥

उदास होती चली है फ़िज़ा ज़माने की।
कि ग़म से हुस्न भी अब इत्तफ़ाक़ करता है॥

*कहाँ से आ गई दुनिया कहाँ, मगर देखो।
कहाँ-कहाँ से अभी कारवाँ गुज़रता है॥

शराब की सी है हुशियार आँख में मस्ती।
जो नश्शा चढ़ न सका वह कहीं उतरता है॥

—:०:—

कोई जिये तो क्या जिये कोई मरे तो क्या मरे।
मर्ग-ओ-हयात दोनों ही जब न हों एतबार के॥

—:०:—

*चिर परिवर्तन की गोद में पलती-पलती दुनिया इस सीमा तक पहुँची है। अब आगे कहाँ जायगी यह भविष्य के गर्भ में है।

ग़ज़ल

कभी दीवाने रो भी पड़ते थे।
कभी तेरी भी याद आती थी॥

खोई-खोई सी रहती थी वह आँख।
दिल का हर भेद पा भी जाती थी॥

ज़िन्दगी को वफ़ा[1] की राहों में।
मौत खुद रोशनी दिखाती थी॥

ज़िन्दगी ज़िन्दगी को वक़्ते-सफ़र।
कारवाँ कारवाँ छिपाती थी॥

*ग़म की वह दास्ताने-नीम शबी[2]।
आसमानों को नींद आती थी।

—:०:—

†आए न नज़र लकीर ऐसी।
नेकी व बदी के दरमियाँ है॥

—:०:—

१. भक्ति। २. आधी रात की कहानी

*प्रकृति भी करुण कहानी सुनकर सहानुभूति प्रकट करने लगती हैं—इसी का वर्णन कवि ने किया है।

†अच्छे बुरे के बीच अंतर का ज्ञान बड़ा ही कठिन है, आज तक मनुष्य इसका माप नहीं बना सका है।

ग़ज़ल

देख नज़्मे-नौ[1] ने ली वह उफ़क़[2] पै अंगड़ाई।
यह ज़मीन भी जैसे करवटें बदलती है॥

शैख़-बरमो-रहमन में देख एक फूट की खातिर।
कब से चलती आई है कब तक और चलती है॥

इश्क़ को तो सुनते हैं होश आ चला शायद।
हुस्न की तबीअत अब देख कब संभलती है॥

एक बात थी तेरी जिसकी याद फ़ुरक़त में।
आते-आते आती है टलते-टलते टलती है॥

सागरे-फ़ना[3] पीकर जी उठी है यह दुनिया।
मौत के भी शीशों से ज़िन्दगी उबलती है॥

कोई रहती दुनिया को किस तरह कहे फ़ानी।
जिसके ज़र्रे-ज़र्रे में ज़िन्दगी मचलती है॥

आँख वह कि बे बदले सर बसर बदल जाये।
एक रह के यह दुनिया जिस तरह बदलती है॥

आँख खोलना तेरा वक़्त की है बेदारी[4]।
तू है जागने को या सुबह आँख मलती है॥

१. नव व्यवस्था। २. क्षितिज। ३. नश्वरता का प्याला। ४. जागरण।

खून से शहीदों के उठ रही है लौ दिन रात।
इस लहू की ठंडक से यह ज़मीन जलती है॥

मुद्दतें हुईं दिल पर वह निगाह उठी थी।
एक रंग से अब तक डूबती उछलती है॥

—:०:—

नींद आने लगी सितारों को।
छिड़ गये अहले ग़म के अफ़साने॥
तू कभी बिजलियों से खेला है।
तू किसी की निगाह क्या जाने॥

—:०:—

ग़ज़ल

जब लग गईं मेहनतें ठिकाने।
तक़दीर लगी है मुस्कराने ॥

कुछ भी न था इश्क़ की गिरह में।
और फिर भी लुटा दिये ख़ज़ाने ॥

गुलशन में धुआँ सा उठ रहा है।
बरसात के आ गये ज़माने ॥

याद आई तेरी तो ख़ामुशी भी।
इक धुन में लगी है गुनगुनाने ॥

यह दर्द भरी पुकार कैसी।
यह किसको लगा है दिल जगाने ॥

जैसे कोई आरहा हो इस सिम्त।
मुमकिन है वही हो, कौन जाने ॥

था ज़िक्रे-करम "फ़िराक़" उसका।
क्यों आँख लगी है डबडबाने ॥

—:०:—

ग़ज़ल

जिसे लोग कहते हैं तीरगी[1] विही शब हिजाबे सहर[2] भी है।
जिन्हें बेखुदीये-फ़ना[3] मिली उन्हें ज़िन्दगी की खबर भी है ॥

तेरे अह्ले-दीद[4] को देख के कभी खुल सका है यह राज़ भी।
उन्हें जिसने अहले-नज़र[5] किया वह तेरा ख़राबे नज़र भी है ॥

वह ग़मे-फ़िराक़ भी कट गया वह मलाले-इश्क़ भी मिट गया।
मगर आज भी तेरे हाथ में वही आस्तीं है कि तर भी है ॥

जो विसाल-ओ-हिज्र से दूर है जो करम सितम से है बेख़बर।
कुछ उठा हुआ है वह दर्द भी कुछ उठी हुई वह नज़र भी है ॥

जो गले तक आके अटक गया जिसे तल्ख़ काम[6] न पी सके।
वह लहू का घूँट उतर गया तो सुना है शीर-ओ-शकर भी है ॥

कोई अहले-दिल को कमी नहीं मगर अहले-दिल का यह क़ौल है।
अभी मौत भी नहीं मिल सकी अभी ज़िन्दगी में कसर भी है ॥

१. अंधकार। २. प्रातः काल का पर्दा। ३. आत्म विस्मृति।
४. दर्शन के इच्छुक। ५. आँख वाला। ६. कड़ुवे स्वाद के अभ्यस्त।

*बड़ी चीज़ दौलत-ओ-वजाह[1] है बड़ी वसअतें[2] हैं नसीब उसे।
मगर अहले-दौलत-ओ-जाह में, कहीं आदमी का गुज़र भी है॥

यह शबे[3] दराज़-भी कट गई वह सितारे डूबे वह पौ फटी।
सरे-राह गफ़लते-ख्वाब[4] से अब उठो कि वक़्ते सहर भी है॥

तेरे ग़म की उम्रे-दराज़[5] में कई इन्क़लाब हुए मगर।
वही तूले शामे "फ़िराक़" है वही इन्तज़ारे सहर भी है॥

—: ० :—

१. इज़्ज़त। २. विस्तार। ३. लम्बी काली रात। ४. स्वप्न में भूले हुए से। ५. लम्बी उम्र में।

ग़ज़ल

जब उन्हें पयामे-नमू[1] मिला तो गुलों का रंग उड़ा भी है ।
कि लहू चमन में उछालने को नसीम[2] भी है सबा[3] भी है ॥

न अज़ल[4] है कुछ न अबद[5] है कुछ यही मौत है यही ज़िन्दगी ।
जिसे वक्त कहते हैं अहले-दिल[6] वह फ़ना[7] भी है वह बक़ा[8] भी है ॥

तू निगाहे-यास[9] श्रो-लबे-सकूत[10] की जुम्बिशों[11] में उलझ गया ।
जिसे खामुशी भी न कह सकी वह फ़साना तूने सुना भी है ॥

यह गुदाज़-दिल[12] यह सरश्के-ग़म[13] कोई बात ऐसी नहीं मगर ।
तू खयाल कर तो बजा भी है तू निगाह कर तो रवा[14] भी है ॥

तुझे हैरतें[15] हैं यह सोच कर कि तू इश्क़ को न समझ सका ।
जिन्हें ज़िन्दगी का मज़ाक़[16] है उन्हें रंज-ओ-ग़म का पता भी है ॥

रहे-बेखुदी[17] से गुज़र गये कई-कारवाने जनूँ मगर ।
वही जलवे लाला-ओ-गुल के हैं वहीं रंगे बादे-सबा भी है ॥

यह मेरे नसीब कि जोरे-हुस्न[18] के कुछ हिजाब[19] से उठ चले ।
यह तेरा करम कि मुझे मिटा के तू आज मुझ से खफ़ा भी है ॥

यह अजल भी क्या यह अदम भी क्या कभी आके देख 'फ़िराक़' को ।
इसी ज़िन्दगी की तुझे क़सम कि जो दर्द भी है दवा भी है ॥

१. जागृति की सूचना, चेतना । २. प्रातःसमीर । ३. पवन । ४. सृष्टि का प्रारंभ । ५. प्रलय, अंत । ६. प्रेम करने वाले । ७. नाश ८. निर्माण । ६. निराशा । १०. शाँत नीरवता के सिले अधर । ११ संकेत । १२. हृदय की उत्सुकता । १३. दुख से ओत-प्रोत जीवन । १४. शील-संकोच । १५. विस्मय । १६. जीवन से परिचित है । १७. आत्मविस्मृति । १८. सौन्दर्य का अत्याचार । १६. अंतर-रहस्य ।

ग़ज़ल

*न समझने की यह बातें हैं न समझाने की ।
ज़िन्दगी उचटी हुई नींद है दीवाने की ॥

निगहे-यास[1] किसी मस्त की क्यों आये न याद ।
साक़िया आह वही रूह[2] थी मैख़ाने की ॥

टपकी पड़ती है मये-नाब[3] रिसे* जाते हैं हाथ ।
ख़ैर साक़ी तेरे चटके हुए पैमाने[4] की ॥

खींच के रख दी तेरी लग़ज़िशे-मस्ताना[5] ने ।
एक तस्वीर छलकते हुए पैमाने की ॥

परदये-यास[6] में उम्मीद ने करवट बदली ।
शबे ग़म[7] तुझ में कमी थी इसी अफ़साने[8] की ॥

अब किसे नेसती[9] कहिये किसे हस्ती[10] क़हिये ।
ज़िन्दगी मुझको क़सम देती है मर जाने की ॥

उजले उजले से कफ़न में सहरे-हिज्र[11] "फ़िराक़" ।
एक तस्वीर हूँ मैं रात के कट जाने की ॥

—: ० :—

*जीवन का जागरण विक्षिप्त चेतनता का दूसरा नाम है । यह रहस्य न तो समझ में आता है और न समझाया जा सकता है ।

१. निराश दृष्टि । २. आत्मा । ३. अंगूर की शराब *रिसे जाना : एक एक बून्द टपकने को रिसना कहते हैं । ४. मधु पात्र । ५. मस्ती की दशा में भूल या भटक जाना, मस्त अल्हड़पन । ६. निराशा का रहस्य । ७. दुख की रात में । ८. कहानी । ९. अस्तित्व हीन । १०. जीवन, अस्तित्व । ११. वियोग की सुबह ।

ग़ज़ल

कोई पैग़ाम[1] किसी दिन लबे-एजाज़[2] तो दे ।
मौत की आँख भी खुल जायगी आवाज़ तो दे ॥

जो छिपाये न छिपे और बताये न बने ।
दिले आशिक़ को इन आँखों से कोई राज़[3] तो दे ॥

कान से हम तो "फ़िराक़" आँख का ले लेते हैं काम ।
आज छुप कर कोई आवाज़ पर आवाज़ तो दे ॥

—: ० :—

१. सन्देश । २. चमत्कारी स्वर । ३. भेद—पता ।

ग़ज़ल

न आना तेरा अब भी गर्चे[1] दिल तड़पा ही जाता है।
तेरे जाने पै भी लेकिन सकूँ[2] सा आही जाता है॥

न बुझने वाला शोला था न नख़्ले-इल्म[3] का फल था।
अभी तक दिल से इन्सां के धुआँ उठता ही जाता है॥

यह भोली भाली दुनिया भी सयानी है क़यामत की।
कोई करता है चालाकी तो धोका खाही जाता है॥

हज़ारों हैं जो ख़ुद को बेनियाज़े-ग़म[4] समझते हैं।
कभी कुछ अब्र सा लेकिन दिलों पर छा ही जाता है॥

न यों तस्वीरे-उजलत[5] बन के बैठो मेरे पहलू में।
मुझे महसूस होता है कोई उठता ही जाता है॥

मुहब्बत सीधी सादी चीज़ हो पर उसको क्या कीजे।
कि यह सुलझी हुई गुत्थी कोई उलझा ही जात है॥

अरे धोका तो वह है जो कोई चालाक खा जाये।
कभी दुनिया में इन्साँ यों तो धोका खा ही जाता है॥

निहायत[6] शौक़ से आये दिले ग़मगीं में वह लेकिन।
न अब जाते ही बनती है न अब ठहरा ही जाता है॥

१. यद्यपि। २. शांति। ३. विद्या का वृक्ष। ४. दुख से अनभिज्ञ। ५. जल्दी की तस्वीर। ६. अत्यन्त।

दिले-नादाँ[1] मुहब्बत में ख़ुशी का यह भरम क्या ख़ूब।
तेरी इस सादगी पर हुस्न को प्यार आ ही जाता है॥

उलट जाती हैं तदबीरें पलट जाती हैं तक़दीरें।
अगर ढूँडे नई दुनिया तो इन्साँ पा ही जाता है॥

—: ० :—

इक जाती हुई दुनिया इक आलमे[2] हैरत है।
इन दोनों का मिल जाना दुनियाए-मुहब्बत है॥

—: ० :—

यही कहती हुई साग़र[3] से उठी मौजे-शराब।
है तहे-जाम[4] भी इक चीज़ अगर होश रहे॥
आज वह तुझ से बहुत दूर हैं पाकर भी तुझे।
ग़मे-तन्हाई से जो लोग हम-आग़ोश[5] रहे॥

—: ० :—

१. नासमझ हृदय। २. विस्मय और आश्चर्य का संसार।
३. मधु पात्र। ४. प्याले की तह में। ५. क्रीड़ा में लिप्त।

ग़ज़ल

अबद[1] भी अपनी परछाईं अज़ल[2] भी रोशनी अपनी ।
मुहब्बत को कमी क्या मौत अपनी ज़िन्दगी अपनी ॥

करम[3] हो या सितम[4] कुछ हद भी रखती है यह ग़ैरीयत[5] ।
न तेरी दोस्ती अपनी न तेरी दुश्मनी अपनी ॥

कोई सुनता नहीं तो बेज़ुबानी[6] क्या ज़ुबाँ[7] बनती ।
सकूते[8] बेकसी ने आज खोई बात भी अपनी ॥

सरे-राहे-मुहब्बत[9] आदमी की साँस क्यों उखड़े ।
नफ़स[10] की मौज को देदे अदाये कमरवी[11] अपनी ॥

—: ० :—

निशाते-इश्क़[12] के खुलते ही भेद आँख भर आई ।
अभी तो हंसते थे यह हाल क्यों अचानक है ॥

हयात और यह बहसे-ग़म-ओ-निशात[13] कुछ और ।
किसी से कौन कहे मुफ़्त की यह झक झक है ॥

—: ० :—

१. आदि । २. अंत । ३. कृपा--सहानुभूति । ४. अन्याय । ५. परायापन । ६. न कहना । ७. वाणी । ८. हृदय के धैर्य ने । ९. प्रेम पथ पर । १० साँस की लहर । ११. धीमी चाल की अदा । १२. प्रेम का सुख । १३. दुख सुख का वाद विवाद ।

ग़ज़ल

तड़पना ताबके,[1] गो शामे-ग़म तड़पा ही जाती है।
कि इक दिन जागने वालों को भी नींद आ ही जाती है॥

बजा बेबाकियाँ पर हुस्न की फ़ितरत[2] को क्या कीजे।
कि पड़कर आँख में वह आँख कुछ शरमा ही जाती है॥

ख़ुशी से क्या ख़ुशी हो ग़म[3] से क्या ग़म हो ज़माने में।
कि आकर हाथ भी यह ज़िन्दगी तरसा ही जाती है॥

निशात[4]-ओ-ग़म कहाँ तक ज़िन्दगी का साथ दें हमदम।
जहाँ साया भी छुट जाये वह मंज़िल आ ही जाती है॥

जो कर बैठे हैं सब्र[5] उनके भी आँसू आ ही जाते हैं।
कलेजा दुख ही जाता है तेरी याद आ ही जाती है॥

—: o :—

१. कब तक। २. प्रकृति। ३. दुख। ४. सुख। ५. संतोष, धैर्य।

ग़ज़ल

हैं सब अच्छी सूरत वाले।
जाँचे परखे देखे भाले॥

रंग तेरा दुनिया से अनोखा।
ढंग तेरे दुनिया से निराले॥

किश्तिये-दिल के, किश्तिये-दिल से।
तोड़ दे लंगर हाथ उठा ले॥

गहरी नींद में जाग रहे हैं।
तेरी आँखों के मतवाले॥

रूप अनूप चाल मतवाली।
आँखों का जादू भी जगा ले॥

तेरे छूने से भी दुखे जो।
कौन इस दिल की फाँस निकाले॥

आज पिया परदेस से आये।
आँसू हँसते-हँसते बहाले॥

ज़िन्दाँ भी ज़िन्दाँ न रहेगा।
और अभी कुछ जी घबराले॥

आज तो जैसे वह भी यहीं है।
आज तो दिल का दर्द बढ़ाले॥

ग़ज़ल

आये हैं कुछ दुखते दिल वाले ।
है कोई जो दर्द बटा ले ॥

राह देखकर चलने वाले ।
कभी-कभी तो मुँह की खाले ॥

दिल की मद्धिम लौ उकसाले ।
नादाँ[1] मन की जोत जगाले ॥

ज़िन्दा-दिली[2] की तस्वीरें हैं ।
मौत के हाथों जीने वाले ॥

हुशियारी का कौन ठिकाना ।
ग़ाफ़िल कुछ तो धोके खाले ॥

हम भी होते हैं कुछ ग़ाफ़िल ।
ऐ दिल तू भी आँख लगाले ॥

रात अंधेरी राह कठिन है ।
दर्दे मुहब्बत को चमकाले ॥

तन्हाई भी करवट लेगी ।
जागे हुओं को नींद तो आले ॥

—: ० :—

१. मूर्ख । २. सजीवता ।

ग़ज़ल

यह शोला[१] मुहब्बत का यह आँच मुहब्बत की।
इन्सान की मिट्टी को अक्सीर[२] बनाये है॥

यह दर्दे-मुहब्बत[३] है आप अपनी दवा नादाँ।
रोना हो कि हँसना हो कुछ काम भी आये है॥

मासूम[४] मुहब्बत का क्या ज़िक्र करें उससे।
वह जुर्म-ओ-ख़ता को भी कब ध्यान में लाये है॥

तारों की पलक भारी है ग़म के फ़साने से।
हमको भी "फ़िराक़" अब तो कुछ नींद सी आये है॥

—: ० :—

पुराना धोके-बाज़ उसको समझ "कल" नाम है जिसका।
अज़ल[५] से उसके यह धोके कभी बासी नहीं होते॥

—: ० :—

१. लपट। २. राख, भस्म, संजीवनी। ३. प्रेम की पीड़ा।
४. अबोध, भोली। ५. सृष्टि के प्रारम्भ से।

ग़ज़ल

इन्साँ को मुहब्बत से वायज़[1] जो डराये है।
तू बात बिगाड़े है या बात बनाये है॥

वह आग मुहब्बत की लगते भी नहीं देखी।
रग-रग[2] में जो रह-रह कर शोले[3] से उठाये है॥

पहले से भी गहरा है रंग उसके तग़ाफ़ुल[4] का।
लेकिन दिले-दीवाना कब होश में आये है॥

जिस राह में ए वायज़ सूरज है इक-इक ज़र्रा[5]।
सुनते हैं वही रस्ता मैख़ाने को जाये है॥

इक ख़्वाबे-परेशाँ[6] है यह बज़्मे-जहाँ[7] लेकिन।
आये है न जाये है, खोये है न पाये है॥

ले कट ही गई आख़िर यह जिन्दगिये-फ़ानी[8]।
ए दोस्त ख़ुदा हाफ़िज़[9] कुछ नींद सी आये है॥

—:०:—

*पानी में उतरने वाले भी इस राज़ से वाक़िफ़ हो न सके
मिलती न थी जिनकी थाह वही चढ़ते दरिया पायाब[10] भी थे।

—:०:—

१. उपदेशक। २. नस नस में। ३. लपट। ४. उपेक्षा। ५. कण। ६. विह्वल स्वप्न। ७. संसार की सभा। ८. नशवर जीवन। ६. ईशवर रक्षा करें। १०. सूखी नदी, उथली।

ग़ज़ल

अक्स[1] पड़ा जब हुस्न का तेरे।
आबे-हयात[2] को आये पसीने॥

उमड़ा सागर उठती जवानी।
डगमग डगमग दिल के सफ़ीने[3]॥

राहे-मुहब्बत में पड़ते हैं।
लाखों मक्के लाखों मदीने॥

आबे हयात हज़म करने को।
कितने ज़हर पड़ेंगे पीने॥

जोबन में आँखों की झपक है।
आँखें जोबन के आईने[4]॥

रंग तेरा ऊषा का तबस्सुम[5]।
रूप वह, लौ जो सितारों से छीने॥

—: ० :—

१. छाया। २. सुधा। ३. नाव। ४. दर्पण। ५. मुस्कान।

ग़ज़ल

दिखाते हैं सितारे एक बेहतर[1] ज़िन्दगी के ख़्वाब[2] ।
न देख उनकी तरफ़ वह छीन लेंगे सब ख़ुशी तेरी ॥

दिले नाज़ुक में तेरे थरथराती शमश्र के मानिन्द[3] ।
ख़ुशी औ डर कि मुझसे बढ़ चली है दोस्ती तेरी ॥

शरीके-बज़्म[4] होकर यों उचट के बैठना तेरा ।
खटकती है तेरी मौजूदगी में भी कमी तेरी ॥

—: ० :—

नाज़ुक वक़्तों में काम आकर इश्क़ दग़ा दे जाता है ।
चढ़ती नद्दी पार उतारे उतरी नद्दी डुबोये भी ॥

—: ० :—

१. अच्छे । २. स्वप्न । ३. तरह । ४. साथ होके भी ।

ग़ज़ल

ग़मज़दों[1] का क्यों पता देने लगीं बातें तेरी।
दिन तेरे भरपूर रंगारंग हैं रातें तेरी॥

है उन्हीं में एक मर्गे-नागहाँ[2] का भी फ़रेब[3]।
हम को सब मालूम हैं ऐ ज़िन्दगी घातें तेरी॥

आँखें भर आयेंगी सीनों में उमड़ आयेंगे दिल।
जब, दयारे-यार[4], याद आयेंगी बरसातें तेरी॥

—:०:—

१. दुखियों २. अकाल मृत्यु। ३. आकर्षण। ४. यार के कूचे।

गज़ल

इसमें ठहराव या सकून[1] कहाँ।
ज़िन्दगी इन्क़लाबे-पैहम[2] है॥

यह भी नज़्मे-हयात[3] है कोई।
ज़िन्दगी ज़िन्दगी का मातम है॥

ऐ मुहब्बत तू इक अज़ाब[4] सही।
ज़िन्दगी बे तेरे जहन्नुम है॥

यों भी दिल में नहीं वह पहली उमंग।
और तेरी निगाह भी कम है॥

—: ० :—

१. धैर्य। २. अनन्त। ३. जीवन व्यवस्था। ४. अभिशाप।

ग़ज़ल

प्रेम तो दुनिया का राजा है।
किस कारन बैराग लिया है॥

ज़र्रा[1] - ज़र्रा कांप रहा है।
किस के दिल में दर्द उठा है॥

हुस्न को तूने क्या जाना है।
प्रेम को तूने क्या समझा है॥

दूर से शायद वह गुज़रा है।
जैसे कहीं सागर छलका है॥

धीमा धीमा दर्द उठा है।
ऊदी घटा है ठन्डी हवा है॥

रोकर प्रेम ख़मोश हुआ है।
वक़्त सुहाना अब आया है॥

काशी देखी काबा देखा।
नाम बड़ा दर्शन छोटा है॥

यों तो भरी दुनिया है लेकिन।
दुनिया में हर इक तनहा[2] है॥

दुनिया है कुछ खोई-खोई।
दिल भी कुछ सूना-सूना है॥

१. कण-कण। २. अकेला।

प्रेम अगर सपना है ऐ दिल !
हुस्न तो सपने का सपना है ॥

हम खुद क्या थे हम खुद क्या हैं ?
कौन ज़माने में किसका है ॥

नाकामों को राहत कैसी ।
दर्द जो पूछो दर्द भी क्या है ॥

कोई बसा है खानये-दिल[1] में ।
तू तो नहीं लेकिन तुझ सा है ॥

रमता जोगी बहता पानी ।
प्रेम भी मंज़िल छोड़ रहा है ॥

दबा - दबा - सा रुका - रुका-सा ।
दिल में शायद दर्द तेरा है ॥

बेताबी[2] पैमानये - राहत[3] ।
सब्र[4] नहीं आता अच्छा है ॥

क़तरा[5] क़तरा आँसू-आँसू ।
अंगारा है या दरिया है ॥

तू पहलू में दिल अफ़सुरदा[6] ।
आज चिराग़-इश्क़ बुझा है ॥

१. हृदय रूपी घर । २. बेचैनी । ३. आराम का प्याला ।
४. धैर्य । ५. बूँद । ६. निष्प्राण ।

परदेसी का रैन बसेरा।
क्या दुनिया है क्या उक़बा[1] है॥

यों तो ख़ुद हम भी नहीं अपने।
यों तो जो भी है अपना है॥

कैसा उक़बा कैसी जन्नत।
दुनिया को दुनिया करना है॥

यह भी सोचा रोने वाले।
किस मुश्किल से दर्द उठा है॥

एक वह मिलना एक यह मिलना।
क्या तू मुझको छोड़ रहा है॥

ग़म की टोह लगाने वालो।
भेद इन आँखों का पाया है॥

प्रेम के हाथों प्रेम के बल पर।
मौत ने भी जीना सीखा है॥

हाँ मैं वही हूँ, हाँ मैं वही हूँ।
तू कुछ मुझको भूल रहा है॥

अहले इश्क़ ने कौन बतावे।
क्या खोया है क्या पाया है॥

१. परलोक

दुनिया सपना उक़बा सपना।
जीना मरना अफ़साना है॥

उम्र मुहब्बत में यह बिता दे।
कब हँसना है कब रो है॥

कह ले 'फ़िराक़' ग़ज़ल सब लेकिन।
बात बनाना मुशकिल सा है॥

तू भी 'फ़िराक़' अब आँख लगा ले।
सुबह का तारा डूब चला है॥

—:०:—

ग़ज़ल

वुसअ़ते[1] बेकराँ[2] में खो जायें।
आसमानों के राज़ हो जायें॥

क्या अजब तेरे चन्द तर-दामन।
सब के दाग़े-गुनाह धो जायें॥

शाद[3] नाशाद[4] हर तरह के हैं लोग।
किस पै हँस जायँ किस पर रो जायें॥

अपने बाद आने वाली नसलों की।
राह में ख़ार तो न बो जायें॥

यों ही रुस्वाइयों[5] का नाम उछले।
इश्क़ में आबरू डुबो जायें॥

ज़िन्दगी क्या है आज इसे ऐ दोस्त।
सोच लें और उदास हो जायें॥

रात आई "फ़िराक़" दोस्त नहीं।
किस से कहिये कि आओ सो जायें॥

-: o :-

---

१. विस्तार। २. अनन्त। ३. प्रसन्न। ४. अप्रसन्न। ५. बदनामी।

ग़ज़ल

आ के जाय यह वह बहार नहीं।
इश्क़ के नशे में ख़ुमार[1] नहीं॥

मैं भी कोई अदा[2] हूँ क्या तेरी।
मुझको इक रंग पर क़रार[3] नहीं॥

खींच देता जुनूँ[4] की इक तस्वीर।
हाथ में दामने-बहार नहीं॥

गरचे[5] हैं जाने आशक़ी लेकिन।
उन निगाहों का एतबार[6] नहीं॥

बेख़ुदी[7] सी है बेख़ुदी शबे-हिज्र[8]।
मुझको अपना भी इन्तज़ार नहीं॥

एक भी तो नहीं है मस्त-ओ-ख़राब।
कोई दुनिया में होशियार नहीं॥

हुस्न को मैं ने कब दिया इलज़ाम[9]।
इशक़ भी तो क़सूरवार नहीं॥

हिज्र[10] और वस्ल[11] एक से है "फ़िराक़"।
आशक़ी का भी एतबार नहीं॥

---

१. नशे का उतार। २. प्रेम भरा संकेत। ३. स्थिरता। ४. पागलपन। ५. यद्यपि। ६. विश्वास। ७. आत्म विस्मृति ८. वियोग की रात। ६. दोष। १०. वियोग। ११. मिलन।

ग़ज़ल

कोई नई ज़मीन नया आस्माँ भी हो।
ऐ दिल अब उसके पास चलें वह जहाँ भी हो॥

मिट जायगी यह काविशे-हिज्र-ओ-विसाल[1] भी।
तेरा कहीं पता कहीं तेरा निशाँ भी हो॥

उसकी जफ़ा[2] पयामे-ग़मे-जावदाँ[3] नहीं।
ऐ इश्क़े-नाउमीद कभी शादमाँ[4] भी हो॥

हम अपने ग़मगुसारे-मुहब्बत[5] न हो सके।
तुम तो हमारे हाल पे कुछ मेहबाँ भी हो॥

दम क्या रुका कि गीर्दशे-अफ़लाक[6] रुक गई।
वह अश्क ही सही शबे-फ़ुरक़त रवाँ भी हो॥

हाँ ढूँढ ले "फ़िराक़" उन आँखों की ओट में।
वह ज़ीस्ते-बेक़रार[7] जो दारलअमाँ[8] भी हो॥

—:०:—

१. विरह और मिलन की उद्विग्नता। २. अत्याचार। ३. चिरस्थायी दुख का संदेश। ४. प्रसन्न। ५. प्रेम में सहानुभूति प्रकट करने वाले। ६. आकाश की गति। ७. बेचैन जीवन। ८. शरणस्थान।

ग़ज़ल

जो कुछ भी है दिल में सब कहें हम ।
वह कुछ न कहें तो क्या करें हम ॥

क्या ठीक ग़ुबारे नातवाँ[1] का ।
उठते ही कहीं न गिर पड़ें हम ॥

क्यों हम पे नहीं तेरी इनयात ।
यह पूछने वाले कौन हैं हम ॥

हस्ती[2] है नवाये-राज़[3] लेकिन ।
कुछ तेरे सुकूत[4] से सुनें हम ॥

करले ऐ यार पुरसिशे-हाल[5] ।
शायद तेरा नाम ले सकें हम ॥

ए भूल न सकने वाले, तुझको ।
भूले न रहें तो क्या करें हम ॥

ऐ हैरते-ज़िन्दगी[6] बता दे ।
कब से हैं, कहाँ हैं कौन हैं हम ॥

छुट कर तेरे आस्ताँ[7] से ऐ दोस्त ।
तू ही कह दे कहाँ रहें हम ॥

---

१. निर्बल धूल-जो बहुत क्षीण और जर्जरित रूप में ऊपर उठे ।
२. जीवन । ३. रहस्य मय संगीत । ४. महा शांति । ५. हाल पूछ ले ।
६. जीवन की उत्सुकता । ७. चौखट ।

कर बैठे तुझी से क़तअ उम्मीद[1]।
क्या काम किया है ख़ुश रहें हम ॥

कह दे सब अपना हाल ऐ दिल।
मुमकिन है कि याद रख सकें हम ॥

कुछ हम भी "फ़िराक़" से थे वाक़िफ़।
इस तेरी जफ़ा[2] को क्या कहें हम ॥

—:०:—

१. आशा को छोड़ बैठे। २. अत्याचार।

ग़ज़ल

न जाने अश्क से आँखों में क्यों हैं आये हुए।
गुज़र गया है ज़माना तुझे भुलाये हुए॥

जो मंज़िलें हैं तो बस रहवाने इश्क़[1] की हैं।
वह साँस उखड़ी हुई, पाँव डगमगाये हुए॥

वह नर्म-नर्म हवायें हैं किसके दामन की।
चिराग़-दैर-ओ-हरम[2] क्यों हैं झिलमिलाये हुए॥

न रहज़नों[3] से रुके रास्ते मुहब्बत के।
वह क़ाफ़िले नज़र आये लुटे लुटाये हुए॥

ख़राब और न कर अब ख़राब हालों को।
हमारी ख़ाक से दामन[4] ज़रा बचाये हुए॥

वह इक झलक सी तबस्सुम[5] की जब कोई गुज़ार।
नज़र बचाये हुए त्योरियाँ चढ़ाए हुए॥

ज़माना भूल गया बस वही नहीं भूले।
गुज़र गई जिन्हें इक उम्र याद आये हुए॥

निसार[6] करने को तुझ पे कहाँ से लायें ख़ुशी।
यही हैं इशक़ के कुछ ग़म बचे बचाये हुए॥

"फ़िराक़" तू ही मुसाफ़िर है तू ही मंज़िल है।
किधर चला है मुहब्बत की चोट खाये हुए॥

---

१. प्रेम पथ के पथिक। २. मन्दिर और मसजिद। ३. डाकुओं। ४. आंचल ५. मुस्कान। ६. न्योछावर।

ग़ज़ल

देखते देखते उतर भी गये ।
उनका तीर अपना काम कर भी गये ॥

इश्क़ की कुछ हवा लगी जब उन्हें ।
कुछ उड़ा रंग कुछ निखर भी गये ॥

हुस्न पर भी कुछ आगये इलज़ाम ।
गो बहुत अहले-दिल के सर भी गये ॥

इश्क़ कुछ यों भी नेक नाम न था ।
लोग बदनाम उसको कर भी गये ॥

आप के इन्तज़ार में जो थे ।
आते आते रहे वह मर भी गये ॥

आज हम उन को मेहरबाँ पा कर ।
ख़ुश हुए और जी में डर भी गये ॥

उन को ढूँडें कहाँ कि अपने साथ ।
ले के वह अपनी रहगुज़र[1] भी गये ॥

बात में और बात आई निकल ।
गर कभी उनकी बात पर भी गये ॥

हम थे कुछ बेक़रार[2] पहले से ।
और वह कुछ बेक़रार कर भी गये ॥

१. पथ । २. विह्वल ।

हूँ अभी गोश बर सदा और वह ।
ज़ेरे-लब[1] कहके कुछ मुकर[2] भी गये ॥

अब भी क्यों आँखें भीग जाती हैं ।
अब तो वह ध्यान से उतर भी गये ॥

दिन भी डूबा मेरी ग़ज़ल से "फ़िराक़" ।
गेसुये-शामे-ग़म सँवर भी गये ॥

—: ० :—

१. मुँह ही मुँह में । २. इनकार भी कर दिया ।

ग़ज़ल

मौत इक गीत रात गाती थी।
ज़िन्दगी झूम-झूम जाती थी॥

रोते जाते थे तेरे हिज्र-नसीब।
रात फ़ुरक़त[१] की ढलती जाती थी॥

तेरे उन आँसुओं की याद आई।
ज़िन्दगी जिन में मुस्कराती थी॥

ज़िक्र था रंग-ओ-बू[२] का और दिल में।
चाँदनी रात गुनगुनाती थी॥

सामने तेरे जैसे कोई बात।
याद आ-आ के भूल जाती थी॥

वह तेरा गम हो या ग़मे दुनिया।
शमा सी दिल में झिलमिलाती थी॥

मौत रह-रह के चौंक उठती थी।
ज़िन्दगी कोई गीत गाती थी॥

रात राह उसकी देखती थी "फ़िराक़"।
लौ चिराग़ों की झिलमिलाती थी॥

—:०:—

१. वियोग। २. रंग और गंध

रुबाइयाँ

(१)

दुनिया को किसी तरह से यह राज़ मिले।
दुनिया के किसी साज़[1] से यह साज़ मिले ॥
दुनिया को तो हम देते सकूने-जावेद[2]।
कुछ दिल के धड़कने का भी अन्दाज़ मिले ॥

(२)

घर छोड़े हुओं की कोई मंज़िल न सही।
होती नहीं सहल कोई मुशकिल न सही ॥
हस्ती[3] की रात काट देने के लिये।
वीरना सही किसी की महफ़िल न सही ॥

(३)

सोने वालों को क्या जगाती दुनिया।
थे कौन फ़साने जो सुनाती दुनिया ॥
दुनिया का भरम खुला न पूछो किस वक़्त।
जब आँख खुली तो देखी जाती दुनिया ॥

(४)

कुछ अहले-हवस[4] की भी तमन्ना देखी।
ललचाये दिलों की भरी दुनिया देखी ॥
देखी है जो ज़िन्दगी शहीदों की तेरे।
तुझ पर मरने चलो है देखा देखी ॥

---

१. संगीत। २. चिरस्थायी शान्ति। ३. जीवन। ४. इच्छाओं के वशीभूत।

(५)

करते नहीं कुछ तो काम करना क्या आये।
जीते जी जाँ से गुज़रना क्या आये॥
रो रो के मौत माँगने वालों को।
जीना नहीं आ सका तो मरना क्या आये॥

(६)

सौ रंगों से है स्वाँग रचाती दुनिया।
मुझको नहीं एक आँख भाती दुनिया॥
रहती दुनिया हो या हो जाती दुनिया।
दुनिया वालों के काम आती दुनिया॥

(७)

खोते हैं अगर जान तो खो लेने दे।
एसे में जो हो जाय वह हो लेने दे॥
तुझ से जो छुटे तो सब्र कर लेंगे कभी।
इस वक़्त तो जी खोल के रो लेने दे॥

(८)

कोई जो सँवर जाय सँवर जाने दे।
कोई जो निखर जाय निखर जाने दे॥
यह फ़ुर्सते-नज़ारा[1] ग़नीमत है "फ़िराक़"।
दिल पर जो गुज़र जाय गुज़र जाने दे॥

---

१. देखने भर का अवकाश।

(९)

पीना तो नहीं है ख़ैर पीने का है नाम।
तर कर ले होंट क्यों है रहता ना काम॥
पैमानये-दिल की तह में कुछ तो है तरी।
क़िस्मत में कहाँ "फ़िराक़" छलका हुआ जाम॥

(१०)

ख़िलक़त[१] को संवार दे इबादत क्या है।
दुनिया का शबाब क्या है जन्नत क्या है॥
हाँ, मैकदये - जहाँ[२] का ज़र्रा[३] ज़र्रा।
सरशारे[४]-मजाज़[५] हो हक़ीक़त[६] क्या है॥

(११)

हर जलवे से इक दर्से-नमू[७] लेता हूँ।
छलके हुये सद जाम-ओ-सबू[८] लेता हूँ॥
ए जाने-बहार तुझ पे पड़ती है जब आँख।
संगीत की सरहदों[९] को छू लेता हूँ॥

(१२)

बेहाल "फ़िराक़" इतना न हो दिल तो टटोल।
किस सोच में है सर तो उठा आँख तो खोल॥
यह सोज़े-हयात[१०] साज़े-ग़म[११] की यह लौ।
दहकी हुई आग है कि हीरा अनमोल॥

---

१. सृष्टि। २. संसार की मधुशाला। ३. कण। ४. मस्त। ५. सांसारिक। ६. सत्य। ७. नई अनुभूतियाँ, उत्पत्ति की शिक्षा। ८. प्याला और मधुपात्र। ९. सीमाओं। १०. जीवन की जलन। ११. दुख का संगीत।

(१३)

यह रूप, यह ढल्के-ढल्के आंचल का छोर।
चटकाती हुई नर्म उंगलियों की हर पोर॥
सीने से ले उड़ीं दिलों को कब की।
वह हिलती हुई लटें वह आँखें चित चोर॥

(१४)

आंचल के तले दमकते जोबन की यह लौ।
साड़ी के चुनाव में लचकते महे-नौ[१]॥
ठूड़ी पर जगमगाती किरनों की यह छूट।
महरम[२] के घाट[३] पर यह फटती हुई पौ॥

(१५)

संगीत की पंखड़ी को शबनम धो जाय।
जैसे शोलों की जगमगाहट खो जाय॥
पिछले को खुमारे-जिस्मे-रंगीं जैसे।
कलियों के लबों पे मुस्कराहट सो जाय॥

(१६)

जब तारों ने जगमगाते नेज़े तोले।
जब शबनम ने फ़लक[४] से मोती रोले॥
कुछ सोच के खलवत[५] में बसद नाज़[६] उसने।
नर्म उङ्गलियों से बन्द[७] क़बा[८] के खोले॥

---

१. नया चाँद। २. अंगिया; जिससे कोई पर्दा न हो। ३. गले को या सीने के ऊपर जहाँ अंगिया या कुर्ता कटा हुआ रहता है उसे दर्ज़ी घाट कहते हैं क्योंकि वह एक सीमा का द्योतक है। ४. आकाश। ५. एकान्त। ६. सैकड़ों नाज़ के साथ। ७. बंधन। ८. कुरते, अंगिया।

(१७)

आ जाता है हुस्न में सलोनापन और ।
चंचलपन, बालपन, अनीलापन और ॥
कटते ही सुहाग रात देखें जो उसे ।
बढ़ जाता है रूप का कुँआरापन और ॥

(१८)

रंगत है कि घुँघरुओं की मद्धिम झंकार ।
जोबन है कि पिछली रात बजता है सितार ॥
सरशार फ़िज़ाओं[१] की रगें टूटती हैं ।
चटकाता है उङ्गलियाँ जवानी का खुमार ॥

(१९)

जब ज़ुल्फ़े-शबे-तार[२] ज़रा लहराई ।
जब तारों ने पोर उङ्गलियों की चटकाई ॥
जब उभरी ज़रा चाँद की बल खाई जबीं[३] ।
ऐसे में तेरी नींद भरी अङ्गड़ाई ॥

(२०)

खिलती कली मुस्कराते होंठों की महक ।
मन्डलाती हुई घटायें ज़ुल्फ़ों की लटक ॥
जोबन का मद कलश भी छलका छलका ॥
माथे के चन्द्र-लोक की नर्म दमक ॥

१. मस्ती भरा वायुमंडल । २. अंधेरी रात । ३. माथा ।

(२१)

रग रग[1] में थर थराए रूहे-नग़मात[2] ।
हर तार में यों चलती हुई नब्ज़े-हयात[3] ॥
बेख़ुद[4] होती चली है नमनाक[5] फ़िज़ा ।
ज़ुल्फ़ों में ढल रही है मैख़ाने की रात ॥

(२२)

भूली हुई ज़िन्दगी की दुनिया है कि आँख ।
दोशीज़ा[6] बहार का फ़साना है कि आँख ॥
ठंडक, ख़ुशबू, चमक, लताफ़त,[7] नरमी ।
गुलज़ारे-अरम[8] का पहिला तड़का है कि आँख ॥

(२३)

चंचल आँखों में गुनगुनाती हुई शाम ।
गर्दिश[9] में नज़र की थरथराती हुई शाम ॥
वह फूटी झुटपुटे के तारे की किरन ।
पलकों की ओट कुनमुनाती हुई शाम ॥

---

१. नस नस में । २. गीत की आत्मा झंकृत हो उठी है । ३. आत्म विस्मृत । ४. जीवन की धड़कन । ५. भींगा वातावरण । ६. कुँआरी बहार । ७. सुकुमारता और सौन्दर्य । ८. शद्दाद नाम के एक बादशाह ने एक वाटिका बनवाई थी जो स्वर्ग का प्रतिरूप मानी जाती थी । ६. उलट फेर ।

(२४)

तारों भरी रात, बज़्मे-फ़ितरत[1] है सजी।
है शोख़[2] निगाह में भी ऐसी नरमी॥
यह चन्द्र किरन में सात रंगों की झलक।
गाती हुई अप्सरा गगन से उतरी॥

(२५)

जोबन-रस पुतलियों के अन्दर डोले।
इस निर्मल जल में रूप मरियम धोले॥
यह नर्म नज़र की सेज, पलकों की यह छाँव।
सोई है सुहाग रात गेसू खोले॥

(२६)

यह रंगे-निशात,[3] लहलहाता हुआ गात।
जागी जागी सी काली ज़ुल्फ़ों की यह रात॥
ए प्रेम की देवी यह बता दे मुझको।
यह रूप है या बोलती तस्वीरे-हयात[4]॥

(२७)

यह नाज़ुक जिस्म रंग-ओ-बू[5] से बोझल[6]।
यह रूप, यह रस की लहर, यह नयन कँवल[7]॥
काँधे से रिदाये-नूर[8] लटकी लटकी।
या सुबह की देवी है उठाये आँचल॥

---

१. प्रकृति। २. चचंल। ३. सुख का अनुभव। ४. जीवन। ५. सुरभि। ६. ओत प्रोत। ७. कमल। ८. ज्योति की चादर, मतलब किरण से है।

(२८)

रंगीन फ़िज़ा[1] सिंगार[2] दर्पन[3] की मिसाल।
बोल उठने को है सकूत[4] उछलता है गुलाल॥
यह शाम, यह बज़्मे[5] माह, यह अह्दे-वफ़ा[6]।
जयमाल पिन्हाते वक़्त सीता का जमाल॥

(२९)

गंगा में चूड़ियों के बजने का यह रंग।
यह राग, यह जल तरंग, यह रव,[7] यह उमंग॥
भीगी हुई साड़ियों से कौंदे लपके।
हर पैकरे-नाज़नीं[8] खनकती हुई चंग[9]॥

(३०)

मुखड़ा देखें तो माह-पारे[10] छुप जायँ।
खुरशीद की आँख के शरारे[11] छुप जायँ॥
रहजाना वह मुस्करा के तेरा कल रात।
जैसे कुछ झिलमिला के तारे छुप जायँ॥

१. वातावरण। २. शृंगार। ३. दर्पण। ४. मौन। ५. चाँद की सभा। ६. प्रेम निभाने का वचन। ७. लहर। ८. रूप और यौवन की प्रतिभा। ९. संगीत यंत्र, बाजा। १०. चाँद के टुकड़े। ११. चिंगारियाँ।

(३१)

कुछ हिज्र-ओ-विसाल[1] का मुअम्मा[2] न खुला।
जल में कब भीगते कंवल को देखा?
बीती होंगी सुहाग रातें कितनी।
लेकिन है आज तक कुँआरा नाता॥

(३२)

सोते जादू जगाने वाले दिन हैं।
उमरों की हदें मिलाने वाले दिन हैं॥
कन्या अब कामिनी है होने वाली।
आँखों को नयन बनाने वाले दिन हैं॥

(३३)

पुरवाई जिस घड़ी हो सनकी सनकी।
ज़ंजीरे-सहर[3] जब कि हों छनकी छनकी॥
ऐसे में आरती उतारे ऊषा।
रस में डूबे हुए कुँआरेपन की॥

(३४)

यह रात! फ़लक पे थर थराता सा ग़ुबार।
शीशे पर नर्म नर्म पड़ती है फुआर॥
या बैठ के माहे-नौ में देवी कोई।
छेड़े हुए रागिनी बजाती है सितार॥

---

१. वियोग और मिलन। २. भेद, रहस्य, पहेली। ३ प्रातः-शृंखला।

(३५)

जूड़े में सियाह रात कुंडली मारे।
माथे के अरक़[1] में झिलमिलाते तारे॥
आरिज़[2] में सहर के छलके छलके साग़र।
ठोड़ी में क़मर[3] के जगमगाते पारे[4]॥

(३६)

जोबन-रस पिघले चाँद सूरज छलकाय।
साँसों की शमीम[5] फ़स्ले-गुल[6] को लहकाय॥
वह ज़ुल्फ़ कि लय छेड़े हुए शाम बहार।
वह रंगे-बदन कि आँख दिलकी खुल जाय॥

(३७)

छल बल से भरी नारि दर्द की मारी।
रंगीन अदाओं की शिगूफ़ा कारी॥
छलका छलका शबाब बदमस्त-ओ-ख़राब।
मद पीके सियाह लम्बी पलकें भारी॥

(३८)

जब प्रेम की घाटियों में साग़र[7] उछले।
जब रात की वादियों[8] में तारे छिटके॥
नहलाती फ़िज़ा[9] को आई रस की पुतली।
जैसे शिव की जटा से गंगा उतरे॥

---

१. रस। २. गाल। ३. चाँद। ४. टुकड़े। ५. सुरभिमय पवन।
६. बसंत ऋतु। ७. प्याला। ८. घाटियों। ६. वातावरण।

(३६)

निखरा हुआ रंग, क्या सुहाना है समय।
लर्ज़ाँ[1] है बदन कि गुनगुनाती हुई नय[2]॥
हर अज़्व[3] की नर्म लब में मद्धिम झंकार।
पौ फटते ही भैरवीं की आने लगी लय॥

(४०)

ख़ामोश फ़िजा साफ़ चमक जाती है।
बिजली कोई लहरा के लपक जाती है॥
अमृत कि फुआर है कि नौरस आवाज़।
या पिघली हुई सुबह छलक जाती है॥

(४१)

आवाज़ पे संगीत का होता है भरम।
करवट लेती है नर्म लय में सरगम॥
यह बोल सुरीले थरथराती है फ़िज़ा[4]।
अन देखे साज़ का खनखना पैहम॥

(४२)

वह बादे सहर का रस में डूबा हुआ राग।
चुटकी में लिया कंवल ने दरिया का सुहाग॥
महके हुए गात से हैं लपटी ज़ुलफ़ें।
संदल के बन में जैसे माते हों नाग॥

१. कम्पित। २. बाँसुरी। ३. अंग। ४. वातावरण।

(४३)

चेहरा देखे तो रात ग़म की कट जाय।
सीना देखे तो उमड़ा सागर हट जाय॥
साँचे में ढला हुआ यह शाना यह बग़ल।
जैसे गुले-ताज़ा[1] खिलते-खिलते फट जाय॥

(४४)

नग़में[2] की अलाप है कि क़ामत[3] का तनाव।
कहता है हर अज़्व-पेंग शोलों[4] की चढ़ाव॥
आ आके रागिनी खड़ी होती है।
देखे कोई सिजिल[4] बदन का यह रचाव॥

(४५)

ठहरी-ठहरी नज़र में वहशत की किरन।
छलके-छलके कलस हैं मद के जोबन॥
माथे पर सुर्ख़ झिलमिलाता तारा।
काँधे पर गेसुओं का छाया हुआ घन॥

(४६)

होंटों में वह रस कि जिस पे भौंरा मंडलाय।
साँसों की वह सेज जिस पे ख़ुशबू सो जाय॥
चेहरे की दमक पे जैसे शबनम[5] की फुआर।
मद आँखों का कामदेव को भी जो छकाय॥

---

१. ताज़ा खिला फूल। २. संगीत। ३. डील डौल। ४. लपटों।
५. झगड़ा पैदा करने वाला।

(४७)

मोती की कान रस का सागर है बदन।
दर्पन आकाश का सरासर है बदन॥
अंगड़ाई में राजहंस तोले हुए पर।
या दूध भरा मानसरोवर है बदन॥

(४८)

रश्के-दिले-केकई का फ़ितना[1] है बदन।
सीता के विरह का कोई शोला[2] है बदन॥
राधा की निगाह का छालवा[3] है बदन।
या कृष्ण के बाँसुरी का लहरा है बदन॥

(४९)

तेरे क़दमों में चाँद सर के बल जाय।
मुखड़े पे पड़े नज़र तो सूरज ढल जाय॥
ऊषा की लालिमा हो पानी-पानी।
शरमाने की यह अदा कि बिजली गल जाय॥

(५०)

अलकों की लटक में साँप कुण्डली मारे।
पलकों में हों जैसे झिलमिलाते तारे॥
सुन्दर सुकुमार गात ऊषा की छटा।
जोबन के मधु-कलश पे सूरज वारे॥

---

१. झगड़ा खड़ा करने का कारण। २. लपट। ३. धोखा।

(५१)

नभ-मंडल गूँजता है तेरे जस से।
गुलशन[1] खिलते हैं ग़म के ख़ार-ओ-ख़स[2] से॥
संसार में ज़िन्दगी लुटाता हुआ रूप।
अमृत बरसा रहा है जोबन रस से॥

(५२)

गेसू बिखरे हुए घटाएँ बेख़ुद[3]।
आँचल लटका हुआ हवाएँ बेख़ुद॥
पुर कैफ़ शबाब[4] से अदाएँ[5] बेख़ुद।
गाती हुई साँस से फ़िज़ाएँ बेख़ुद॥

(५३)

वह रूप की मोहनी वह चेहरे का निखार।
वह कूले भरे-भरे वह सीने का उभार॥
वह चाल कि जैसे रक़्स[6] करती हो नसीम।
हर गाम[7] पे लोट-लोट जाती है बहार॥

(५४)

वह निखरे बदन का मुस्कराना है है।
रस के जोबन का गुनगुनाना है है॥
कानों की लवों का थरथराना कम-कम।
चेहरे के तिल का जगमगाना है है॥

१. उपवन। २. काँटा-तिनका। ३. आत्म विस्मृति। ४. मदभरा यौवन। ५. संकेत। ६. नृत्य। ७. पग।

(५५)

चढ़ती हुई नद्दी है कि लहराती है।
पिघली हुई बिजली है कि बल खाती है॥
पहलू[१] में लहक के भींच[२] लेती है वह जब।
क्या जाने कहाँ कहाँ वह ले जाती है॥

(५६)

रातें बरखा की थरथरराती हैं कि ज़ुल्फ़[३]।
तक़दीरें पेच-ताब खाती हैं कि ज़ुल्फ़॥
परछाइयाँ काँप काँप जायें जैसे।
मतवाली घटाएँ गुनगुनाती हैं कि ज़ुल्फ़॥

(५७)

गंगा अशनान का यह रेला है कि ज़ुल्फ़।
पिछले की सुहानी देव बेला है कि ज़ुल्फ़॥
कुहरे में धुआँ धुआँ सी उमड़ी हुई भीड़।
बढ़ता हुआ कोई माघ मेला है कि ज़ुफ़॥

(५८)

बादल कोई आहिस्ता गरजता है कि ज़ुल्फ़।
बरसात में क़स्रे-शाम[४] सजता है कि ज़ुल्फ़॥
मंडलाई घटा में जैसे हाथी झूमें।
कजली बन में सितार बजता है कि ज़ुल्फ़॥

---

१. बग़ल। २. खेंचना, लिपटा लेना। ३. केश। ४. संध्या-भवन।

(५९)

लहराई धुआँ-धार घटाएँ हैं कि ज़ुल्फ़।
बे लाग उतरी हुई बलाएँ हैं कि ज़ुल्फ़॥
फुपकारती बेपनाह[1] काली रातें।
उड़ते हुए होश की क़ज़ाएँ हैं कि ज़ुल्फ़॥

(६०)

काटे कटती नहीं ये ज़ुलमात[2] की रात।
एक जादुए-शब्र-ताब[3] है यह रात की रात॥
भीगी भीगी फ़िज़ाएँ ज़ुल्फ़ों की घटाएँ।
आईना-दर-आईना है बरसात की रात॥

(६१)

चढ़ती जमना का तेज़ रेला है कि ज़ुल्फ़।
बल खाता हुआ सियाह कौंदा है कि ज़ुल्फ़॥
गोकुल की अंधेरी रात[4] देती हुई लव।
घनश्याम की बाँसुरी का लहरा है[5] कि ज़ुल्फ़॥

---

१. जिससे शरण न मिले। २. अंधकार मय। ३. रात के समान।
४. गोकुल की अंधेरी रात-कृष्ण जन्म-दिन के कारण विख्यात है।
५. बाँसुरी के स्वर जैसे साकार हो उठे हों वैसे केश लगते हैं।

(६२)

मजनूँ की वहशतें[1] बढ़ाती हुई ज़ुल्फ़ ।
लैला को लोरियाँ सुनाती हुई ज़ुल्फ़ ॥
तारों का सोज़[2] आस्मानों का गुदाज़[3] ।
बेसुध रातों को ग़श में लाती हुई ज़ुल्फ़ ॥

(६३)

सरशार[4] फ़िज़ाओं में उदाहट[5] कम कम ।
नमनाक[6] हवा में सनसनाहट कम कम ॥
अंगड़ाइयाँ लेता है शबिस्ताने-ततार[7] ।
मुश्कीं गेसू[8] में थरथराहट कम कम ॥

(६४)

ज़ुल्फ़ें सारंगियों के बजते हुए तार ।
यह लहरें बे सदा के सावन की फुआर ॥
हिलती हैं लटें कि वज्द[9] करती हैं फ़िज़ाएँ ।
गोया लय छेड़ के सनकती है बयार ॥

---

१. पागलपन; मस्ती । २. व्यथा । ३. घुलावट । ४. मस्त । ५. नीलापन—ऊदा रंग नीले रंग को कहते है । ६. भीगी । ७. तातार की रात अपनी कालिमा के लिये प्रसिद्ध है । ८. कस्तूरी के समान सुगंधित । ९. ज्ञान भरी मस्ती ।

(६५)

उठने में हिमालय की घटाओं का उभार।
अन्दाज़े-नशिस्त[1] चढ़ती नद्दी का उतार॥
रफ़्तार[2] में मद भरी हवाओं की सनक।
गुफ़्तार[3] में शबनम की रसीली झंकार॥

(६६)

शबनम[4] से यह शोलों[5] की जबीं[6] ढलती है।
किरनों से यह कलियों की गिरह खुलती है॥
यह रंग, यह रस, यह मुस्कराहट, यह निखार।
या नूर[7] की मौजों में शफ़क़[8] घुलती है॥

(६७)

तारों की सुहानी छांव गङ्गा स्नान।
मौजों की जिलू[9] में रंग-ओ-बू का तूफ़ान॥
अंगड़ाइयाँ ले रही हो जैसे ऊषा।
यह शाने-जमाल,[10] यह जवानी का उठान॥

---

१. बैठने का तरीक़ा। २. चाल। ३. बात चीत, बोल चाल। ४. ओस। ५. लपट। ६. माथा। ७. प्रकाश। ८. ऊषा। ९. सामने। १०. सौन्दर्य की शान।

(६८)

यह शाने-तुलूए सुबह[1] यह हुस्ने-चमन ।
झिलमिल घूँघट में जैसे चौथी की दुल्हन ॥
हर शाख़ पे जगमगाती किरनों का तवाफ़[2] ।
तू जैसे कलाई में फिराये कंगन ॥

(६९)

कोमल-पद-गामिनी की आहट तो सुनो ।
गाते क़दमों की गुनगुनाहट तो सुनो ॥
सावन लहरा है मद में डूबा हुआ रूप ।
रस की बूँदों की झमझमाहट तो सुनो ॥

(७०)

तलुवे से भरी हुई गुलाबी छलकी ।
नक़्शे -कफ़े-पा से[3] लव सी लहरा के उठी ॥
हर नक़्शे-क़दम से खिलते जाते हैं कँवल ।
वह चाल में लोच जैसे मुड़ती हो नदी ॥

(७१)

गङ्गा वह रूप की कि सूरज भी नहाय ।
जमना बालों की तान बंसी की सुनाय ॥
संगम वह कमर का आँख ओझल लहराय ।
तहे-आब[4] सरस्वती की धारा बल खाय ॥

---

१. प्रातःकाल । २. मेला । ३. पद चिन्ह । ४. पानी के नीचे ।

(७२)

संयोग वियोग की कहानी न उठा ।
पानी में भीगते कमल को देखा ॥
बीती होंगी सुहाग रातें कितनी ।
लेकिन है आज तक कुँआरा नाता ॥

—: ० :—